चंदसखी की जीवनी और पदावली

खोजपूर्ण जीवन-वृत्तांत और प्रामाणिक पदों का संकलन.
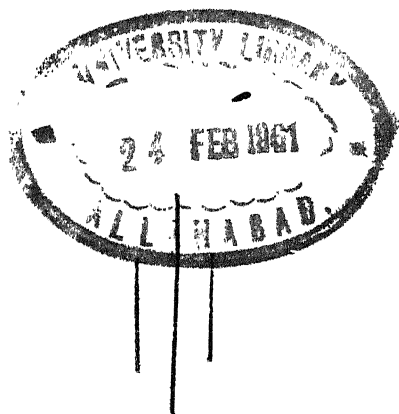
प्रभुदयाल मीतल

१००० प्रतियाँ
प्रथमावृत्ति
माघ पूर्णिमा, सं० २०१४ वि०
मूल्य १॥)

मुद्रकः—त्रिलोकीनाथ मीतल, भारत प्रिंटर्स, मथुरा।

प्राक्कथन

(१)

राजस्थान, बुंदेलखंड, मालवा आदि की भाँति ब्रज में भी चंदसखी के भजन और लोक-गीत प्रसिद्ध हैं ; किंतु उनको समुचित रूप से संकलित कर प्रकाशित करने की अभी तक कोई चेष्टा नहीं हुई। चंदसखी की रचनाओं के जो तीन छोटे-बड़े संकलन प्रकाशित हुए हैं, उनमें वे भजन और लोक-गीत हैं, जो अधिकतर राजस्थान में प्रचलित हैं। ब्रज क्षेत्र की रचनाएँ तो उनमें बहुत कम संख्या में सम्मिलित हो पाई हैं।

मेरी बहुत दिनों से इच्छा थी कि चंदसखी जैसे लोकप्रिय कवि की ब्रज में प्रचलित रचनाओं का एक सुसंपादित संकलन प्रकाशित हो। इसके लिए मैंने कुछ प्रयास किया और ब्रज क्षेत्र में प्रचलित चंदसखी के भजनों और लोक-गीतों का एक संकलन तैयार किया। इस संकलन की रचनाओं से राजस्थानी क्षेत्र की मुद्रित रचनाओं का मिलान करने पर मालूम हुआ कि उनमें भाषा संबंधी कुछ भिन्नता तो है, किंतु विषय और भाव विषयक बड़ी समानता है। उनमें सब से बड़ी समानता कवि के नाम-छाप की है, जो प्रत्येक भजन की अंतिम पंक्ति में 'चंदसखी भज बालकृष्ण छबि' के रूप में प्राप्त है। बहुत से भजन शब्दों के थोड़े परिवर्तन के साथ दोनों क्षेत्रों में समान रूप से प्रचलित हैं।

ब्रज के भक्त कवियों की रचनाओं का अनुसंधान और संकलन करते समय कीर्तन-संग्रह की हस्त लिखित प्रतियों में चंदसखी के भी कुछ पद प्राप्त हुए। वे रचना-शैली और भक्ति-भावना में ब्रज के अन्य भक्त कवियों के पदों से तो मिलते थे, किंतु स्वयं चंदसखी के नाम से

प्रचलित भजनों और लोक गीतों से भिन्न थे। ब्रज साहित्य मंडल ं
संग्रहालय में 'चंदसखी की बानी' नामक एक छोटी सी हस्त लिखि
पुस्तिका है। उसमें भी ऐसे ही पदों का संकलन है। कीर्तन की विभि
प्रतियों और इस पुस्तिका की सहायता से मैंने चंदसखी के पदों का भ
संग्रह किया। इस प्रकार ब्रज में प्रचलित भजनों, लोकगीतों और पदों
रूप में चदसखी की उपलब्ध रचनाओं का एक अच्छा संकलन तैय
हो गया।

ब्रज साहित्य मंडल के वार्षिकोत्सव पर साहित्य-परिषद व
सभापतित्व करने के लिए राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचंद ज
नाहटा मथुरा आये थे। वे भी उन दिनों चंदसखी की रचनाओं में रु
ले रहे थे। उन्होंने मेरे संकलन को देखकर कहा, "यह चंदसखी विषय
नवीन सामग्री है, इसे शीघ्र प्रकाशित कराना चाहिए"। उनका सुझा
था, राजस्थान, बुंदेलखंड, मालवा और निमाड़ में प्रचलित चंदसखी ं
भजनों को भी इस संकलन में सम्मिलित कर लेना चाहिए। इससे उन
समस्त रचनाओं का एक सर्वांग पूर्ण वृहत् संकलन पाठकों को उपलब
हो सकेगा। इसके लिए उन्होंने यथाशक्ति सहयोग देने का भी वचन दिया

श्री नाहटा जी ने बीकानेर पहुँच कर मुझे कई अन्य सुझाव दिये औ
श्री नरोत्तमदासजी स्वामी, श्रीचिंतामणिजी उपाध्याय तथा श्रीश्याम ज
परमार को मुझे सहयोग देने के लिए लिखा। श्री स्वामी जी ने राजस्थान
भजनों के संकलन की अपनी प्रति भेजी। उसमें प्रायः ४० नये भज
मिले। डा० चिंतामणि उपाध्याय और श्री श्याम जी परमार से क्रमश
२७ और २२ ऐसे भजन प्राप्त हुए, जो भदावर, मालवा और निमाड़ ं
संकलित किये गये थे। उसी समय संयोग से बुंदेलखंड में प्रचलित भजन
का भी एक छोटा संग्रह प्राप्त हुआ। इस समस्त नवीन सामग्री क
संपादन कर मैंने अपने संकलन में इसे यथा स्थान सम्मिलित कर लिया

इस प्रकार एक वृहत संकलन प्रस्तुत हो गया। इसमें ब्रज, बुंदेलखंड, राजस्थान, मालवा और निमाड़ में प्रचलित चंदसखी के भजनों और लोकगीतों के अतिरिक्त उनके वे पद भी थे, जो नवीन सामग्री के रूप में मुझे प्राप्त हुए थे।

इस वृहत् संकलन के साथ चंदसखी का जीवन-वृत्तांत देना आवश्यक था; किंतु इसके संबंध की प्रामाणिक सामग्री न तो पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में ही थी और न अन्यत्र ही उपलब्ध हो रही थी। 'राधाबल्लभ-भक्तमाल' नामक एक आधुनिक रचना में चंदसखी का कुछ परिचय दिया गया है। उसी के आधार पर श्री महावीरसिंह गहलोत ने अपनी पुस्तक में चंदसखी का परिचय लिखा है। इसे विश्वसनीय सामग्री से संपुष्ट किये बिना स्वीकार करना संभव नहीं था। अंतःसाक्ष्य के रूप में भी उनके भजनों और लोकगीतों में ऐसे सूत्र नहीं मिलते, जो उनके जीवन-वृतांत में सहायक हो सकें। ऐसी दशा में चंदसखी की प्रामाणिक जीवनी लिखने की समस्या प्रत्येक लेखक के लिए बड़ी कठिन रही है। चंदसखी जो द्वारा रचे हुए पदों की प्राप्ति से जहाँ उनकी प्रामाणिक रचना उपलब्ध हुई है, वहाँ उनके जीवन-वृत्तांत के कुछ सूत्र भी मिल गये हैं। इन पदों में प्राय: 'हित बालकृष्ण' की छाप मिलती है। कुछ पदों में 'हित हरिलाल' और 'हित उदयलाल' का भी नामोल्लेख हुआ है। इन नाम-छापों से जहाँ चंदसखी का राधावल्लभ संप्रदाय से संबंध ज्ञात होता है, वहाँ उनके रचना-काल का भी बोध होता है। राधावल्लभ संप्रदाय के साहित्य में चंदसखी के जीवन-वृत्तांत का अन्वेषण करने पर जो सामग्री प्राप्त हुई, उसमें चाचा हित वृंदाबनदास की रचनाएँ और 'ज्ञान चौगुणी' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके आधार पर चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की एक निश्चित रूप-रेखा बन गई है, जिसे मैंने चंदसखी की रचनाओं के प्रारंभ में दिया है।

२स प्रकार चंदसखी विषयक जो ग्रंथ तैयार हुआ, उसमें उनकी प्रामाणिक जीवनी के अतिरिक्त उनके पद, लोकगीत और भजनों का वृहत संकलन था। अब उसके प्रकाशन की व्यवस्था करनी थी। उत्तर प्रदेशीय शासन ने लोक-साहित्य के संकलन और प्रकाशन को प्रोत्साहन देने के लिये प० श्री नारायण जी चतुर्वेदी की अध्यक्षता में लोकवार्ता-विशेषज्ञों की एक समिति का संगठन किया है। उस समिति ने इस ग्रंथ को पसंद किया, किंतु अपने कार्यक्षेत्र की सीमा के कारण वह केवल लोक-रचना ही प्रकाशित कर सकती थी। इस ग्रंथ में दिया हुआ चंदसखी का खोज-पूर्ण जीवन-वृत्तांत और पद साहित्य-संकलन उसके प्रकाशन-क्षेत्र की सीमा से बाहर समझा गया। इसलिये समस्त सामग्री दो पुस्तकों में विभाजित कर दी गई। 'चंदसखी के भजन और लोकगीत' नामक प्रथमपुस्तक उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित हो रही है। 'चंदसखी की जीवनी और पदावली' नामक यह द्वितीय पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

चंदसखी के भजन और लोकगीत उत्तर भारत के विशाल भू-भाग के निवासियों में बहुत अधिक संख्या में प्रचलित हैं। इनमें कितने प्रामाणिक हैं और कितने प्रक्षिप्त, इसका निश्चय करना कठिन है। ऐसा समझा जाता है कि इनमें स्वयं चंदसखी के रचे हुए भजन बहुत कम हैं। अधिकांश भजनों और लोक-गीतों की रचना अन्य व्यक्तियों ने चंदसखी के नाम से कर डाली है। ऐसा सभी लोक प्रिय कवियों की रचनाओं के साथ हुआ है। लोक-काव्य की तो यह विशेषता है कि वह सुने-सुनाये रूप में घटा-बढ़ी के साथ चलता रहता है। उसमें से मूल रचना को पृथक् करना अत्यंत दुःसाध्य है। चंदसखी के भजनों और लोक-गीतों के संबंध में भी यही बात है।

जहाँ तक उनकी पदावली का प्रश्न है, यह उनकी प्रामाणिक रचना जान पड़ती है। इसमें प्रक्षिप्त पदों की संख्या बहुत कम होने का

अनुमान है। इस पदावली के प्राप्त होने से चंदसखी संबंधी मान्यता में क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता है। अब तक चंदसखी का महत्व केवल लोक कवि या कवयित्री के रूप में था, किंतु इन पदों के कारण वे अब उन कतिपय भक्त कवियों की पंक्ति में स्थान प्राप्त करेंगे, जिन्होंने भक्ति-काव्य और लोक-काव्य दोनों की रचना की है। दूसरी महत्व की बात यह है, जहाँ अब तक चंदसखी के जीवन-वृत्तांत के संबंध में कुछ भी ज्ञात नहीं था, वहाँ इस पदावली ने उनकी जीवनी के निश्चित सूत्र भी प्रदान किये हैं। मुझे हर्ष है, इस पुस्तक में मैं प्रथम बार चंदसखी के इन महत्वपूर्ण पदों का संकलन और उनकी प्रामाणिक जीवनी प्रस्तुत कर रहा हूँ।

चंदसखी संबंधी अपनी दोनों रचनाओं में मुझे जिन सज्जनों से सहायता मिली है, उनमें श्री अगरचंद जी नाहटा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने सामग्री जुटाने में मुझे बहुत सहयोग दिया है। उन्होंने अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर में संगृहीत भजनों की चार हस्त लिखित पुस्तकों में से चंदसखी के ३४ भजनों की प्रतिलिपि भी भेजी, जिनमें २३ नये भजन मिले। श्री उदयशंकर जी शास्त्री, हिंदी विद्यापीठ आगरा, ने अपने संग्रह में से चंदसखी के १६ भजनों की प्रति-लिपि प्रदान की, जिनमें १३ नये भजन प्राप्त हुए। चूंकि यह सामग्री 'चंदसखी के भजन और लोक-गीत' नामक प्रथम पुस्तक के छप जाने के पश्चात् प्राप्त हुई, अतः इसे इस द्वितीय पुस्तक के परिशिष्ट में प्रकाशित कर दिया है। इससे पाठक चंदसखी के प्रामाणिक पदों से उनके तथाकथित भजनों की तुलना कर सकेंगे। श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने राजस्थानी और डा० चिंतामणि जी उपाध्याय एवं श्री श्याम जी परमार ने मालवी-निमाड़ी भजनों के संकलन में सहयोग प्रदान किया है। मैं इन सब सज्जनों का अत्यंत आभारी हूँ।

चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की सामग्री में 'ज्ञान चौगुणी' और चाचा हित वृंदावनदास जी की रचनाओं का विशेष महत्व है। 'ज्ञान चौगुणी' के अनुसंधान में श्री किशोरीशरण जी 'अलि', नागा काशीदास जी और बैष्णव माखनचोरदास जी का सहयोग उल्लेखनीय है। यदि अंतिम सज्जन अहमदाबाद से 'ज्ञान चौगुणी' की प्रति नहीं भेजते, तो इस दुर्लभ रचना का समुचित उपयोग होना संभव नहीं था। चाचा हित वृंदाबनदास जी की रचनाओं और राधावल्लभ संप्रदाय के इतिहास की सामग्री का अध्ययन करने में मुझे बाबा बंशीदास जी से अत्यंत उदारता पूर्वक सहायता प्राप्त हुई हैं। इन सब साधु महानुभावों का मैं अत्यंत अनुगृहीत हूँ।

मीतल निवास,
डेम्पीयर पार्क, मथुरा

—प्रभुदयाल मीतल

विषय-सूची

विषय	पृष्ठांक
१—जीवनी	
(१) उपक्रम	१
१. लोक-प्रियता	१
२. जीवन-वृत्त के प्रति अज्ञान	३
(२) जीवन-वृत्त की खोज	४
१. अंतःसाक्ष्य	५
(अ) बल्लभ संप्रदाय और बालकृष्ण	६
(आ) बालकृष्ण, हरिलाल और उदयलाल ...	८
२. वहिःसाक्ष्य	१०
(अ) राधाबल्लभ भक्तमाल	१०
(आ) रास सर्वस्व	१४
(इ) ज्ञान चौगुणी	१७
(ई) 'प्रबंध' तथा 'रसिक अनन्य परिचावली' ...	२४
(३) जीवन-वृत्तांत की समीक्षा	२६
१. अस्तित्व काल	२६
२. संबंधित स्थान	३३
३. स्त्री या पुरुष	३५
४. नाम	३६

विषय	पृष्ठांक

२—पदावली

विषय पृष्ठांक

३—परिशिष्ट

चंदसखी की जीवनी और पदावली

१—जीवनी

१. उपक्रम

हिंदी साहित्यकारों में कबीर, तुलसी और मीरा की जितनी प्रसिद्धि है, लोक-गीतकारों में चंदसखी का नाम भी उतना ही विख्यात है। उत्तर भारत के विशाल भू-भाग में चंदसखी की रचनाएँ जितनी जन-प्रिय हैं, उतनी शायद ही किसी लोक-कवि की हों। पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी मध्य प्रदेश के जन-साधारण में, विशेषकर स्त्री-समुदाय में, जो भजन और लोक-गीत गाये जाते हैं, उनकी अंतिम पंक्तियों में प्राय: 'चंदसखी भज बालकृष्ण छबि' की शब्दावली होती है। इस प्रकार की रचनाएँ राजस्थानी, ब्रज, बुंदेली, मालवी, निमाड़ी आदि हिंदी की अनेक बोलियों में मिलती हैं, जो उनके बोलने वाले करोड़ों नर-नारियों की जिह्वाओं पर बसी हुई हैं।

लोक-प्रियता—

राजस्थान और ब्रजमंडल में इस प्रकार के भजन और गीत इतने लोक-प्रिय हैं कि वहाँ प्रत्येक अवसर पर इनका गाया जाना अनिवार्य सा हो गया है। वहाँ की स्त्रियाँ चक्की-चर्खा, झाड़ू-बुहारी आदि गृह कार्यों को करती हुई इन गीतों को गुनगुनाया करती हैं, जिससे वे थकान के स्थान पर आनंद-

उल्लास का अनुभव करती रहती हैं। ब्रज की नारियाँ पनघट और यमुना के मार्ग पर जाती-आती हुई जब इन गीतों को मधुर ध्वनि से गाती हैं, तब भोर का स्वाभाविक सुंदर वातावरण और भी सुखद और सुहावना ज्ञात होता है। दैनिक कार्यक्रम के अतिरिक्त त्यौहार, व्रत, उत्सव, पर्व तथा रात्रि-जागरण के अवसरों पर तो ये गीत आवश्यक रूप से गाये जाते हैं। संगीतज्ञों और गायकों की मंडलियों में भी चंदसखी की अनेक रचनाएँ परंपरा से प्रचलित हैं। इन सब बातों से ज्ञात होता है कि उत्तर भारत के अधिकांश जन-जीवन के साथ चंदसखी की रचनाएँ दूध-खाँड़ की तरह घुल-मिल गई हैं।

राजस्थान में मीराबाई और चंदसखी की रचनाओं का घर-घर में प्रचार है। राजस्थानी महिला-समाज में तो चंदसखी मीराबाई से भी अधिक लोकप्रिय है[1], यह वहाँ के गण्यमान्य

---

१ (क) मीरा के बाद चंदसखी के भजनों का राजस्थान में सबसे अधिक प्रचार है; बल्कि औरतों में तो मीरा से भी इसके भजन अधिक प्रिय हैं।

—श्री अगरचंद नाहटा (विक्रम, मार्गशीर्ष सं० २००६)

(ख) राजस्थान में लोक-प्रियता के नाते चंदसखी का नाम मीरा से भी ज्यादा है।

—श्री मनोहर शर्मा (राजस्थान-भारती, अप्रैल १९५०)

(ग) राजस्थान की मरुभूमि में संगीतकार के रूप में जितनी लोकप्रिय चंदसखी हुई है, उतनी मीरा भी नहीं।

श्री जगदीशचंद्र माथुर (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १२-७-५३)

विद्वानों का ही मत है। बुंदेलखंड, भदावर, मालवा और निमाड़ की स्त्रियों में भी चंदसखी की रचनाएँ खूब प्रचलित हैं।

जीवन-वृत्त के प्रति अज्ञान—

ऐसे जन-प्रिय भजनों और गीतों की रचना करने पर भी चंदसखी के जीवन-वृत्त की जानकारी अभी तक प्रायः नहीं के बराबर है। हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में उनका नामोल्लेख तो मिलता है, किंतु उनके जीवन-वृत्त के संबंध में इनसे कोई प्रामाणिक सूचनाएँ प्राप्त नहीं होती हैं। जीवन-वृत्त तो क्या, उनके यथार्थ काल का भी अभी तक निर्णय नहीं हो सका है। उनके विषय में यह भी निश्चय नहीं है कि वे स्त्री थीं या पुरुष! उनकी रचनाओं के परंपरागत गायकों तक को यह पता नहीं है कि वे कोई महिला कवयित्री थीं, अथवा सखी नाम धारी कोई पुरुष कवि; चंदसखी उनका नाम है, अथवा उपनाम; उनकी रचनाओं में उल्लिखित 'बालकृष्ण' कौन थे; उनका किस संप्रदाय से संबंध था और उनके गुरु तथा उपास्य देव कौन थे; उन्होंने अपने लोकप्रिय भजनों और गीतों की रचना कब और कहाँ की थी; उनके नाम से जितनी रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें से कितनी स्वयं उनकी हैं; और कितनी अन्य व्यक्तियों ने उनके नाम से रच डाली हैं। उनकी रचनाएँ जिन-जिन प्रदेशों में प्रचलित हैं, उन-उन प्रदेशों के निवासी उनको उन्हीं से संबंधित मानते रहे हैं। राजस्थान के निवासी उनको राजस्थानी, ब्रज में रहने वाले उनको ब्रजवासी समझते हैं। बुंदेलखंड और मालवा के लोगों का मत है, वे

उनके ही प्रांतों के थे। वास्तविक बात क्या है, इसे प्रामाणिक सामग्री के साथ अभी तक उपस्थित नहीं किया गया है। चंदसखी की लोक-प्रियता को देखते हुए उनके विषय में इतनी अज्ञानता वास्तव में आश्चर्य की बात मालूम होती है।

२. जीवन-वृत्त की खोज

चंदसखी के संबंध में कई पत्र-पत्रिकाओं में कितने ही लेख निकले हैं। उनकी रचनाओं के कई संकलन भी प्रकाशित हुए हैं। इन लेखों और पुस्तकों में चंदसखी के काव्य-महत्व पर तो कुछ प्रकाश डाला गया है, किंतु उनके जीवन-वृत्त की कोई प्रामाणिक सामग्री उपस्थित नहीं की गई है। इस विषय में सभी विद्वानों ने अपनी असमर्थता प्रकट की है[1]।

---

१ (क) चदसखी के भजन जितने प्रिय हैं, उनके जीवन संबंधी जानकारी उतनी ही तिमिरावृत्त है। अभी तक यह भी पता नहीं लग सका कि वे क्या थे, कौन थे, कहाँ के थे और कब हुए?

—श्री अगरचंद नाहटा (विक्रम, मार्गशीर्ष २००६)

(ख) चंदसखी नाम युक्त भजनों का प्रणेता कहाँ का रहने वाला, कौन था, आदि बातें अज्ञात हैं।

—श्री मनोहर शर्मा (राजस्थान भारती, अप्रैल १९५०)

(ग) चंदसखी के जीवन-वृत्त के विषय में यत्किंचित ज्ञान-संचयन का कहीं कोई सूत्र उपलब्ध नहीं। ...इनके जीवन पर कुछ भी कहना अद्यावधि प्राप्त सामग्री के आधार पर संभव नहीं।

—सुश्री पद्मावती 'शबनम' (चंदसखी और उनका काव्य, वस्तु कथा, पृ.३३)

(घ) चंदसखी कौन थी, कहाँ जन्मी आदि जानकारी अज्ञान के गर्भ में है। खोज चल रही है, परंतु अभी तक कुछ भी हाथ नहीं लगा है।

—श्री जगदीशचंद्र माथुर (साप्ताहिक हिंदुस्तान, १२-७-५३)

चंदसखी संबंधी इतनी अज्ञानता का कारण यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में अपने विषय में कुछ भी नहीं लिखा है, अतः अंतःसाक्ष्य के सहारे उनका जीवन-वृत्त उपस्थित नहीं किया जा सका है। उनके समकालीन या परवर्ती व्यक्तियों ने भी उनके संबंध में अधिक नहीं लिखा है। जो कुछ लिखा गया है, वह अधिकतर अप्रामाणिक है। जो प्रामाणिक है, वह प्रायः अप्रकट रहा है; अतः बहिःसाक्ष्य भी उनके जीवन-वृत्तांत के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ है।

अंतःसाक्ष्य—

जहाँ तक अंतःसाक्ष्य का संबंध है, उनकी अधिकांश रचनाओं में उल्लिखित 'चंदसखी भज बाल कृष्ण छबि' का 'बाल कृष्ण' ही उनके जीवन-वृत्तांत की खोज में कुछ सहायक हो सकता है। चंदसखी के परम प्रिय यह 'बालकृष्ण' कौन हैं? और उनको इस नाम का इतना आग्रह क्यों है? यदि इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिल जाय, तो चंदसखी की जीवनी पर छाया हुआ अज्ञान का आवरण भी कुछ अंशों में दूर हो सकता है। कई विद्वानों ने 'बालकृष्ण' के सूत्र को पकड़कर चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की खोज करने की चेष्टा की है, किंतु उनके आनुमानिक कथन प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं किये गये हैं।

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि चंदसखी की रचनाओं का सबसे अधिक प्रचलन राजस्थान में है, जहाँ मीराबाई की रचनाओं का काफी प्रचार है। जिस प्रकार मीराबाई के

नाम के साथ उनके उपास्य देव 'गिरधर' का नाम जुड़ा हुआ है, उसी प्रकार 'बालकृष्ण' चंदसखी के ठाकुर का भी नाम होगा, ऐसा कुछ लोगों का अनुमान रहा है। ब्रज के रासधारी श्री राधाकृष्ण ने कुछ समय पूर्व 'रास सर्वस्व' नामक एक पुस्तक की रचना की थी। इसमें उन्होंने रास-प्रेमी ब्रज-भक्तों का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें चंदसखी के ठाकुर का नाम 'बालकृष्ण' लिखा गया है। उनका कथन है कि अपने ठाकुर की कृपा से ज्ञान प्राप्त कर चंदसखी कृष्ण-रस के कवि हो गये, और अपनी रचनाओं में 'चंदसखी भज बाल कृष्ण छबि' की शब्दावली का प्रयोग करने लगे[1]।

(अ) बल्लभ संप्रदाय और बाल कृष्ण

श्री बल्लभाचार्य जी के पुष्टि संप्रदाय में श्री कृष्ण के बाल स्वरूप की सेवा होती है। उक्त संप्रदाय के एक देव-विग्रह का नाम 'बालकृष्ण' भी है, अतः कुछ लोगों की धारणा है कि चंदसखी बल्लभ संप्रदाय के भक्त कवि थे अथवा वे उसी संप्रदाय की कवयित्री थीं। चंदसखी पर लिखने वाली अद्यावधि अंतिम लेखिका सुश्री पद्मावती 'शबनम' ने चंदसखी को श्री बल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित पुष्टि-मार्ग से प्रभावित बतलाया है[2]।

---

१. एक दिन ठाकुर राखौ गोदी। बालकृष्ण कह परम प्रमोदी।।
ठाकुर ने हँसि बंसी मारी। तुरतहि ज्ञान भयौ भव-हारी।।
तब यों भयौ कृष्ण-रस कौ कवि। चंदसखी भजि बाल कृष्ण छबि।।
—'रास-सर्वस्व,' पृ० १५

२. चंदसखी और उनका काव्य, वस्तु कथा, पृ० ३३

बल्लभ संप्रदाय के साहित्य में चंदसखी नामक कोई भक्त कवि या कवयित्री का उल्लेख नहीं मिलता है। इस संप्रदाय के बालकृष्ण ठाकुर का किसी चंदसखी से कोई संबंध भी प्रसिद्ध नहीं है। चंदसखी की रचनाओं का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनमें 'बालकृष्ण' से अभिप्राय श्री कृष्ण के बाल स्वरूप का नहीं है। उनकी रचनाओं से उनका बल्लभ संप्रदायी होना अथवा उक्त संप्रदाय के प्रति श्रद्धा रखना भी प्रकट नहीं होता है। उनकी सैकड़ों रचनाओं में केवल दो पद 'गिरवरधर' और 'श्रीनाथ जी' की स्तुति के उपलब्ध हुए हैं[1]। इनके कारण भी उनको बल्लभ संप्रदायी नहीं कहा जा सकता, क्यों कि इन पदों में नाम की छाप के साथ 'हित' शब्द लगा हुआ है, जो श्री हरिवंश जी के राधावल्लभीय संप्रदाय में ही प्रयुक्त होता है। इससे उनके ठाकुर का नाम 'बालकृष्ण' अथवा उनका बल्लभ संप्रदायी होना संगत ज्ञात नहीं होता है।

---

१. (क) गिरवर-धरन-चरन चितु लाएँ।

आनँदकंद समूह सुख सांवरौ, ऐसौ प्रभु छाँड़ि और कौन कौं ध्याएँ
परम कृपाल, दीन-दुख-मोचन, भक्त-वत्सल संतन सुख दाएँ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, राधावर निस-दिन गुन गाएँ॥

(ख) सोभा-सुख-सागर श्रीनाथजी निहारिये।

मुकट की लटक, चटक पट पीत पर,
कोटि-कोटि काम आली, वारि वारि डारिये॥
सुंदर वर, सुखकारी, गिरधारी, अलक-झलक घुंघरारिये।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, मन-वच-क्रम कछु और न विचारिये

(आ) बालकृष्ण, हरिलाल और उदयलाल

चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की खोज के लिये 'बालकृष्ण' का यथार्थ परिचय अत्यंत आवश्यक है। ब्रज में यह किंवदंती प्रसिद्ध है, "राधावल्लभीय संप्रदाय में एक गोस्वामी बालकृष्ण जी हुए हैं। वे चंदसखी के गुरु थे। चंदसखी की रचनाओं में उन्हीं बालकृष्ण जी का नाम दिया गया है।" मध्य-कालीन भक्त कविगण अपने नाम की छाप के साथ अपने गुरु या किसी आदरणीय व्यक्ति का नाम लगाया करते थे। इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। वल्लभ संप्रदायी भक्त भगवानदास की रचनाओं में उनके आदरणीय रामराय जी का नाम लगा हुआ है। इसी संप्रदाय की एक कवयित्री गंगाबाई की समस्त रचनाएँ 'श्रीविट्ठल गिरिधरन' के नाम से मिलती हैं। इनमें 'श्री विट्ठल' से अभिप्राय उनके गुरु गोसाईं विट्ठलनाथ जी से है। हरिदासी संप्रदाय के भक्त कवि पीतांबरदास ने अपने अनेक पदों में संप्रदाय के प्रथम आचार्य श्री हरिदास स्वामी का नाम दिया है। राधावल्लभीय संप्रदाय के विख्यात भक्त कवि चाचा वृंदाबनदास जी ने अपनी अधिकांश रचनाओं में अपने नाम के साथ अपने गुरु श्री रूपलाल जी का नाम भी लगाया है। सहजोबाई की रचनाओं में उनके गुरु चरणदास जी का नाम मिलता है। इन उदाहरणों को देखते हुए कहा जा सकता है कि बालकृष्ण जी चंदसखी के गुरु थे, यह किंवदंती निराधार नहीं है। फिर भी इसके समर्थन में प्रमाण अपेक्षित हैं।

चंदसखी की रचनाओं के अध्ययन से ज्ञान होता है कि उनकी अधिकांश कृतियों में जहाँ 'भज बालकृष्ण छबि' की छाप मिलती है, वहाँ 'हित बालकृष्ण प्रभु' की छाप के भी अनेक पद उपलब्ध होते हैं। ब्रज के कीर्तन-संग्रहों में चंदसखी की छाप के कुछ ऐसे पद भी संकलित हैं, जिनमें 'बालकृष्ण' के स्थान पर 'हरिलाल' और 'उदयलाल' के नाम दिये हुए हैं[1]। इन नामों के साथ भी 'हित' शब्द लगा हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि वे सब महानुभाव चंदसखी के आदरणीय जन थे और उनका राधावल्लभ संप्रदाय से संबंध था।

बालकृष्ण, हरिलाल और उदयलाल के अंत:साक्ष्य से जहाँ चंदसखी के गुरु और संप्रदाय के सूत्र मिलते हैं, वहाँ

---

१ (क) भजो मन राधे-कृष्ण गोबिंद।
प्रिय-प्यारी, ब्रषभान-दुलारी, सुंदर श्री नँदनंद॥
गौर-स्याम सुख-सागर नागर, दंपति आनंद-कंद।
'जै श्री हित हरिलाल' लाड़िली, जीवन श्री वृंदाबन-'चंद'॥

(ख) हिंडोरा झूलत श्री राधाबल्लभ लाल।
'जै श्री हित हरिलाल' कृपाल जुगल वर, 'चंद' प्रान-प्रतिपाल॥

(ग) नवल बधाई बाजै, ब्यास मिश्र दरबार।
प्रगटे श्री हरिवंस सु आनंद-सुख के सार॥
'जै श्री उदयलाल' प्रभु दीजै, अपने निकट निवास।
'चंदसखी' निजु दासी, चरन-कमल की आस॥

(घ) व्यास-महल में ढाढ़नि नाँचे रंग भीनी।
श्री हित जनम सुनत उठि धाई, हरष बधाई दीनी॥
'जै श्री उदयलाल' हित प्रगटे, सुख-सागर देति असीस सुहाई।
'चंदसखी' हित-चरन रेनु की आसा रह्यौ सदाई॥

उनके समय पर भी प्रकाश पड़ता है। कारण यह है, वे तीनों महानुभाव राधावल्लभ संप्रदाय के आदरणीय जन थे और साथ ही समकालीन भी थे।

वहि:साक्ष्य—

वहि:साक्ष्य के रूप में भी चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की अधिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। विशेष अनुसंधान करने पर जो सामग्री प्राप्त हुई है, उसमें राधाबल्लभ भक्तमाल और 'रास सर्वस्व' नामक दो आधुनिक रचनाएँ हैं तथा 'ज्ञानचौगुणी' नामक एक कुछ पुरानी रचना है। राधाबल्लभ संप्रदाय के मध्य कालीन भक्त कवि चाचा वृंदाबनदास जी के चंदसखी संबंधी कई उल्लेख भी मिले हैं, जो महत्वपूर्ण बहि:साक्ष्य हैं। इन सब के आधार पर चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की सामग्री एकत्र की जा सकती है। अब हम इन वहि:साक्ष्यों पर क्रमश: विचार करते हैं।

(अ) राधावल्लभ भक्तमाल

राधावल्लभ संप्रदाय की एक गद्य रचना 'राधावल्लभ भक्तमाल' है। इसे उक्त संप्रदाय के एक भक्त श्री प्रियादास शुक्ल, चौबेपुर (जि० कानपुर) निवासी ने सं १९६५ में रचा था। इसका संपादन व संशोधन वृंदाबन निवासी गो० वृंदाबनवल्लभ जी ने किया है। रचयिता के पुत्र श्री ब्रजबल्लभ-दास मुखिया ने सं १९८६ में इसका प्रकाशन किया है। इस प्रकार यह बिलकुल आधुनिक रचना है। इसमें राधावल्लभीय भक्तों के चरित्र वर्णित हैं। इसकी रचना में अनुश्रुतियों और

किंवदंतियों का अधिक आधार लिया गया है, जिसमें लेखक और संपादक महोदयों ने अपनी कल्पनाएँ भी जोड़ी हैं। इन कारणों से इस ग्रंथ की सभी बातें विश्वसनीय नहीं हैं, यद्यपि कुछ काम की बातें भी मिल जाती हैं। इसमें बालकृष्णजी तथा चंदसखी के परिचय इस प्रकार दिये गये हैं—

गो० श्री १०८ बालकृष्ण लाल जी

"बालकृष्ण सम अन्य नहिं, छोड़यो सुख संसार।
नागा ह्वै हित धर्म कौ, कीनौ जगत प्रचार।।

आपका जन्म अनुमानन १७ वीं शताब्दी के अंत में हुआ है। आप हित धर्म के बहुत ज्ञाता थे। श्री हित धर्म प्रचार करने की बहुत उत्कंठा थी। आपने गृहस्थाश्रम का विशेष पालन नहीं किया। एक संतान होने के बाद आपने गृह त्याग दिया और रास मंडल अखाड़ा राधावल्लभी निर्मोही पर निवास करने लगे। कुछ दिन रह कर जमात नागाओं को साथ लेकर आप देशाटन करने चल दिये। ओड़छे में गये, वहाँ से अन्य देशों में भ्रमण करने लगे। आपके ही शिष्य चंदसखी जी हैं और आपके ही नाम की छाप चंदसखी जी के पदों में पाई जाती है—चंदसखी भज बालकष्ण छबि। आपने पद-रचना भी बहुत की।"

—राधावल्लभ भक्तमाल, पृ० १६०-१६१

चंद्रसखी जी

"चंद्रसखी की रस भरी, पद-रचना रस-खान।
देखत, गावत, सुनती ही, रहत न तन की भान।।
महत सभा आभरन अनँत संग रहै लहारैं।
अति कमनीय किशोर, चरित नित रच बिस्तारैं।।
जेते भूप हरि भक्ति, रहे आज्ञा अनुसारी।
श्री बाल कष्ण प्रसाद भजन प्रभुता भई भारी।।

श्री हरिवंश प्रशंस चित, बालकृष्ण की छाप तें।
चंदसखी जगमगे श्री राधा इष्ट प्रताप तें॥

ये सनाढ्य ब्राह्मण ओड़छा राजधानी के रहने वाले थे। बाल अवस्था में ही इनकी प्रीति भगवत चरणों में थी। समय पाकर श्री वृंदावन आये और संत-महात्माओं का सत्संग किया। उस समय बालकृष्ण लाल जी अखाड़ा रासमंडल पर विराज कर उपदेश दे रहे थे। आपने आकर दर्शन किये और प्रार्थना की कि महाराज मुझे अपना चरणाश्रित बनाइये। महाराज ने यह सुन प्रार्थना स्वीकार कर शिष्य किये और मस्तक पर अभय दायक कर कमल धारण किया। आज्ञा दी कि तुम देशाटन कर अपने धर्म का प्रचार करो। प्रभु इच्छा से तुम्हारी वाणी की स्फूर्ति होगी। जमात बांधकर आप देश-देशांतरों में चल दिये, सदुपदेश प्रेम लक्षणा भक्ति का प्रचार करने लगे। इनकी कुंज यमुना दरवाजे पर है। इनकी बैठक ओड़छा मड़ैया पर है। इन्होंने पद रचना भी बहुत की है। पद्यावली फुटकर पद।" (आगे वंश प्रणाली दी गई है।)

—राधावल्लभ भक्तमाल, पृ० ४४५-४६

'राधावल्लभ भक्तमाल' में बालकृष्ण और चंदसखी के जो परिचय दिये गये हैं, वे तब तक स्वीकार नहीं किये जा सकते, जब तक उनकी पुष्टि किसी अन्य प्रामाणिक साधन से न हो जाय। कारण पहले ही लिखा जा चुका है कि यह आधुनिक रचना है और अधिकतर अनुश्रुतियों और किंवदंतियों पर आधारित है। चूंकि ये अनुश्रुतियाँ और किंवदंतियाँ संप्रदाय में परपरा से प्रचलित रही हैं, अत: इनमें से कुछ प्रामाणिक हैं और कुछ प्रक्षिप्त हैं। इसकी परिचयात्मक कविताएँ अत्यंत अशुद्ध और भ्रष्ट हैं।

बालकृष्ण जी के संबंध में खोज करने पर जो बातें ज्ञात हुई हैं, उनसे 'राधावल्लभ भक्तमाल' के कथन की बहुत—कुछ पुष्टि होती है। किंतु बालकृष्ण जी को 'गो० श्री १०८ बाल-कृष्ण लाल जी' लिखना और उन्हें श्री हित हरिवंश जी के वंशज बतलाना ठीक नहीं है। 'राधावल्लभ भक्तमाल' में भी जहाँ अन्य गोस्वामियों की वंश—परंपरा का उल्लेख किया गया है, वहाँ गो० बालकृष्ण लाल जी के संबंध में यह नहीं बतलाया गया कि वे हित-कुल की किस शाखा में हुए थे। उपर्युक्त विवरण में लिखा गया है कि वे नागाओं को जमात लेकर देश-भ्रमण करने गये थे। यह कथन भी ठीक मालूम नहीं होता है। राधावल्लभ संप्रदाय में नागाओं की जमात का निर्माण वैष्णवों और अवैष्णवों के संघर्ष का परिणाम था, जिसका काल बालकृष्ण जी के समय से कुछ बाद का है। इस प्रकार की जमातों में विरक्त साधु होते हैं, जिनको 'स्वामी' कहा जाता है। श्री हित हरिवंश जी के वंशज गृहस्थ गोस्वामी हैं। खोज से ज्ञात हुआ है कि चंदसखी के गुरु नाद[1] परिकर के विरक्त साधु 'बालकृष्ण स्वामी' थे, हित हरिवंश जी के वंशज 'श्री १०८ बालकृष्ण लाल जी गोस्वामी' नहीं।

---

[1] राधावल्लभ संप्रदाय में सिद्धों और हठ-योगियों की प्राचीन पद्धति के अनुसार 'बिंदु' और 'नाद' की परंपराएँ प्रचलित हैं। इस संप्रदाय के प्रवर्त्तक श्री हित हरिवंश जी के वंशज गोस्वामी गण 'बिंदु' परिकर के और उनके शिष्य गण 'नाद' परिकर के कहे जाते हैं।

चंदसखी के संबंध में 'राधावल्लभ भक्तमाल' में जो प्रशस्ति सूचक छप्पय दिया गया है, उसके रचयिता का नामोल्लेख न होने से वह भक्तमाल-कार का कथन समझा जा सकता है ; किंतु वास्तव में वह चाचा वृंदाबनदास का है। 'राधावल्लभ भक्तमाल' में वह अशुद्ध और विकृत रूप में छपा है। इसी को श्री महावीर सिंह गहलोत कृत 'चंदसखी पदावली' में भी उद्धृत किया गया है। हम इसका शुद्ध पाठ आगे देंगे। चंदसखी का जो संक्षिप्त परिचय दिया गया है, वह प्राय: ठीक है ; किंतु उसकी पुष्टि अन्य प्रमाणों से होना आवश्यक है।

(आ) रास सर्वस्व

यह आधुनिक कृति है, जिसकी रचना 'राधावल्लभ भक्तमाल' से कुछ पहले की है। इसे ब्रज के रासधारी बिहारीलाल के पुत्र राधाकृष्ण ने रचा है। बिहारीलाल का जन्म सं० १८८५ में हुआ था। उनका देहावसान ५० वर्ष की आयु में मिती अगहन शुक्ला ७ सं० १९३५ को मथुरा में हुआ था। राधाकृष्ण के जन्मादि का उल्लेख उक्त पुस्तक में नहीं हुआ है, किंतु उसका समय अनुमानत: सं० १९१० से सं० १९७० तक जान पड़ता है। इस प्रकार 'रास सर्वस्व' की रचना सं० १९५० के लगभग हुई होगी।

इस ग्रंथ के आरंभ में कतिपय रास-रसिक भक्तों का परिचय दिया गया है। उन भक्तों में बालकृष्ण तुलाराम (पृ० ६) और चंदसखी (पृ० ७) का भी वर्णन है। फिर

चतुर्थ परिच्छेद में रास द्वारा प्रभु का प्रत्यक्ष दर्शन करने वाले भक्तों का कथन करते हुए चंदसखी का पुनः (पृ० १५) उल्लेख है। इसमें बालकृष्ण स्वामी॰ का वर्णन नहीं है, बालकृष्ण तुलाराम का है। हम आगे बतलावेंगे कि बालकृष्ण स्वामी और बालकृष्ण तुलाराम दोनों पृथक-पृथक भक्त थे। वे दोनों एक ही गुरु के शिष्य, एक ही संप्रदाय के अनुयायी और एक ही समय में विद्यमान थे, अतः उनके संबंध में प्रायः भ्रम हो जाता है। 'रास-सर्वस्व' में बालकृष्ण तुलाराम के संबंध में निम्नलिखित परिचयात्मक छप्पय छपा हुआ है—

श्री हरिलाल कृपाल गुरुन कौ पाछौ लीयौ।
बसत नगर समसेर भजन मारग चित दीयौ॥
आदि अंत निर्वही रास इस्थाप उपासन।
श्री वृंदाबन नित केलि महा सुख भरे हुलासन॥
श्री हरिवंस उदार जस, गावत रसना रस पगी।
बालकृष्ण तुलाराम की, नित रास रंग में मति पगी॥

—रास सर्वस्व, पृ० ६

इस छप्पय के रचयिता का नामोल्लेख नहीं किया गया है, अतः इसे 'रास सर्वस्व'–कार की रचना समझा जा सकता है, किंतु वास्तव में यह भी चाचा वृंदावनदास की रचना है और इसे भी अशुद्ध रूप में छापा गया है। हम इसका भी शुद्ध पाठ आगे देंगे। इस पुस्तक में चंदसखी का उल्लेख दो स्थानों पर हुआ है। पहला बालकृष्ण तुलाराम के साथ प्रथम परिच्छेद में, दूसरा 'लीलानुकरण प्राकट्य निरूपण' नामक

तृतीय परिच्छेद में। प्रथम उल्लेख चाचा वृंदाबनदास जी कृत है, किंतु उनका नाम यहाँ भी नहीं लिखा गया है, और उसे अपने ढंग से विकृत कर छापा गया है। हम 'रास सर्वस्व' में मुद्रित दोनों उल्लेखों को यहाँ उद्धृत करते हैं—

महत सभा आभरन, अनंत संत रहैं लारें।
अति कमनीय किशोर, चरित पद रचि बिस्तारें॥
जिंते भूप हरिभक्त रहैं आज्ञा अनुसारी।
श्री हरिलाल प्रसाद, भजन-प्रभुता भई भारी॥
रास अनुकरण सुदृढ़ मति, बालकृष्ण हित छाप तें।
चंदसखी कौ ज्ञान उर, बालकृष्ण परताप तें॥

—रास सर्वस्व, पृ० ७

नगर ओरछा जगत प्रसिद्धा। तहँ द्विज चंदसखी भौ सिद्धा॥
थानेदार मौठ कौ सोई। सखी भाव हिय राखो गोई॥
इक दिन ठाकुर राखौ गोदी। बालकृष्ण कहँ परम प्रमोदी॥
ठाकुर ने हँसि बंसी मारी। तुरतहि ज्ञान भयौ भव हारी॥
तब यों भयौ कृष्ण रस कौ कवि। चंदसखी भज बालकृष्ण छबि॥

—रास सर्वस्व, पृ० १५

ऊपर उद्धृत प्रथम उल्लेख के विषय में लिखा जा चुका है कि वह उसका विकृत रूप है, जो लेखक ने मनमाने ढंग से किया है। दूसरे उल्लेख में चंदसखी के निवास स्थान और उनके आरंभिक जीवन के संबंध में कुछ सूचनाएँ हैं। ये सूचनाएँ महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनसे जीवन-वृत्तांत की संक्षिप्त रूप-रेखा बनती है; किंतु इनकी भी पुष्टि अन्य प्रमाणों से होना आवश्यक है। इस उल्लेख में बालकृष्ण को चंदसखी का

ठाकुर बतलाया गया है, गुरु नहीं। इससे चंदसखी संबंधी एक अन्य किंवदंती का समर्थन होता है, जो राजस्थान में प्रचलित है। राजस्थान में मीराबाई की रचनाओं के साथ ही साथ चंदसखी के भजनों का भी काफी प्रचार है। जिस प्रकार मीराबाई के नाम के साथ उसके उपास्य देव 'गिरिधर' का नाम जुड़ा हुआ है, उसी प्रकार 'बालकृष्ण' चंदसखी के ठाकुर नाम भी समझ लिया गया है। यह किंवदंती निराधार है, जैसा हम आगे सिद्ध करेंगे।

(इ) ज्ञान चौगुणी

खोज में यह नई रचना प्राप्त हुई है, जिसमें चंदसखी से संबंधित कुछ महत्व की सूचनाएँ मिलती हैं। यह पुस्तक अन्य ग्रंथ की खोज में अनायास प्राप्त हुई है। श्री किशोरीशरण 'अलि' कृत राधाबल्लभ संप्रदाय की ग्रंथ-सूची में चंदसखी की स्फुट पदावली के अतिरिक्त उनकी एक पुस्तक 'ज्ञान चौवनी' का भी उल्लेख हुआ है[1]। इसका प्राप्ति-स्थान वृन्दाबन लिखा गया है। अभी तक चंदसखी कृत किसी पुस्तक की प्रसिद्धि नहीं थी। श्री किशोरीशरण जी ने सर्व प्रथम इसकी सूचना दी थी, अतः उसे देखने की प्रबल इच्छा हुई। वृंदाबन में तलाश करने पर मालूम हुआ कि श्री किशोरीशरण जी ने उसे गो० बलदेवलाल जी छोटी सरकार वालों के संग्रह में देखा था। अपनी स्मृति के अनुसार उन्होंने

---

१ राधावल्लभीय साहित्य रत्नावली, सं० ९९

बतलाया कि वह ब्रजभाषा की गद्य रचना है, जिसमें कदाचित सिद्धांत विषयक ५४ दोहे हैं। गो० बलदेवलाल जी के संग्रह में वह पुस्तक नहीं मिली, किंतु उसकी दो प्रतियाँ अन्यत्र प्राप्त हो गईं। पहली प्रति नागा काशीदास जी वृंदाबन वालों के पास से और दूसरी प्रति वैष्णव माखनचौरदास जी निर्मोही अहमदाबाद वालों के पास से मिली। दोनों प्रतियाँ अपूर्ण हैं। पहिली प्रति अत्यंत जीर्ण और खंडित है। दूसरी प्रति पुष्ट कागज पर स्पष्ट अक्षरों में लिखी हुई है। दोनों प्रतियों के देखने पर मालूम हुआ कि उसका नाम 'ज्ञान चौवनी' नहीं, वरन् 'ज्ञान चौगुणी' है और वह ब्रजभाषा में न होकर संस्कृत में है। पुस्तक की पुष्पिका में उसे चंदसखी की कृति बतलाया गया है, किंतु उसे पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि वह अन्य कवि की रचना है। उसमें कवि के नाम का उल्लेख नहीं है, किंतु वह राधावल्लभ संप्रदाय का अनुयायी जान पड़ता है। उसने अपने गुरु का नाम 'मोहन' लिखा है। पुस्तक में उसके रचना-काल अथवा लिपि-काल का उल्लेख नहीं है। पुस्तक की संस्कृत भाषा अत्यंत अशुद्ध और भ्रष्ट है और वह चंदसखी की रचना भी नहीं है। काव्य की दृष्टि से भी उसका कोई महत्व नहीं है, किंतु उससे चंदसखी के जीवन वृत्तांत पर प्रकाश पड़ता है, इसी लिये उसका कुछ महत्व समझा जा सकता है। जिस अशुद्ध भाषा में पुस्तक लिखी गई है, उसमें परिवर्तन किये बिना चंदसखी संबंधी उद्धरण यहाँ दिया जाता है—

"वैयास किः नरं कंचित् रक्षयन्ति न संशयः।
गुरुः श्री बालकृष्णश्चाव्य करोन्मतां कृपाम् ॥२७॥

राजोवाच—

वेत्रवत्यां च गंगायां श्री चतुर्भुजस्य वै।
सौन्दर्ये चालये पार्श्वे चन्द्रसखी प्रियं गता ॥५२॥

सौन्दर्ये चा गते तस्मिन्सप्ताष्टमे च वत्सरे।
नवत्यब्दे गते यस्मिच्छुचि मासस्मदा भवेत् ॥५३॥

कृष्ण पक्षे च सौन्दर्ये दृष्ट्वा चैकादशीं तदा।
प्रभुणा चन्द्रसख्या वै मुक्तित्यक्त्वा तनुं गता ॥५४॥

ओड़छाख्ये पुरे तस्मिन सोऽपि वास चकारह।
प्रभु लीला रस श्रेष्ठे हरे गनै च शोभितः ॥५५॥

उदोतसिंह नामासीत राजा तस्मिन्पुरे तथा।
यस्य प्रेम महानासीत सख्यां भक्तिं चकारह ॥५६॥

स्थानं रणजयं गज्जं नामानां पार्श्वे ततः।
अद्भुतादभुतः सोऽपि मेडक स्तत्र शोभते ॥५७॥

ताभ्यां तनु मनोभ्यां वै स राजोदोतसिंहः यः।
सेवाख्यं परिचर्यां तामकरोदपि सर्वतः ॥५८॥

मया सखी सु संप्रीत्यै गुह्यां तां ज्ञान चौगुणीम्।
तन्मते नेदमाख्यातां नतु मन्भति वैभवात् ॥८३॥

राधावल्लभ पादाब्ज भृंगस्तां सोऽपि चाकरोत्।
स्व बाल चापलय्यैः सः प्रीयतां पारनर्त्तितैः ॥८४॥

इति श्रीमज्ञान चौगुणी श्री चन्द्रसखी कृता
चतुराशीतम् श्लोकै र्देवेन निवद्यता ॥

'ज्ञान चौगुणी' के उपर्युक्त उद्धरण से चंदसखी संबंधी निम्न लिखित सूचनाएँ प्राप्त होने का अनुमान होता है—

"चंदसखी के गुरु श्री बालकृष्ण थे। बेतवा गंगा और चतुर्भुज भगवान् के पार्श्व में सात-आठ वर्ष निवास करने के अनंतर ६० वर्ष की आयु में आषाढ़ मास की कृष्णा एकादशी को चंदसखी शरीर छोड़ कर मुक्ति को प्राप्त हुए। उस समय ओड़छा पुरी में उदोतसिंह नामक राजा था। उसने तन-मन से चंदसखी की सेवा-परिचर्या की थी।"

ये सूचनाएँ निस्संदेह महत्वपूर्ण हैं। इनमें चंदसखी के गुरु का नाम बालकृष्ण और उनका ओड़छा तथा उसके राजा उदोतसिंह से घनिष्ट संबंध सिद्ध होता है। ऐसा ज्ञात होता है कि उदोतसिंह के राज्यकाल में ७-८ वर्ष निवास करने के उपरांत चंदसखी का ६० वर्ष की आयु में आषाढ़ कृ० ११ को ओड़छा में देहांत हुआ था।

'ज्ञान चौगुणी' की पुष्पिका में इसे चंदसखी की कृति बतलाया गया है, किंतु यह निश्चय पूर्वक उनकी रचना नहीं है। फिर भी वह उनकी शिष्य-परंपरा में से किसी कवि को रचना जान पड़ती है। ग्रंथ में इसके रचना-काल का उल्लेख नहीं है, किंतु अनुमान से यह एक सौ वर्ष के अंदर की रचना ज्ञात होती है। 'राधावल्लभ भक्तमाल' और 'रास सर्वस्व' से यह निस्संदेह पुरानी रचना है। इसका कथन सांप्रादायिक अनुश्रुति पर आधारित होने के कारण बहुत कुछ प्रामाणिक

हो सकता है। जहाँ तक चंदसखी का बुंदेलखंड में निवास करने और राजा उदोतसिंह से सन्मानित होने का प्रश्न है, उसकी पुष्टि चंदसखी के प्रशिष्य बल्लभसखी की रचना से भी होती है। बल्लभसखी का समय चंदसखी के कुछ ही बाद का है, अतः उनका कथन विश्वसनीय माना जावेगा। उन्होंने लिखा है—

उदवतसिंह राजा बड़े, जिन्ह प्रीत लगाई।
चंदसखी कों पूजि, अष्ट सिधि नौ निधि पाई।।
पद-रचना बहु विधि करी, फिरी प्रेम-दुहाई।
बुंदेलखंड पावन करयौ, हरि-भक्ति दृढ़ाई।।
देव अबोरा गाँव लै, हित प्रीत चढ़ाई।
रसिक-चरन माथे धरे, 'बल्लभ' गति पाई[1] ।।५८।।

चंदसखी का ओड़छा के राजा उदोतसिंह से अधिक संबंध सिद्ध होता है, अतः यहाँ पर उक्त राजा का विशेष परिचय दिया जाता है। बुंदेलखंड में भ्रात-स्नेही हरदौल का का नाम विख्यात है। उदोतसिंह उन्हीं हरदौल का प्रपौत्र था, किंतु वह ओड़छा की गद्दी पर गोद गया था। ओड़छा-नरेश जसवंतसिंह की मृत्यु सं० १७४७ में हो जाने के कारण उनका बालक पुत्र भगवंतसिंह ओड़छा की गद्दी पर बैठा। राज्य प्रबंध उसकी माता अमरकौर करती थी। भगवंतसिंह की भी शीघ्र मृत्यु हो गई, अतः रानी अमरकौर ने उदोतसिंह को गोद लेकर ओड़छा की गद्दी पर बैठाया।

---

१ नागा काशीदास जी वृंदाबन वालों की प्रति से।

उदोतसिंह का जन्म सं० १७३० के लगभग हुआ था। वह सं० १७५६ में ओड़छा की गद्दी पर बैठा[1]। उसके समय में मुगलों और मरहठों का युद्ध हो रहा था। कुछ बुंदेले सरदार भी मुगलों का विरोध कर रहे थे। उनमें सबसे प्रसिद्ध महाराज छत्रशाल थे। ओड़छा के राजाओं ने मुगलों से संधि कर उनकी आधीनता स्वीकार कर ली थी। उदोतसिंह के शासन-काल में उनका मुगलों से मेल-जोल रहा। उनके समय में मराठों की चढाई उत्तर की ओर होती रही, किंतु उन्होंने उनसे अपनी रियासत की हानि नहीं होने दी।

उदोतसिंह का शासन प्रबंध अच्छा नहीं था, किंतु वह स्वयं शूरवीर और साहसी था। उसके समय में मुगल सम्राट बहादुरशाह ओड़छा आया था। वहाँ जंगलों में उसने आखेट किया। कहते हैं, उस समय उदोतसिंह ने बिना शस्त्र के एक शेर को मार डाला था। इससे प्रसन्न होकर बहादुरशाह ने उसे एक तलवार भेंट की थी। उस तलवार पर बहादुरशाह का नाम अंकित है, और वह अभी तक ओड़छा के शस्त्रागार में सुरक्षित है।

वह काव्य-प्रेमी और कवियों का आश्रयदाता था। उसके दरबार में अनेक कवि रहा करते थे। उनमें हरिसेवक मिश्र, दिग्गज, धनराम और गोप के नाम विशेष प्रसिद्ध हैं। उसकी रानी भी कवयित्री थी। उसका पुत्र देवीसिंह काव्य-प्रेमी और

---

१ बुंदेल वैभव, द्वितीय भाग, पृ० ३७८

कवियों का आश्रयदाता था। उदोतसिंह का कविता-काल सं० १७५० से १७६० तक माना जाता है। उसका रचा हुआ कोई ग्रंथ प्राप्त नहीं हुआ, किंतु उसकी स्फुट रचनाएँ मिलती हैं। उसके रचे हुए दो कवित्त 'बुंदेल वैभव' में से यहाँ उद्धृत किये जाते हैं—

जोर–जोर–जोर दृग, मोर–मोर–मोर मुख,
चोर–चोर–चोर चित, चखन चितै गई।
झुक–झुक झाँखन झरोखा झाँक–झाँक जात,
ताक–ताक तीछन सु तीर तन दै गई।।
'नृपति उदोत' मुख–चँद सौ उदोत होत,
मृदु मुसक्यान मैं चकोर चित्त कै गई।
लुक–लुक लोचन संकोचन सौं हेर-हेर,
लग्गी सी लगाय कैं लपेट मन लै गई।।१।।

सरद–सरोज सी सुखात दिन द्वैक ही तैं,
हेर–हेर हिय मैं हिमंत सरसावै री।
'नृपति उदोत' बात सिसिर सुहात नाँहि,
सुमति बसंत सुखकंत बिसरावैं री।।
ग्रीषम विषम ताप, तन कौं तपाय देत,
बोलत न बैन, मन मैन मुरझावै री।
पावस पयान पिय सुनिकै सुजान आज,
अंबुज अनूप दृग बुंद बरसावै री।।२।।

इन्हीं उदोतसिंह के आश्रय में रह कर चंदसखी ने अपनी वृद्धावस्था में ओड़छा में निवास किया था। उनका देहावसान भी संभवत: ओड़छा में ही हुआ था। चंदसखी को अपने यहाँ

आदर-पूर्वक रखने से उदोतसिंह का काव्य-प्रेमी होने के साथ ही साथ भक्त-हृदय होना भी सिद्ध होता है। उदोतसिंह की मृत्यु सं १७९३ में महोबा में हुई थी[1]। इससे पहले चंदसखी का देहावसान हो गया होगा।

'ज्ञान चौगुणी' के वहि:साक्ष्य से चंदसखी का उदोतसिंह के शासन-काल में ७–८ वर्ष तक रहने के उपरांत ९० वर्ष की आयु में देहावसान होना ज्ञात होता है। उदोतसिंह का राज्य-काल सं० १७५६ से १७९३ तक है। यदि चंदसखी का देहावसान सं० १७९० के लगभग माना जावे, तो उनके ओड़छा-निवास का समय सं० १७८२ से १७९० तक और उनका जन्म सं० १७०० के लगभग मानना होगा।

(ई) 'प्रबंध' तथा 'रसिक अनन्य परिचावली'

राधावल्लभ संप्रदाय में चाचा हित वृंदाबनदास बड़े समर्थ साहित्यकार हुए हैं। उन्होंने जहाँ भक्ति, शृंगार और लीला विषयक विशाल वाणी-साहित्य की रचना की है, वहाँ उन्होंने अपने समकालीन और पूर्ववर्ती इतिहास पर प्रकाश डालने वाली कई कृतियों का भी निर्माण किया है। उनकी रचनाओं में बसंत समाज विषयक कई लंबे पद हैं, जिनको 'प्रबंध' कहा जाता है। इन प्रबंधों में बसंत खेल के ब्याज से राधावल्लभ संप्रदाय के अनेक भक्तों का नामोल्लेख हुआ है। इससे उनके समय और वंश के जानने में बड़ी सुविधा होती है। इस प्रकार के 'प्रबंध' चार हैं, जिनमें श्री हित हरिवंश जी, उनके

---

१ बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, पृ० १५४–१५५

पुत्र, पौत्र और वंशजों के शिष्यों का नामोल्लेख है। इनके अतिरिक्त चाचा वृंदाबनदास जी ने 'रसिक अनन्य परिचावली' में नाभाजी कृत 'भक्तमाल' की पद्धति से राधावल्लभ संप्रदाय के अनेक भक्तों का परिचय दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में 'बालकृष्ण' नामक दो भक्तों का उल्लेख किया है। एक का नाम 'बालकृष्ण तुलाराम' है और दूसरे का 'बालकृष्ण स्वामी' है। वे दोनों ही राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी और अपने समय के विख्यात आचार्य गोस्वामी हरिलाल जी के शिष्य थे। इस प्रकार वे दोनों प्रायः समकालीन भी थे। बालकृष्ण तुलाराम शमशेर नगर निवासी, भजनानंदी और रास-प्रेमी भक्त-जन थे। बालकृष्ण स्वामी रास-मंडल वृंदाबन निवासी, भावुक रसिक भक्त और प्रिया-प्रियतम के अगाध रूप-रस के अनन्य उपासक थे। वे रास-मंडली के साथ भ्रमण भी किया करते थे।

उनसे संबंधित उल्लेख इस प्रकार हैं—

बालकृष्ण तुलाराम

श्री हरिलाल कृपाल गुरुन कौ पाछौ लीयौ।
बसत नगर समसेर, भजन-मारग चित दीयौ॥
आदि-अंत निरवही, जुगल पद-रेनु उपासन।
श्री वृंदाबन नित केलि, महासुख भरे हुलासन॥
श्री हरिवंश उदार जस, गावत रसना रस खगी।
श्री बालकृष्ण तुलाराम की, नित रास-रंग में मति पगी॥

—रसिक अनन्य परिचावली, १९८

मंडल बैठे जाय, भावना-उकति उपावैं।
गूढ़ रहस की बात काढ़ि, रस भीजि-भिजावैं॥
दंपति-रूप अगाध, परे ता सुख-रस गहरैं।
बदन मौन गहि रहै, हियनि उठै भावन-लहरैं॥
सने हित-प्रसाद सुख-स्वाद यों, ज्यों रचित मंजरी नूत पिक।
यह भक्ति रसीली चित चुभी, बालकृष्ण स्वामी रसिक॥

—रसिक अनन्य परिचावली, १८९

धरचौ कर गुरु श्री हरिलाल माथ। भये बालकृष्ण स्वामी सनाथ॥
फिरैं रास-मंडली लिएँ साथ। फागुन सुखेल की सौंज हाथ॥

—चतुर्थ प्रबंध, ५९

चाचा वृंदाबनदास जी ने चंदसखी का परिचय इस प्रकार दिया है :—

महत सभा आभरन, अनंत संत रहै लारें।
अति कमनीय किसोर, चरित पद रचि विस्तारें॥
जिते भूप हरिभक्त रहें आज्ञा अनुसारी।
श्री हरिलाल प्रसाद, भजन-प्रभुता भई भारी॥
श्री हरिवंस प्रसंस चित, बालकृष्ण हित छाप तें।
श्री चंदसखी जग जगमगे, निज राधा इष्ट प्रताप तें॥

—रसिक अनन्य परिचावली, १९६

बालकृष्ण जी तथा चंदसखी के संबंध में उपर्युक्त उल्लेख सर्वथा प्रामाणिक हैं। चंदसखी की मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही चाचा वृंदाबनदास जी का जन्म हुआ था। चाचा जी भी उसी राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे, जिसके बालकृष्ण जी तथा चंदसखी थे। चाचा जी के समय में वृंदाबन में

चंदसखी के शिष्य-प्रशिष्य निवास करते थे, जिनसे उनका नित्य संपर्क रहता था। ऐसी स्थिति में चाचा जी को बाल-कृष्ण जी तथा चंदसखी के संबंध में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त थी, अतः उनके तद्विषयक उल्लेखों को अप्रामाणिक मानने का कोई कारण नहीं है। उपर्युक्त उल्लेखों को 'राधावल्लभ-भक्तमाल' और 'रास सर्वस्व' में किस प्रकार बिगाड़ा गया है, यह बात दोनों के पाठों का मिलान करने से स्वतः ज्ञात हो जाती है।

'राधावल्लभ-भक्तमाल' में बालकृष्ण स्वामी को गोस्वामी बालकृष्णलाल जी लिखा गया है, जो चाचा वृंदाबनदास जी के मतानुकूल नहीं है। उन्होंने बालकृष्ण स्वामी और बाल-कृष्ण तुलाराम के परिचय दिये हैं। उनमें से कोई भी हित-कुलोत्पन्न गोस्वामी नहीं थे। 'रास सर्वस्व' में बालकृष्ण स्वामी का उल्लेख नहीं है। उसमें बालकृष्ण तुलाराम का परिचय दिया गया है, जिसे लेखक ने मनमाने ढंग से बिगाड़ा है। बालकृष्ण तुलाराम का रास से अधिकाधिक संबंध सिद्ध करने के लिए चाचाजी कृत छप्पय की तीसरी पंक्ति में आये हुए 'जुगल पद रेनु उपासन' का अशुद्ध रूप 'रास इस्थाप उपासन' किया गया है! चंदसखी संबंधी छप्पय भी 'राधा-वल्लभ भक्तमाल' और 'रास सर्वस्व' दोनों में बिगाड़ा गया है। 'राधावल्लभ भक्तमाल' का पाठ तो 'राम सर्वस्व' के पाठ से भी अधिक भ्रष्ट है! चाचाजी कृत छप्पय की चौथी पंक्ति में जहाँ 'श्री हरिलाल' का उल्लेख है, वहाँ 'भक्तमाल'-कार ने

'श्री बालकृष्ण' कर दिया है। इसी प्रकार चाचाजी के छुप्पय की पाँचवीं पंक्ति में आये हुए 'श्री हरिवंस प्रसंस चित' को 'रास अनुकरण सुदृढ़ मति' कर दिया गया है ! किसी कवि के उद्धरण को उसका नामोल्लेख किये बिना देना और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसे मनमाने ढंग से बिगाड़ देना कितना अक्षम्य अपराध है, इसे कहने की आवश्यकता नहीं है।

चाचा वृंदाबनदास ने बालकृष्ण तुलाराम और बालकृष्ण स्वामी के जो परिचय दिये हैं, उनमें इतनी समानता है कि दोनों के पृथक् व्यक्तित्व को भली भाँति जानना कठिन है। उन दोनों में चंदसखी के आदरणीय कौन थे, यह भी उक्त उल्लेखों से स्पष्ट नहीं होता है। फिर भी बालकृष्ण स्वामी को चंदसखी से संबंधित मानना उचित होगा। चंदसखी संबंधी परिचय से ज्ञात होता है कि वे अनेक संतों से सदैव घिरे रहते थे और बहुत से राजागण उनकी आज्ञा में रहते थे। इससे चंदसखी की प्रतिष्ठा और प्रभुता का पता चलता है। 'ज्ञान चौगुणी' में राजा उदोतसिंह द्वारा चंदसखी को सन्मानित करने का जो कथन हुआ है, वह चाचा जी के उल्लेख से पुष्ट होता है।

इस प्रकार अंत:साक्ष्य और वहि:साक्ष्य की सामग्री के आधार पर चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की समीक्षा करना उचित होगा।

३. जीवन-वृत्तांत की समीक्षा

१. अस्तित्व-काल—

चंदसखी के अस्तित्व-काले के संबंध में विद्वानों के विभिन्न मत रहे हैं। श्री शिवसिंह सेंगर ने उनकी विद्यमानता सं० १६३८ में बतलाई है[१]। इसी का समर्थन मिश्रबंधुओं ने भी किया है[२]। उन्होंने एक दूसरी चंदसखी का उल्लेख करते हुए उसका रचना-काल सं० १९०० से पूर्व बतलाया है, किंतु उन्होंने यह संदेह प्रकट किया है कि संभवतः वह सं० १६३८ वाली पहली संदसखी ही हो[३]। श्री मोतीलाल जी मेंनरिया ने उनका समय सं० १८८० लिखा है[४]। चंदसखी पर लिखने वाले कई लेखकों ने उनके काल के संबंध में कोई निर्णयात्मक कथन ही नहीं किया है[५]।

---

१. शिवसिंह सरोज, पृ० ३८६

२. मिश्रबंधु विनोद, भाग १, पृ० ३७०

३. मिश्रबंधु विनोद, भाग २, पृ० ११४२

४. राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० २१२

५ (क) चंद्रसखी का समय भी अनुमान से १६३८ माना जा रहा है, जो कि लगभग ठीक ही होगा।···चंदसखी निकुंज-लीला में कब पधारे, सामग्री के नितांत अभाव के कारण कहा नहीं जा सकता।

—श्री महावीरसिंह गहलौत . चंदसखी पदावली पृ० ४-५)

(ख) – चंदसखी के समय, रचना-काल, मृत्यु आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का कुछ भी साधन नहीं है।

—सुश्री सावित्री सिन्हा (मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियाँ)

राजस्थान के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचंद जी नाहटा ने चंदसखी के काल पर विचार करने के लिये एक ठोस ऐतिहासिक आधार उपस्थित किया है। उन्होंने चंदसखी के एक प्रसिद्ध लोकगीत के संदर्भ से उनके काल का निर्णय करने की चेष्टा की है। नाहटा जी ने लिखा है कि जैन कवि न्यायसागर (सं० १७२८–१७९७) ने 'चतुर्विंशति जिन स्तवन' के अंतर्गत 'वासुपूज्य स्तवन' बनाया है, जो 'चौबीस-बीसी संग्रह' में प्रकाशित हुआ है। उस स्तवन के संबंध में कवि का निर्देश है कि उसे 'ब्रजमंडल देश दिखावो रसिया' की चाल में गाना चाहिए। कविवर न्यायसागर की रचनाएँ सं० १७६६ से सं० १७८४ तक की प्राप्त होती हैं। 'चौबीसी स्तवन' भी उसी काल में रचे गये थे। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि कविवर न्यायसागर ने अपने स्तवन-गायन के लिये जिस पद की चाल को अपनाया है, वह चंदसखी का प्रसिद्ध भजन है। नाहटा जी का मत है–"चंदसखी के इस भजन का प्रचार सं० १७६६ के आस-पास राजस्थान में अच्छा रहा होगा। उसकी प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता के कारण ही कवि ने वासुपूज्य स्तवन में इसकी चाल को अपनाया है। इससे हम चंदसखी का समय इससे पूर्व ही निर्धारित कर सकते हैं[1]।" नाहटा जी ने चंदसखी का समय सं० १६७५

---

१. लोक-कवि चंद्रसखी के समय संबंधी विचारणा.

(विक्रम, मार्गशिर २००६)

से १७२५ तक अर्थात् सं० १७०० के लगभग अनुमानित किया है। 'ज्ञान चौगुणी' के उल्लेख से चंदसखी का आनुमानिक समय सं० १७०० से १७६० तक लिखा जा चुका है। इससे नाहटा जी के मत का समर्थन नहीं होता है। अब हमको 'राधा-वल्लभ संप्रदाय' के इतिहास की संगति से चंदसखी के काल का निर्णय करना चाहिये।

चाचा वृंदाबनदास जी ने बालकृष्ण स्वामी को गोस्वामी हरिलाल जी का शिष्य बतलाया है। चंदसखी की रचनाओं में 'बालकृष्ण' के अतिरिक्त 'हरिलाल' और 'उदयलाल' के भी नाम मिलते हैं, यह पहले ही लिखा जा चुका है। अब हरिलाल जी और उदयलाल जी के समय से चंदसखी के समय का मिलान करना उचित होगा।

श्री हित हरिवंश जी के वंशजों में हरिलाल जी और उदयलाल जी के नाम मिलते हैं, किंतु बालकृष्ण जी का नाम नहीं मिलता है, अतः हरिलाल जी और उदयलाल जी की तरह बालकृष्ण जी को हित-कुल का गोस्वामी कहना उचित नहीं है, जैसा 'राधावल्लभ भक्तमाल' मे लिखा गया है। उस समय रास मंडल अखाड़ा पर निवास करने वाले नाद-कुल के विरक्त बालकृष्ण स्वामी थे, जो हरिलाल जी और उदय-लाल जी के समकालीन भी थे। श्री हित हरिवंश जी की वंश-परंपरा में गो० हरिलाल जी और गो० उदयलाल जी की स्थिति और उनका समय इस प्रकार है—

श्री हित हरिवंश जी

|

श्री वनचंद्र जी

सुंदरवरजी (जन्म सं० १६०९)	ब्रजभूषन जी (जन्म सं० १६१७)
दामोदरचंदजी (,, ,, १६३४)	हरिप्रसाद जी (,, ,, १६४०) के लगभग
रासदास जी (,, ,, १६६५)	किशोरलाल जी (,, ,, १६७५)
कुंजलाल जी (,, ,, १६९६)	उदयलाल जी (,, ,, १७००) के लगभग
हरिलाल जी (,, ,, १७१७) के लगभग	
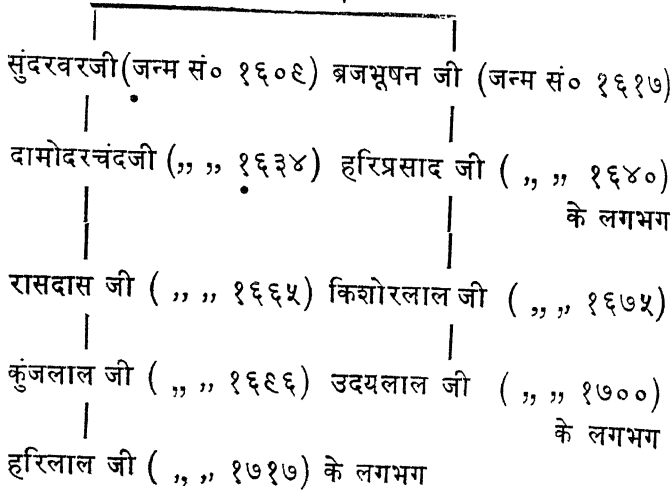
उपर्युक्त वंशवृक्ष से ज्ञात होता है कि गो० उदयलाल जी का जन्म सं० १७०० के लगभग और गो० हरिलाल जी का कुछ वर्ष बाद सं० १७१७ के लगभग हुआ था। स्वामी बालकृष्ण जी गोस्वामी हरिलाल जी के और चंदसखी स्वामी बालकृष्ण जी के शिष्य थे, अतः वे सब समकालीन थे। यह आवश्यक नहीं है कि गुरु शिष्य से आयु में बड़ा ही हो, अतः 'ज्ञान चौगुणी' के उल्लेख से जो चंदसखी का जन्म सं० १७०० के लगभग आता है, उसे अप्रामाणिक नहीं कहा जा

सकता है। 'रास सर्वस्व' के उल्लेख से ज्ञात होता है कि चंदसखी अपने आरंभिक जीवन में ओड़छा राज्यांतर्गत मौठ के थानेदार थे। इससे समझा जा सकता है कि वे प्रौढ़ावस्था में वृंदाबन में जाकर बालकृष्ण जी के शिष्य हुए होंगे। फिर भी चंदसखी के जन्म संवत् का यथार्थ निर्णय अभी प्रमाण-सापेक्ष है। वैसे उनका अस्तित्व-काल सं० १७०७ से १७६० तक माना जा सकता है।

२. संबंधित स्थान—

चंदसखी के जन्म, निवास और देहावसान से संबंधित स्थान कौन-कौन से हैं, इनके विषय में अभी प्रामाणिक रूप से कहना संभव नहीं है। श्री शिवसिंह सेंगर ने उनको ब्रज-वासी लिखा है[१]। श्री मिश्र बंधुओं ने दो चंदसखी मान कर एक का निवास-स्थान ब्रज और दूसरे का जयपुर लिखा है[२]। श्री मोतीलाल मेनारिया ने उनका निवास स्थान जयपुर होने में संदेह प्रकट किया है[३], किंतु उन्होंने राजस्थान की प्रसिद्ध कवयित्रियों में उनकी गणना करते हुए उन्हें राजस्थानी अवश्य समझा है[४]। श्री अगरचंद नाहटा ने भी उन्हें राज-स्थानी माना है[५]। इस प्रकार विभिन्न विद्वानों ने उनका

---

१ शिवसिंह सरोज, पृ० ३८६

२ मिश्रबंधु विनोद, पृ० ३७० और ११४२

३ राजस्थान का पिंगल साहित्य, पृ० १७६

४ राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ० २१२

५ विक्रम, मार्गशीर्ष २००६

निवास ब्रज अथवा राजस्थान में होना बतलाया है, किंतु वहाँ के किसी विशिष्ट स्थान का उन्होंने उल्लेख नहीं किया है। उनका जन्म और देहावसान कहाँ हुआ, इसके विषय में भी कुछ नहीं बतलाया गया है। जिन राज्यों में उनकी रचनाओं का अधिक प्रचार हुआ, वहाँ के रहने वाले उनको वहीं का समझते रहे हैं। इसीलिए उनको ब्रजबासी या राजस्थानी ही नहीं, वरन् बुंदेलखंडी या मालवी तक माना जाता है। वास्तव में उनके जन्म, निवास और देहावसान से संबंधित स्थानों के विषय में निश्चित रूप से अभी कुछ नहीं कहा गया है।

'राधावल्लभ भक्तमाल', 'रास सर्वस्व' और 'ज्ञान चौगुणी' नामक तीनों रचनाओं के वहि:साक्ष्य से उनका ओड़छा से घनिष्ट संबंध ज्ञात होता है। 'रास सर्वस्व' से ऐसा संकेत मिलता है कि उनका जन्म भी ओड़छा में ही हुआ था। 'ज्ञान चौगुणी' के उल्लेख से समझा जा सकता है कि वे अंतिम समय में ओड़छा में रहे थे और वहाँ पर ही उनका देहावसान हुआ था। उनका एक मंदिर भी वहाँ पर है।

राधावल्लभ संप्रदाय की दीक्षा लेने के अनंतर वे अधिकतर वृंदाबन में रहे थे। वहाँ के केशीघाट पर उनकी विशाल कुंज बनी हुई है, जो आजकल ध्वंशावस्था में है। ऐसा ज्ञात होता है कि उनके बाद भी उनके शिष्य-प्रशिष्यों और थोक वालों का प्रधान केन्द्र यह कुंज थी। चंदसखी का अधिकांश जीवन देशाटन करने में व्यतीत हुआ था, किंतु जब वे वृंदाबन में रहते थे, तब उनका निवास उक्त कुंज में ही होता था।

३. स्त्री या पुरुष—

वे स्त्री थीं या पुरुष थे, इसके विषय में भी विद्वानों में मतभेद है । चंदसखी की रचनाओं का प्रचार प्रायः मीराबाई की रचनाओं के साथ ही साथ मिलता है । उनकी रचनाओं में में भी उनसे सबंधित क्रियादि का प्रयोग प्रायः स्त्रीलिंग में हुआ है । इस लिए अधिकांश लेखकों ने उनको मीराबाई की तरह महिला भक्त समझ लिया है । कुछ विद्वानों ने उनके पुरुष होने की संभावना भी प्रकट की है । श्री मोतीलाल जी मेनारिया और सुश्री सावित्री सिन्हा ने उनका उल्लेख कवयित्रियों ने में ही किया है[1] । श्री जगदीशचंद्र माथुर ने उनको राजस्थान की कोकिला लिखा है[2] । सुश्री पद्मावती 'शबनम' ने भी उनको स्त्री माना है[3] । सर्वश्री महावीरसिंह गहलौत, मनोहर शर्मा और अगरचंद जी नाहटा आदि राजस्थानी विद्वानों ने उनके पुरुष होने की किंवदंती का उल्लेख किया है[4] । उन्होंने यह संभावना प्रकट की है कि वे कदाचित भक्त कवि थे, जो अपनी उपासना–पद्धति के कारण 'चंदसखी'

---

१ 'राजस्थानी भाषा और साहित्य', तथा 'मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियाँ ।'

२ साप्ताहिक हिंदुस्तान, १२ जुलाई १९५६, पृ० २३

३ चंदसखी और उनका काव्य (वस्तु कथा, पृ० ३४)

४ चंदसखी–पदावली (जीवनी और काव्य, पृ० ४), राजस्थान-भारती (अप्रैल १९५०) और विक्रम (मार्गशीर्ष २००९)

उपनाम से रचना करते थे। इन विद्वानों ने इसके समर्थन में कोई विश्वसनीय प्रमाण उपस्थित नहीं किया है।

राधावल्लभ संप्रदाय के साहित्य से चंदसखी का पुरुष होना सिद्ध होता है। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है। चंदसखी की रचनाओं का एक हस्तलिखित संग्रह ब्रज साहित्य मंडल के संग्रहालय में है। उसका आरंभ इस प्रकार हुआ है—

'श्री राधावल्लभो जयति।
अथ महंत श्री चंदसखी की वानी पद लिख्यते।'

इससे भी चंदसखी का पुरुष होना सिद्ध होता है। चंदसखी के शिष्य रसिकदास उपनाम रसिकसखी थे। उनके प्रशिष्य बल्लभदास उपनाम बल्लभसखी थे। उन्होंने अपनी वाणी में अपने परम गुरु की वंदना करते हुए लिखा है—

श्री चंद्रसखी कवि परम गुरु, रसिकदास गुरु देव।
'बल्लभ' नित सुमिरन करें, यों पाइव हरि कौ भेव॥

इस उल्लेख से भी चंदसखी का पुरुष होना ही प्रकट होता है। उनके स्त्री होने की कल्पना करना वैष्णव संप्रदायों की सखी-भावना के प्रति अज्ञान प्रकट करना है। चंदसखी निश्चित रूप से पुरुष थे।

४. नाम—

चंदसखी उनका उपनाम था, नाम नहीं। उनका मूल नाम क्या था, यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं हो सका है। ब्रज के मध्यकालीन भक्त-जन राधिका जी की सखी रूप में उनकी सेवा करने की भावना के कारण अपने को सखी कहलाना

पसंद करते थे। वे अपने मूल नाम को त्याग कर सखी वाची उपनाम रख लेते थे। यह भावना उन सभी संप्रदायों के भक्तों की थी, जिनमें श्री राधा जी की उपासना को विशेष महत्व दिया गया है।

इस प्रकार नाम-परिवर्तन के अनेक उदाहरण मिलते हैं। नवलसखी का मूल नाम नवलकिशोर; चतुरसखी का चतुर-लाल; दयासखी का दयाराम; सुखसखी का सहचरि सुख, बावरी सखी का तुलाराम, श्यामसखी का श्याम सहाय और रसिकसखी का रसिकदास था। वे सब अपने मूल नामों की अपेक्षा उपनामों से ही अधिक प्रसिद्ध हैं। चंदसखी की अनेक रचनाओं में 'चंद' की छाप भी मिलती है। इससे ऐसा अनुमान होता है कि उनका मूल नाम चंद्रलाल अथवा चंद्रकिशोर होगा। कुछ लोगों का मत है कि अलबर नरेश वख्तावरसिंह चंदसखी के उपनाम से रचना करते से, किंतु यह ठीक नहीं है।

५. प्रारंभिक जीवन—

उनके आरंभिक जीवन के संबंध में 'रास सर्वस्व' के अति-रिक्त किसी अन्य सूत्र से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती है। 'रास सर्वस्व' से ज्ञात होता है कि वे मौठ के थानेदार थे। पूर्व संस्कार वश आरंभ से ही उनमें भक्ति-भावना का अंकुर विद्यमान था, जो अवसर मिलने ही पल्लवित-पुष्पित होकर विशाल वृक्ष बन गया। मौठ का थाना ओड़छा राज्य में था। ओड़छा

से जो उनका घनिष्ट संबंध विविध सूत्रों से ज्ञात हुआ है, उसे देखते हुए 'रास सर्वस्व' के कथन को अप्रामाणित मानने का कोई कारण ज्ञात नहीं होता है।

भगवान् की प्रेरणा से जैसे ही उनके सुषुप्त संस्कार जाग्रत हुए, वे थानेदारी छोड़ कर वृंदाबन आ गये। वहाँ पर श्री बालकृष्ण स्वामी से राधावल्लभ संप्रदाय की दीक्षा लेकर वृंदाबन बास करने लगे।

६. संप्रदाय और गुरु—

चंदसखी की रचनाओं में सर्वश्री बालकृष्ण, हरिलाल और उदयलाल के अंत:साक्ष्य से तथा राधावल्लभ भक्तमाल, ज्ञान चौगुणी, 'प्रबंध' एवं रसिक अनन्य परिचावली के वहि:सक्ष्य से यह भली भाँति ज्ञात होता है कि वे राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे। 'रास सर्वस्व'-कार तथा आजकल के लेखकों की यह भ्रमात्मक धारणा है कि चंदसखी वल्लभ संप्रदाय के सेवक थे और उनके ठाकुर का नाम 'बालकृष्ण' था। हम गत पृष्ठों में बतला चुके हैं कि चंदसखी का बल्लभ संप्रदाय से कोई संबंध नहीं है और न उनके ठाकुर का नाम ही बालकृष्ण है। वे निश्चित रूप से राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे।

उनके दीक्षा गुरु बालकृष्ण स्वामी थे, जो अपने समय में वृंदाबन के विख्यात विरक्त एवं रसिक भक्त थे। उनके नाम का उल्लेख चंदसखी की अधिकांश रचनाओं में किया गया है। उनके दो-चार पदों में हरिलाल जी और उदयलाल जी

के नाम भी मिलते हैं। वे दोनों महानुभाव चंदसखी के समय में राधावल्लभ संप्रदाय के आदरणीय गोस्वामी थे। श्री हरिलाल जी तो बालकृष्ण स्वामी के गुरु थे। इस नाते से वे चंदसखी के परम गुरु हुए। उनके तथा उदयलाल जी के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए ही चंदसखी ने अपने दो-चार पदों में उनके नामों का उल्लेख कर दिया है, वरन् उनकी अधिकांश रचनाओं में उनके गुरु बालकृष्ण जी का ही नाम मिलता है।

६. प्रचार और भ्रमण—

चंदसखी के समय में राधावल्लभ संप्रदाय का खूब प्रचार हुआ था। इस संप्रदायके अनेक उत्साही भक्त-जन देश-भ्रमण कर अपने भक्ति-सिद्धांतों का प्रचार किया करते थे। ऐसे प्रचारकों में चंदसखी का नाम विशेष प्रसिद्ध हुआ। राधावल्लभ संप्रदाय की दीक्षा लेने के अनंतर वे साधु-संतों की जमात के साथ देशाटन करते हुए अपने संप्रदाय का प्रचार करने लगे।

जन-जाधारण में अपने भक्ति-सिद्धांतों के प्रचार के लिए उन्होंने जनप्रिय भजनों और लोक गीतों की रचना की थी। उनकी वे रचनाएँ इतनी प्रसिद्ध हुईं कि अन्य व्यक्तियों ने भी उनके नाम से वैसे ही भजन और लोक-गीत रच डाले।

उन्होंने राजस्थान, बुंदेलखंड और मालवा के विविध राज्यों में अधिक प्रचार किया था। यही कारण है कि वहाँ पर उनकी रचनाएँ विशेष रूप से मिलती हैं। चंदसखी का प्रचार इतना प्रभावशाली हुआ कि अनेक राज्यों में जनता के साथ ही साथ

वहाँ के राजा गण भी उनके भक्त बन गये थे। ऐसे राजाओं में ओड़छा नरेश उदोतसिंह का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

८. अंतिम जीवन और देहावास—

देशाटन के अतिरिक्त उनके अंतिम जीवन का अधिकांश भाग वृंदाबन में व्यतीत हुआ था। वृंदाबन के केशीघाट पर उन्होंने एक विशाल कुंज बनवाई थी, जो चंदसखी की कुंज कहलाती है। आजकल यह पूरी ध्वंसावस्था में है, किंतु इसके आकार-प्रकार से ज्ञात होता है कि किसी समय यह एक विशाल इमारत रही होगी।

जो भक्त गण भक्ति-भाव से प्रेरित हो वृंदाबन-बास करते थे, उनकी यह कामना होती थी कि उनका अंतिम जीवन वृंदाबन में व्यतीत हो और उनका देहावसान भी उसी पुण्य भूमि में हो। इसीलिए वे लोग वृंदाबन छोड़कर अन्यत्र जाना कम पसंद करते थे। चंदसखी के संबंध में यही समझा जा सकता है कि उनका अंतिम जीवन वृंदाबन में व्यतीत हुआ होगा; किंतु 'ज्ञान चौगुणी' का उल्लेख इसके विरुद्ध मिलता है। उससे ज्ञात होता है कि चंदसखी अपने अंतिम काल में ओड़छा में थे। वहाँ के राजा उदोतसिंह ने उनकी सेवा-सुश्रुषा का विशेष प्रबंध किया था। उनका देहावसान भी संभवतः ओड़छा में ही हुआ था।

पर प्राय: जाते होंगे; किंतु अपने अंतिम काल में अति वृद्धावस्था होते हुए भी वे वहाँ क्यों गये, इसके विषय में कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है। ब्रज के इतिहास से परिचय रखने वाले जानते हैं कि औरंगजेब द्वारा मथुरा-वृंदाबन के मंदिरों का ध्वंस होने के उपरांत आस्तिक हिंदुओं का वहाँ रहना कठिन हो गया था। वे अपने धार्मिक आचारों का निर्वाह सन्मान पूर्वक नहीं कर सकते थे। इसके लिए उनको पग-पग पर अपमान ही नहीं, जान-जोखम का भी खतरा उठाना पड़ता था। वहाँ के प्रसिद्ध मंदिरों की देव-मूर्तियाँ सुरक्षा के विचार से हिंदू राजाओं के राज्यों में स्थानांतरित कर दी गई थीं। उनके भक्त गण बहुत बड़ी संख्या में ब्रज-वृंदाबन छोड़ कर उनके साथ चले गये थे। चंदसखी भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति में वृंदाबन से विस्थापित होने के लिए विवश हुए होंगे। ओड़छा का राजा उदोतसिंह उनका भक्त और आज्ञाकारी था। उसका दिल्ली के मुगल शासकों से अच्छा संबंध भी था। वहाँ हिंदू भक्तों को सुरक्षा पूर्वक रहने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती थी। ऐसा ज्ञात होता है कि उदोतसिंह के अत्यंत आग्रह से चंदसखी अपने अंतिम काल में ओड़छा चले गये थे। वे सं० १७८२ के लगभग ओड़छा गये। वहाँ पर ७-८ वर्ष रहने के अनंतर सं० १७९० के लगभग आषाढ़ कृ० ११ को उनका देहांत हुआ था। उस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी।

चंदसखी की शिष्य-परंपरा का बहुत विस्तार हुआ। उनके शिष्य-प्रशिष्यों से कई शाखाएँ चलीं। उनके मुख्य शिष्य रसिकदास थे, जो उनके बाद गद्दी पर बैठे थे। उन्होंने रसिक सखी के नाम से रचनाएँ की हैं। उनके गुरुभाई का नाम खेमदास था। उनके शिष्यों की भी कई शाखाएँ हुईं। उनके शिष्यों में एक श्यामदास थे। अन्य शिष्यों के नाम बालकदास और लाड़लीदास थे। रसिकदास के एक शिष्य भगीरथदास थे। इन सबका उल्लेख चाचा वृंदाबनदास ने अपने 'प्रबंध' में किया है[1]।

चंदसखी के प्रधान शिष्य और उनके उत्तराधिकारी रसिकदास उपनाम रसिक सखी थे। उनकी रची हुई वाणी भी खोज में प्राप्त हुई है। उनकी वाणी की एक खंडित प्रति नागा काशीदास जी वृंदाबन वालों के पास है। उसमें से कुछ अंश यहाँ उद्धृत करते हैं—

श्री हरिवंश नाम सुखदाई। तिनकी महिमा करौं बड़ाई ॥

---

१ बहु चंदसखी साखा प्रकास। तिन आसन बैठे रसिकदास ॥
पुनि खेमदास गुरु-भ्रात जास। दंपति-सुख निरखैं फागुन मास ॥९३॥
भए खेमदास साखा अनेक। भावना सिद्ध स्यामदास एक ॥
बालक सुदास भजनी विवेक। लाड़लीदास रस भजन टेक ॥९४॥
पुनि रसिकदास के नाद वंस। भगीरथदास जग में प्रसंस ॥
निज धर्म-मर्म की समुझैं गंस। अस कृपा करी जै श्री हरिवंस ॥९५॥

—चतुर्थ प्रबंध

करम धरम एकौ नहिं करौं। श्री हरिवंश नाम अनुसरौं ॥
श्री हरिवंश हिए अनुराग। प्रीति निरंतर रस में पाग ॥
जो कोउ राधा–राधा बोलै। तिनके संग सदा हरि डोलै ॥
राधाबल्लभ कहाँ विराजै। 'रसिक' जनन के हिए में गाजै ॥

× × ×

हित सखियन संग प्रेम पियासी। चंदसखी तहाँ करत खवासी ॥
प्रेम सहित बीरी जो देहीं। लाड़िली–लाल प्रीति सौं लेहीं ॥
कबहूँ गावै बीन बजावहिं। कबहूँ लालन–लाल रिझावहिं ॥
ईहिं परिकरमा जोई सुनैं। जो राधावर हिय में गुनैं ॥
जुगल किसोर कों नावै माथा। 'रसिकसखी' बिहरहिं पिय साथा ॥

रसिकसखी के एक शिष्य बल्लभसखी थे। उनकी कुंज वृंदाबन के कोरिया घाट पर है। सागर जिले में सालौन गाँव उनको जागीर में मिला था। वे अधिकतर सालौन मढ़ैया में निवास किया करते थे। उनके शिष्य पूरनदास थे। वे चंदसखी की कुंज, केशोघाट वृंदाबन, में निवास करते थे। चंदसखी के अखाड़े का दायित्व पूरनदास पर था। वे जमात सहित देशाटन भी किया करते थे।

बल्लभसखी की वाणी की भी एक जीर्ण और खंडित प्रति नागा काशीदास जी वृंदाबन वालों के पास है। इसमें ५८ पद हैं। आरंभिक पद इस प्रकार है—

(राग भैरव)

राधा वर प्यारे कौ सुमिरन कीजै।
नैनन भरि आनंद सों, प्रेम–सुधा पीजै ॥

सुर-नर-मुनि ध्यान धरैं, सेस सहस गावै।
कोटिक जुग बीत गये, पार नहीं पावै॥

एक बार गावै, सो प्रेम भक्ति पावै।
नौधा कों छोड़िकैं, दसधा कों धावै॥

जागी हित दंपति अरु 'चंद' संग आये।
'रसिकसखी' दरस दिये, "बल्लभ" सुख पाये॥

चंदसखी के एक शिष्य लालदास भी कहे जाते हैं। उनका रचा हुआ बसंत का एक प्रसिद्ध पद ब्रज के कीर्तन संग्रहों में उपलब्ध है। पद इस प्रकार है—

(राग बसंत)

श्री राधे तेरे ललित अंग।
तिहिं देखि स्याम मन रँग्यौ रंग॥

सुंदर बदन सरोज बिराजत, राजत अलकें संग।
सीसफूल ताटंक स्रवन सुक नासा बेसरि मंग॥

बैना बन्यौ जराऊ जगमग जटत सु चुनी सुरंग।
मंद हँसन, सुख-सदन नैन कल कज्जल सोभित रंग॥

केसरि खौरि कपोल कलित कल भृकुटी धनुष निसंग।
छूटत कटाक्ष सु बान बिलोकति बेधत मदन कुरंग॥

भुजा लता कोमल कर पल्लव, मुदरी मन नित रंग।
कुच कल फल अदभुत मनों सोभित, सुंदर सरस उतंग॥

कटि केहरि कदली जंघा, गति मथत मदन जु मतंग।
चारु चरन जावक रँग रंजित, भूषन सजत अभंग॥

हरित कीमखाप कौ लहँगा, सारी सुही सुरंग।
कंचुकि केसरि के रंग रंगित, निरखत लजित अनंग॥
खेलि बसंत उड़ाय गुलालहिं लसे सेज चतुरंग।
श्री चंदसखी हित बालकृष्ण लखि 'लालदास' दृग पंग॥

इस प्रकार चंदसखी के शिष्य-प्रशिष्यों का एक पूरा थोक बन गया था। इस थोक के अनेक संत विभिन्न स्थानों में बस कर राधावल्लभीय संप्रदाय का प्रचार करते रहे हैं। 'नाद' परिकर के राधावल्लभीय विरक्त भक्तों में चंदसखी के थोक का महत्वपूर्ण स्थान है।

अठारहवीं शताब्दी में वैष्णव संप्रदायों को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा था। यवन आक्रमणकारियों और विधर्मी शासकों से तो उनको अपार कष्ट था ही, अवैष्णव संप्रदायों की असहिष्णुता भी उनको त्रस्त करने लगी थी। उस समय उनके जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित हो गया था। इससे त्राण पाने के लिये समस्त वैष्णव संप्रदायों ने पारस्परिक मतभेद और सांप्रदायिक संकीर्णता के विचारों को भुला कर सामूहिक संगठन किया। उस संगठन के फलस्वरूप निर्मोही, निर्वाणी और दिगंबर नामक ३ अनियाँ बनाई गईं, जिनके अंतर्गत १८ अखाड़ों का निर्माण हुआ। उन अनी-अखाड़ों के प्रबंध में समस्त वैष्णव संप्रदायों ने योग दिया था, जिसके कारण उनके अस्तित्व की ही रक्षा नहीं हुई, वरन् उनकी सामूहिक उन्नति भी हुई। इन अनी-अखाड़ों ने वैष्णवों के सैनिक और धार्मिक केन्द्रों के रूप में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

अनी-अखाड़ों की सुव्यवस्था के लिये अनेक नियम बनाये गये थे, जिनका बड़ी कठोरता से पालन होता था। अखाड़ों के पंच किसी योग्य व्यक्ति को सदर नागा निर्वाचित करते थे, जो स्वतंत्र जमात लेकर देशाटन करता था। देशाटन की अवधि १२ वर्ष की होती थी। उस काल में जिन स्थानों में जमात जाती थी, वहाँ उसका खूब स्वागत-सत्कार होता था। इस प्रकार संप्रदायों की उन्नति और उनके प्रभाव क्षेत्र का विस्तार होता रहता था।

निर्मोही अनी के अंतर्गत राधावल्लभ संप्रदाय का स्वतंत्र निर्मोही अखाड़ा है, जिसकी उन्नति का श्रेय चंदसखी के थोक को भी है। इस अखाड़े की एक बैठक वृंदाबन में और दूसरी नीम का थाना, जयपुर राज्य में है।

४. जीवनी की रूप-रेखा

चंदसखी के जीवन-वृत्तांत संबंधी उपलब्ध सामग्री की समीक्षा करने के उपरांत उनकी जीवनी की जो रूप-रेखा बनती है, वह अभी सर्वथा प्रामाणिक नहीं कही जा सकती है। आगामी खोज में कुछ ऐसे तथ्य मिल सकते हैं, जिनसे इसके संशोधन की आवश्यकता हो सकती है। अभी तक तो चंदसखी की जीवनी का कोई धुंधला सा चित्र भी उपलब्ध नहीं था। अब जो सामग्री प्रकाश में आई है, उसके कारण उनका कुछ स्पष्ट सा रूप सामने आया है। आशा है, भविष्य में यह और भी अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

उनका जन्म सं० १७०० के लगभग संभवत: ओड़छा में हुआ था। वे अपने आरंभिक जीवन में ओड़छा के निकटवर्ती मौठ थाना के थानेदार थे। पूर्व संस्कारों के कारण उनके हृदय में भगवद्भक्ति का अंकुर विद्यमान था, जो समय आने पर पल्लवित और पुष्पित होने लगा। फलत: वे अपने जन्म-स्थान, कुटुंब-परिवार और पद-गौरव को छोड़कर विरक्त भाव से वृंदाबन चले गये। वहाँ पर राधावल्लभ संप्रदाय के एक विख्यात विरक्त भक्त बालकृष्ण स्वामी से दीक्षा लेकर वृंदाबन बास करने लगे। वे भक्ति संबंधी पदों की रचना में भी प्रवृत्त हुए। उनमें उन्होंने अपने नाम की छाप के साथ अपने गुरु बालकृष्ण का नाम भी दिया। राधावल्लभीय गोस्वामियों में उनकी श्रद्धा उदयलाल जी और अपने परम गुरु श्री हरि-लाल के प्रति अधिक थी, अत: कतिपय पदों में उन्होंने उन दोनों का भी नाम दिया है।

उन दिनों राधावल्लभ संप्रदाय के प्रचारार्थ अनेक उत्साही भक्त जन देशाटन किया करते थे। बालकृष्ण स्वामी ने चंद-सखी को भी धर्म-प्रचार करने का आदेश दिया। निदान वे राधावल्लभ संप्रदाय की भक्त-मंडली के साथ देशाटन करने को चल दिये। उन्होंने राजस्थान, बुंदेलखंड, मालवा आदि के अनेक राज्यों में भ्रमण कर भक्ति-भावना का व्यापक प्रचार किया। इन यात्रा में उन्होंने भक्तिपूर्ण पदों के अतिरिक्त अनेक भजनों और लोक-गीतों की भी रचना की। उनके साथ की भक्त-मंडली इन भजनों और लोक-गीतों के गायन द्वारा जनता

में भक्ति का प्रचार करती थी। उनके रचे हुए भजन और गीत इतने लोकप्रिय हुए कि वे जन-साधारण में बड़ी रुचि पूर्वक गाये जाने लगे। अनेक व्यक्तियों ने उनके अनुकरण पर चंदसखी की छाप से अनेक भजन और लोक-गीत रच डाले। वे भी जनता में चंदसखी की मूल रचनाओं के साथ ही साथ प्रचलित हो गये। उन्होंने कदाचित राजस्थान में विशेष रूप से प्रचार किया था, क्यों कि उनके नाम की लोक-रचनाएँ वहाँ पर अधिक संख्या में प्राप्त होती हैं। उनकी भक्ति-भावना और सरस रचनाओं की ओर जन-साधारण के साथ ही साथ अनेक राजा-गण भी आकर्षित हुए थे। ओड़छा-नरेश उदोतसिंह उनका विशेष भक्त और आज्ञाकारी था।

उन्होंने वृंदाबन के केशीघाट पर एक विशाल कुंज बनवाई थी, जो उनके नाम से 'चंदसखी की कुंज' कहलाती है। उनका एक मंदिर ओड़छा में भी है। राधावल्लभ संप्रदाय में दीक्षित होने के उपरांत उनका अधिकांश जीवन देशाटन और धर्म-प्रचार में व्यतीत हुआ था। इससे अवकाश मिलने पर वे अधिकतर वृंदाबन में और कभी-कभी ओड़छा में निवास करते थे।

उनके अनेक शिष्य थे। उनमें रसिकदास उपनाम रसिकसखी प्रमुख थे, जो बाद में उनकी गद्दी पर आसीन हुए। उनके शिष्यों के भी अनेक शिष्य थे। उनमें रसिकसखी के शिष्य बल्लभसखी विशेष उल्लेखनीय हैं। इन शिष्य-प्रशिष्यों

के कारण चंदसखी का पूरा थोक ही बन गया था, जो राधा-वल्लभीय विरक्त भक्तों में अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। चंदसखी के शिष्य-प्रशिष्यों ने भक्ति संबंधी अनेक पदों की भी रचना की, जिनसे राधावल्लभीय साहित्य की समृद्धि में समुचित योग मिला है।

जब वैष्णव-अवैष्णव संघर्ष के फल स्वरूप वैष्णवों के अनी-अखाड़ों का निर्माण हुआ, तब राधावल्लभीय निर्मोही अखाड़े में चंदसखी के थोक का महत्वपूर्ण स्थान निश्चित हुआ। इस अखाड़े की एक बैठक वृंदाबन में और दूसरी जयपुर राज्यांतर्गत 'नीम के थाने' में है। चंदसखी-थोक के नागाओं ने वैष्णव धर्म की रक्षा करने में प्रशंसनीय कार्य किया है।

जब विधर्मियों के अत्याचारों से आस्तिक हिंदुओं को अपने धार्मिक जीवन का निर्वाह करना कठिन हो गया, तब अनेक भक्त-जन अनिच्छा पूर्वक ब्रज प्रदेश को छोड़ कर हिंदू राजाओं के राज्यों में चले गये। वे अपने साथ देव-विग्रह और धार्मिक ग्रंथ भी ले गये। ऐसी ही परिस्थिति में चंदसखी भी अपनी अति वृद्धावस्था में वृंदाबन छोड़ने को विवश हुए थे। ओड़छा के राजा उदोतसिंह उनका परम भक्त था। उसने आग्रह पूर्वक उनको अपने यहाँ रखा और उनकी सेवा-सुश्रुषा की समुचित व्यवस्था की।

ऐसा अनुमान है कि चंदसखी सं० १७८२ के लगभग अपनी पूर्ण वृद्धावस्था में ओड़छा में जाकर रहे थे। उन्होंने

ाहाँ पर ७-८ वर्षों तक निवास किया। अंत में सं० १७९० के लगभग, ९० वर्ष की आयु में, आषाढ़ शुक्ला ११ को उनका देहावसान संभवतः ओड़छा में ही हुआ।

५. रचनाएँ

चंदसखी के नाम से प्रसिद्ध अधिकांश रचनाएँ भजन और लोक-गीत हैं, जो उत्तर भारत के हिंदी भाषा-भाषी कई राज्यों में प्रचलित हैं। इनका अधिक प्रचार वहाँ के लाखों मध्य-वर्गीय परिवारों की स्त्रियों में है। इन रचनाओं की लोक-प्रियता के कारण ही चंदसखी की इतनी ख्याति है। भजनों और लोक-गीतों के अतिरिक्त उनके कुछ पद भी प्रसिद्ध हैं। वे कीर्तन-मंडली, संगीत-समाज और मंदिरों में गाये जाते हैं। इन पदों की संख्या अभी तक बहुत कम थी; किंतु नवीन खोज में वे भी यथेष्ट संख्या में प्राप्त हो गए हैं।

१. शैली और स्वरूप—

उनकी समस्त रचनाएँ मुक्तक शैली की हैं, जो स्फुट रूप में प्राप्त होती हैं। उनका रचा हुआ कोई ग्रंथ प्रसिद्ध नहीं है। श्री किशोरीशरण 'अलि' ने उनकी एक पुस्तक 'ज्ञान चौवनी' का उल्लेख किया है, किंतु खोज करने पर उसका नाम 'ज्ञान चौगुणी' ज्ञात हुआ और वह चंदसखी की प्रामाणिक रचना भी सिद्ध नहीं हुई। इस प्रकार उनके काव्य का मूल्यांकन उनकी स्फुट रचनाओं के आधार पर ही किया जा सकता है। इन रचनाओं में चंदसखी भक्त-कवि और लोक-गीतकार के दो रूपों में प्रकट होते हैं।

२. भक्ति-काव्य—

चंदसखी के भक्ति—काव्य की पद—रचनाएँ ब्रज के अन्य पद-रचयिता भक्त कवियों की शैली की ही हैं। राधा-वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी होने के कारण उनके पदों में उक्त संप्रदाय की भक्ति-भावना के ही अनुकूल कथन हुआ है। इस संप्रदाय में प्रेमोपासना के रूप में प्रिया-प्रियतम द्वारा वृंदाबन में नित्य विहार करने की मान्यता है। इसमें श्री श्यामा-श्याम का युगल स्वरूप सदैव नव किशोर और क्षण मात्र भी एक दूसरे से अलग न होने वाला माना जाता है। इसीलिए उन्होंने वृंदाबन—महिमा, बसंत—होली—रास आदि लीलाएँ, युगल छवि और प्रेमासक्ति का ही सरस कथन किया है। उनकी रचनाओं में ब्रज-लीला और विरह-वियोग के जो पद और भजन मिलते हैं, वे राधावल्लभ सिद्धांत के विरुद्ध होने के कारण उनके रचे हुए नहीं माने जा सकते हैं। इस प्रकार की रचनाएँ विविध नर-नारियों द्वारा उनके नाम से गढ़ ली गई हैं।

३. लोक-काव्य—

चंदसखी के नाम से प्रचलित लोक-काव्य के भजनों और गीतों की संख्या बहुत अधिक है। वे ब्रज, राजस्थान, बुंदेलखंड, भदावर, मालवा, निमाड़ आदि के विशाल भू-भाग की स्त्रियों द्वारा उन्हीं की बोलियों में गाए जाते हैं। उनमें प्रादेशिक वातावरण के अनुसार संयोग-वियोग, अनुराग-विराग, उपालंभ-हास्य, पौराणिक कथा, अमर्यादित प्रेम और

गार्हस्थिक जीवन के विविध प्रसंगों का कथन हुआ है । उनकी भाषा सरल, भाव बोधगम्य और रचना-शैली काव्य-नियमों के बंधनों से मुक्त है। इनमें नारी-हृदय के सहज भावों की सरस अभिव्यक्ति हुई है । इन गीतों और भजनों को गाकर विविध प्रदेशों की नारियाँ समान रूप से आनंदित होती हैं ।

इस प्रकार की रचनाओं में ऐसे अनेक गीत और भजन भी हैं, जो थोड़े हेर-फेर से कई प्रदेशों में उन्हीं की बोलियों में प्रचलित हैं । अनेक भजन कबीर, सूर, तुलसी और मीरा की रचनाओं को उलट-फेर कर बना दिये गये हैं । राजस्थान में मीरा की रचनाओं से मिलते हुए चंदसखी के भी अनेक भजन प्रचलित हैं[1] । उनमें मीरा की शब्दावली और भावों का भद्दा अनुकरण तो है, किंतु उनकी सी प्रेम-पीड़ा, मिलन की तीव्र

---

१. (क) चंदसखी के गेय पदों की भाषा देश-भेद से बदलती रही ।... जिस प्रांत में पदों का प्रचार हुआ, वहाँ के लोक-समुदाय ने भाषा का चोला अपने रंग में रँग दिया ।

—चंद्रसखी-पदावली (जीवन और काव्य, पृ० ७)

(ख) चंदसखी के भजनों में एक बात ज्यादह ध्यान देने योग्य है। इन भजनों को भिन्न-भिन्न स्थान के निवासी अपनी-अपनी बोली के सांचे में ढालकर उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार से गाते हैं । इस प्रकार चंदसखी के एक ही भजन के कई रूप भी पाये जाते हैं । साधारण हेर-फेर तो प्रायः सभी पदों में मिल जायेगा, परंतु कई भजनों में तो बहुत ही अंतर पाया जाता है ।

—राजस्थान-भारती (अप्रेल, १६५०)

उत्कंठा और नारी-हृदय की कोमल किंतु मार्मिक अभिव्यक्ति लेश मात्र भी नहीं है।

इन रचनाओं में भाषा, भाव और शैली संबंधी बड़ी विषमताएँ हैं। उनमें अच्छी से अच्छी और बुरी से बुरी सभी प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं। इससे स्पष्ट है कि वे किसी एक व्यक्ति की रची हुई नहीं हैं, बल्कि अनेक व्यक्तियों ने अपनी-अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार उनको कथ डाला है! 'कहत कबीर सुनो भाई साधो,' तुलसीदास आस रघुवर की,' 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर,' आदि शब्दावलियों के साथ जिस प्रकार कबीर, तुलसी और मीरा के अगणित प्रक्षिप्त पद बना दिये गये हैं, उसी प्रकार 'चंदसखी भज बालकृष्ण छबि' की छाप से, चंदसखी के नाम से भी, अनेक भजनों और गीतों की रचना कर डाली गई है[1]। जिस प्रकार रत्नों के पारखियों के साथ ही साथ काँच के टुकड़ों के भी ग्राहक होते हैं, उसी प्रकार चंदसखी की प्रामाणिक रचनाओं के साथ ही

---

१. मीरा और कबीर की तरह उसके भजनों का भी मूल रूप प्राप्त नहीं होता। एक ही पद के अनेक रूप मिलते हैं। बड़ी उलझन की बात तो यह है कि 'चंद्रसखी भज बाल कृष्ण छबि' राजस्थान निवासियों के हृदय पर इतना गहरा चढ़ गया है कि हर पद के पीछे चाहे वह किसी का क्यों न हो, वे यह पद जोड़ देते हैं; जिससे यह कहना भी कठिन हो जाता है कि वास्तव में यह पद किसका है।

—साप्ताहिक हिंदुस्तान (१२ जुलाई, १९५३)

साथ ये प्रक्षिप्त रचनाएँ भी पसंद की जाती रही हैं; किंतु इनमें वही भेद है, जो असली और नकली में होता है। चंदसखी की रचनाओं का संकलन करने वाले इस सत्य को स्वीकार करने के लिए विवश होते हैं[1]।

राजस्थान में मीरा और चंदसखी दोनों की ही रचनाएँ प्रचलित हैं, अतः वहाँ पर इस प्रकार का प्रक्षेप और मिश्रण बहुत अधिक हुआ है। उदाहरण के लिए दोनों का एक-एक भजन दिया जाता है। मीरा का एक भजन इस प्रकार है—

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी। थारी सूरत देखि लुभानी ॥
मेरो नाम बूझि तुम लीजो, मैं हूँ विरह दिवानी।
रात-दिवस कल नाहीं परत है, जैसे मीन बिनु पानी ॥
दरस बिना मोहे कछु न सुहावे, तलफ-तलफ मर जानी।
'मीरां' तो चरनन की चेरी, सुन लीजै सुख दानी ॥

इसी से मिलता हुआ चंदसखी के नाम से प्रचलित भजन देखिये—

मिलता जाज्यो राज गुमानी। थारी सूरत देख लुभानी।
म्हांरो नांव थे जाणो-बूझो, मैं छूं राम-दिवानी।
आमी-सामी पौल नंद के चंदन चौक निसानी ॥
थे म्हारे आवो बंसीवाला, करस्यां बहुत लड़ानी।
करां रसोई सोद की थारी, बहुत करूं मिजवानी ॥

---

१. सभी पहलुओं पर विचार करने पर प्राप्त पदों में प्रामाणिक पदों की संख्या बहुत छोटी ही प्रतीत होती है।

—**चंदसखी और उनका काव्य (वस्तु कथा, पृ० ५१)**

थे आवो हरि घेणु चरावण, म्हे जल जमुना पानी।
थे नंद जी को लाल कुहावो, म्हें गोपी मस्तानी॥
जमुनाजी के नीरां-तीरां, थे हरि धेनु चराज्यो।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, नित बरसाणे आज्यो॥

सूरदास के पदों के आधार पर भी चंदसखी के नाम से अनेक रचनाएँ की गई हैं, इसका भी एक उदाहरण देखिये। सूरदास का एक प्रसिद्ध पद है—

कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर सों बाबा-बाबा अरु हलधर सों भैया॥
ऊँचे चढ़ि-चढ़ि कहति जसोदा, लै-लै नाम कन्हैया।
दूर खेलन जनि जाहु लला रे, मारैगी काहु की गैया।
गोपी-ग्वाल करत कौतूहल, घर-घर बजत बधैया।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरे दरस कों, चरनन की बलि जैया॥

इसके आधार पर रचा हुआ चंदसखी के नाम से प्रचलित भजन इस प्रकार है—

कहन लागे मोहन मैया-मैया।
नंद महर कों बाबा ही बाबा, बलदाऊ कों भैया॥
मथुरा में होय बालक जन्मे, घर-घर बजत बधैया।
दूर खेलन मत जाओ मेरे ललना, मारैगी काऊ की गैया॥
सिंहपोल पर ठाड़ी जसोदा, घर आओ दोनों भैया।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, जसुमति लेत बलैया॥

चंदसखी के नाम से जो भक्तिपूर्ण लोक-गीत और भजन प्रचलित हैं, वे प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं पर आधारित होने के कारण कुछ सारपूर्ण भी हैं, किंतु लोक-जीवन से संबंधित

अनेक साधारण और निकम्मी रचनाएँ भी की गई हैं। कुछ रचनाएँ इतनी हास्यप्रद हैं कि उन्हें पढ़ते ही अरुचि उत्पन्न होती है। चंदसखी के नाम से रची हुई एक ऐसी ही रचना देखिये—

सीतापति रो नाम, म्हाँने लागे प्यारो।
चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाईं, पोढ़ण बेग पधारो॥
मनमोहन थांरी सेज सँवारी, पोढ़ण आवै बंसी वारो
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छवि, सीता नें सेज संवारो॥

इस रचना की निरर्थकता स्पष्ट है। चंदसखी के नाम से रची हुई एक अन्य रचना में भाँग की प्रशंसा की गई है—

कदम तले घोट पिलाई दे कान्हा, अँखियाँ में लाली छाई।
विजयापुर से भाँग मँगाई, राधा जी के हाथ धुवाई,
आप कृष्ण जी घोटण लागा, राधा प्यारी आन छणाई।
और सख्यांने थोड़ी-थोड़ी पाई, राधे जी नें खूब छकाई,
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि हँसि कंठ लगाई॥

इस प्रकार की कुछ निस्सार और निरर्थक तुकबंदियों के कारण चंदसखी का महत्व कम नहीं होता है। उनके नाम से प्राप्त अनेक रचनाएँ सुंदर हैं और उनका लोक-मानस पर गहरा प्रभाव पड़ा है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रामाणिक रचनाओं का संकलन किया जावे और प्रक्षिप्त तुकबंदियों को छोड़ दिया जावे। किंतु यह कार्य स्वयं अपने में बहुत बड़ा और कठिन है। कारण यह कि चंदसखी का लोक-काव्य कई राज्यों के विशाल भू-भाग में फैला हुआ है, जो लाखों नर-

नारियों द्वारा अनेक वर्षों से गाया जाता रहा है। उनके गीतों के लिपिबद्ध प्राचीन संग्रह भी नहीं मिलते हैं, जिनके आधार पर उनकी प्रामाणिकता का निश्चय हो सके।

ऐसी परिस्थिति में यही उचित है कि उनके नाम से प्राप्त समस्त लोक-रचनाओं को एक बार संकलित कर लिया जावे। तभी उसकी प्रामाणिकता की भलीं भाँति परीक्षा हो सकेगी। इस लेखक ने इसी आशा से चंदसखी के भजनों और लोक-गीतों का भी एक संकलन किया है, जो अब तक प्रकाशित ग्रंथों में सबसे बड़ा है। इसमें ब्रज, राजस्थानी, मालवो, निमाड़ी और पंजाबी बोलियों के भजन और लोक-गीत विषयानुक्रम से संकलित किये गये हैं।

४. भक्ति-काव्य और लोक-काव्य की तुलना—

चंदसखी की दोनों प्रकार की अर्थात् भक्ति-काव्य और लोक-काव्य की रचनाओं की तुलना करने पर निम्न लिखित तथ्य सामने आते हैं—

१—भक्ति-काव्य के पद ब्रज के पुराने कीर्तन-संग्रहों में मिलते हैं, किंतु लोक-काव्य की रचनाओं का कोई पुराना संकलन किसी भी राज्य में प्राप्त नहीं हुआ है।

२—भक्ति-काव्य में 'चंदसखी हित बालकृष्ण प्रभु' अथवा केवल 'चंदसखी' या 'चंद' की छाप मिलती हैं, किंतु लोक-काव्य में प्राय: 'चंदसखी भज बालकृष्ण छवि' की छाप है। भक्ति–काव्य के बहुत कम पदों में यह छाप मिली है।

३—ब्रज में चंदसखी का जो लोक–काव्य प्राप्त होता है, उसमें भी 'चंदसखी भज बालकृष्ण छबि' की ही छाप मिलती है, किंतु वह शुद्ध ब्रज की बोली में है।

४—ब्रज के लोक–काव्य की कई रचनाएँ राजस्थान आदि अन्य राज्यों में भी प्रचलित हैं, किंतु वे शुद्ध ब्रज-बोली में न होकर उक्त राज्यों की विभिन्न बोलियों में हैं।

५—लोक–काव्य की अधिकांश रचनाओं का राधावल्लभीय संप्रदाय की भक्ति-भावना से कुछ भी संबंध ज्ञात नहीं होता है। कितनी ही रचनाएँ उसके एकदम विरुद्ध हैं।

इन तथ्यों के कारण दोनों प्रकार की रचनाओं को सहसा एक ही कवि की रचनाएँ मानने में संकोच होता है। इसीलिए ऐसा समझा जाता है कि चंदसखी नाम के दो कवि हुए होंगे। एक ने भक्ति–काव्य की रचना की है और दूसरे ने लोक–काव्य की। 'मिश्र-बंधु विनोद' में दोनों का उल्लेख भी हुआ है। उसमें एक को ब्रजवासी, सं० १६३८ में विद्यमान और राधावल्लभ संप्रदाय का अनुयायी बतलाया गया है। दूसरे को जयपुर निवासी, सं० १९०० के लगभग विद्यमान बतलाया गया है। राजस्थानी विद्वानों के मतानुसार दूसरी चंदसखी राजस्थान की महिला थी। चंदसखी के जीवन-वृत्तांत की समीक्षा में हम बतला चुके हैं कि इस प्रकार का मत भ्रमात्मक है। चंदसखी दो नहीं, एक ही थे और वे राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी पुरुष थे। यदि एक के स्थान पर दो

चंदसखी मानते हैं, तब उनके लोक-काव्य में उल्लिखित 'बालकृष्ण' का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सकता है।

चंदसखी का भक्ति-काव्य अब तक अत्यल्प परिमाण में उपलब्ध था, इसलिए उसके संबंध में कोई निश्चित मत नहीं बनाया जा सकता था। अब नवीन खोज में उसके पर्याप्त परिमाण में प्राप्त हो जाने से यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि चंदसखी मूल रूप में भक्त कवि थे। उनकी प्रामाणिक रचनाएँ वे पद हैं, जो इस पुस्तक में संकलित किये गये हैं। उनके नाम से प्रचलित लोक-काव्य की वे अधिकांश रचनाएँ अप्रामाणिक हैं, जो विभिन्न स्थानों के नर-नारियों ने समय समय पर रच ली हैं। उनके कुछ लोक-गीत और भजन भी प्रामाणिक हैं, जो उन्होंने प्रचारार्थ रचे थे। चंदसखी के जीवन-वृत्तांत से प्रकट है कि राधावल्लभ संप्रदाय की दीक्षा लेने के अनंतर उन्होंने साधुओं की जमात के साथ देश-भ्रमण किया था। उस समय वे राजस्थान, बुंदेलखंड, मालवा आदि जहाँ भी गये; वहाँ उनके लोक-गीत प्रचलित हो गये। वे गीत इतने लोकप्रिय हुए कि उनकी ताल और लय पर अनेक व्यक्तियों ने चंदसखी के नाम से अनेक गीत रच डाले!

५. लोक-काव्य की रचनाओं का कारण—

ब्रज में सैकड़ों भक्त कवि हुए हैं। उन्होंने भक्ति संबंधी पदों के अतिरिक्त लोक-गीत अथवा भजनों की रचना नहीं की है। ऐसी दशा में भक्त कवि चंदसखी इसका अपवाद क्यों हैं?

बात यह है, जिस समय चंदसखी हुए, उस समय परिस्थिति वश भक्त कवियों का ध्यान एकाकी साधना के साथ ही साथ सामूहिक प्रचार की ओर भी आकर्षित हुआ था। चंदसखी ने संभवतः इस ओर सबसे पहले पग बढ़ाया था; अन्य कई कवियों ने उनका अनुगमन किया था। चाचा हित वृंदाबवनदास ने चंदसखी के संबंध में लिखा है—

हित चंदसखी बालकृष्ण छाप। ताकौ दरस्यौ गरुवौ प्रताप ॥
पद-ख्याल रचे जप्यौ जुगल जाप। रहे संत लार होरी अलाप ॥
—चतुर्थ 'प्रबंध'

उपर्युक्त उल्लेख से सिद्ध होता है कि चंदसखी ने 'पद' और 'ख्याल' दोनों प्रकार की रचनाएँ की थीं। ब्रजभाषा साहित्य में 'पद' से अभिप्राय प्रायः भक्तिपूर्ण 'विष्णुपद' से होता है, जो उच्च कोटि का गेय काव्य है; तथा 'ख्याल' से अभिप्राय लोक-रंजक निम्न कोटि के संगीत से होता है। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के अंतर्गत कृष्णदास अधिकारी की वार्ता में, नर्तकी के प्रसंग में, इसका स्पष्टीकरण हुआ है। इस प्रकार चंदसखी की 'ख्याल' रचना के अंतर्गत उनके लोक-गीत आते हैं। चाचा वृंदाबनदास ने प्रचुर भक्ति-काव्य के अतिरिक्त कुछ रसिया आदि लोक-गीतां की भी रचना की थी[1]।

---

१. डफ बाजै कुँवरि किसोरी के।
तैसिय संग सखी रंग-भीनी, छैल छबीली गोरी के ॥
हो हो कह मोहन मन मोहत, प्रीतम के चित चोरी के।
'वृंदाबन' हित रूप स्वामिनी, कर डफ गावत होरी के ॥
— चाचा हित वृंदाबनदास

वल्लभ संप्रदाय के गोस्वामी पुरुषोत्तम लाल जी (जन्म सं० १८०५) ने भी भक्ति-काव्य के अतिरिक्त अनेक लोक-गीतों की रचना की थी[1]। उनके ब्रज के रसिया तथा भजन प्रसिद्ध हैं। वे स्वयं 'पुरुषोत्तम लाल जी ख्याल वारे' के नाम से विख्यात हैं।

इस प्रकार चंदसखी द्वारा लोक-गीतों की रचना होना सिद्ध होता है। उन गीतों में चाहें राधावल्लभीय मान्यताओं की स्पष्ट छाप न हो, किंतु वे उनके विरुद्ध कदापि नहीं हो सकते हैं। चंदसखी के नाम से प्राप्त जो गीत राधावल्लभ संप्रदाय की भक्ति-भावना के विरुद्ध मिलते हैं, वे निश्चय पूर्वक उनकी रचना नहीं हैं।

६. संकलन और प्रकाशन—

पहले लिखा जा चुका है कि चंदसखी के जीवन-वृत्तांत से कुछ भी परिचय न रखते हुए भी ब्रज, राजस्थान आदि के

---

१. बनि आयौ रे रसिया होरी कौ।
मल्ल काछि सिंगार बनायौ, जाकौ फेंटा सीस मरोरी कौ॥
फेंट गुलाल, करन पिचकारी, माथे बेंदा रोरी कौ।
'पुरुषोत्तम' प्रभु कुवँर लाड़िलौ, यह रसिया या गोरी कौ॥

फगुबा दै मोहन मतवारे।
ब्रज की नारी गावत गारी, तुम द्वै बापन बिच बारे॥
नंद जी गोरे जसोमति गोरी, तुम याही तें भये कारे।
'पुरुषोत्तम' प्रभु की छवि निरखत, गोप भेष लियौ अब हारे॥

—गो० पुरुषोत्तम लाल 'ख्याल वारे'

लाखों व्यक्ति अनेक वर्षों से उनकी रचनाओं से परिचित रहे हैं। महिलाओं, लोक-गायकों और गवैयों में उनकी रचनाओं का काफी समय से प्रचार रहा है। श्री अगरचंद जी नाहटा ने लिखा है कि सं० १७६६ के आस-पास चंदसखी के एक लोक-गीत 'ब्रजमंडल देस दिखाय रसिया' का राजस्थान में विशेष प्रचार था। उस गीत की लय और चाल इतनी लोकप्रिय थी कि उस समय के जैन कवि न्यायसागर ने स्वरचित 'वासुपूज्य स्तवन' के गायन के लिये उसे अपनाया था।

राजस्थान आदि राज्यों में चाहे लोक-गीतों का पुराना संकलन प्राप्त नहीं हुआ है, किंतु ब्रज में उनके अनेक पद पुराने संग्रहों में उपलब्ध होते हैं। कीर्तन की पोथियों में भी चंदसखी की रचनाएं आदरपूर्वक स्थान पाती रही हैं। श्री कृष्णानंद व्यास ने अब से प्राय: १२५ वर्ष पूर्व अनेक गायकों और संगीत-शास्त्रियों की सहायता से विविध राग-रागनियों के हजारों गान एकत्र किये थे, जिन्हें उन्होंने अपने विख्यात ग्रंथ 'राग कल्पद्रुम' में संकलित किया था। यह महान् ग्रंथ बड़े-बड़े चार भागों में सं० १६०० के लगभग कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। उसमें चंदसखी की रचनाओं को मुद्रित कराने का कदाचित् यह सर्वप्रथम प्रयास था। इसके पश्चात् उनकी रचनाएं 'राग रत्नाकर', 'रास पद संग्रह' आदि कई संगीत ग्रंथों में भी प्रकाशित हुईं। सं० १६६० में श्री रघुनाथ प्रसाद सिंहानिया ने 'राजस्थान रिसर्च सोसाइटी'

कलकत्ता द्वारा 'मारवाड़ी भजन सागर' नामक एक बड़ा भजन संग्रह प्रकाशित किया, जिसमें चंदसखी के ५४ भजन संगृहीत हैं। इन ग्रंथों में चंदसखी की रचनाएँ अन्य कवियों की रचनाओं के साथ प्रकाशित हुई हैं; केवल उन्हीं की रचनाओं को संकलित कर प्रकाशित करने की चेष्टा बाद में हुई।

राजस्थानी विद्वान श्री नरोत्तमदास जी स्वामी ने चंदसखी की रचनाओं को संकलित कर प्रकाशित कराने की ओर कदाचित् सबसे पहले ध्यान दिया था। उनके संगृहीत ५४ भजनों का एक संकलन 'चंदसखी रा भजन' नाम से ठाकुर रामसिंह जी द्वारा संपादित होकर नवयुग ग्रंथ कुटीर, बीकानेर द्वारा प्रकाशित हुआ है। इससे पूर्व 'मारवाड़ी भजन सागर' में चंदसखी के जो ५४ भजन प्रकाशित हुए थे, उनमें से १३ कुछ पाठांतर के साथ इस संग्रह में भी हैं; शेष ४१ भजन दोनों में भिन्न प्रकार के हैं। राजस्थान के एक अन्य विद्वान श्री महावीरसिंह गहलोत ने चंदसखी की ८४ रचनाओं का संकलन 'चंदसखी–पदावली' के नाम से किया, जो सं० २००४ के लगभग ग्रंथागार, काशी से प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में चंदसखी की ८४ रचनाओं को संपादित रूप में दिया है। इस पुस्तक की सभी रचनाओं को 'पद' कहना उचित नहीं है। पद तो दो-चार ही हैं, शेष सब भजन और लोक-गीत हैं। सुश्री पद्मावती 'शबनम' कृत 'चंदसखी और उनका काव्य' नामक ग्रंथ सं० २०११ में प्रकाशित हुआ। इसमें चंदसखी के ११४ भजनों को विभिन्न शीर्षकों के साथ दिया गया है।

पुस्तकों के अतिरिक्त कई लेख भी प्रकाशित हुए
एक लेख श्री मनोहर शर्मा, विसाऊ वालों का 'राज
भारती' अप्रैल १६५० के अंक में निकला था। उसमें
जी ने चंदसखी के कई नवीन भजनों को प्रकाशित कर
काव्य पर विस्तृत प्रकाश डाला था। श्री वेदप्रकाश ग
पटना के 'साहित्य' पत्र में एक लेख लिखकर 'राधाव
भक्तमाल' के आधार से चंदसखी के संक्षिप्त जीवन-
पर प्रकाश डाला है। प्रकाशित पुस्तकों में चंद
के वे भजन और लोक-गीत हैं, जो अधिकतर राजस्थ
प्रचलित हैं। राजस्थान के अतिरिक्त ब्रज, बुंदेलखंड, म
आदि प्रदेशों के लोक-गीतों को संकलित कर प्रकाशित
किया गया है। हर्ष की बात है कि इन प्रदेशो में भी चंदसख
रचनाओं के संकलन का प्रयास किया गया है। डा० चिंत
उपाध्याय ने अपने 'मालवी लोक गीत' प्रबंध में चंदसर
की मालवी रचनाओं का संकलन कर उनका अध्ययन
किया है। श्री श्याम परमार ने मालवा और निमा
से चंदसखी की कतिपय रचनाओं का संकलन किया है
लेखक ने भी चंदसखी के भजनों और लोक-गीतों का
संकलन किया है। इसमें ब्रज, बुंदेलखंड, राजस्थान, म
और निमाड़ क्षेत्रों की उन रचनाओं का संग्रह है, जो
सखी के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह ग्रंथ उत्तर प्रदेशीय स
द्वारा अभी हाल में ही प्रकाशित किया गया है।

ये सब प्रयत्न चंदसखी के लोक-गीतों के संबंध में
किंतु उनके भक्ति-काव्य की जानकारी हिंदी-जगत् को

तक बहुत कम है। अब तक प्रकाशित पुस्तकों में भक्ति-काव्य के दो-चार पद ही आ पाये हैं। ब्रज में भी उनके भक्ति-काव्य के वही पद प्रचलित हैं, जो कीर्तन-संग्रहों में उपलब्ध होते हैं। इस विषय के इतने अधिक पद प्रथम बार संकलित कर प्रकाशित किये जा रहे हैं।

७. भक्ति-काव्य के पदों की समीक्षा—

इस प्रकार के पद स्तुति, विनय, वृंदाबन-महिमा, हितहरिवंश जी की जन्म-बधाई, श्री राधा-कृष्ण की विहार लीलाएँ, युगल छवि और आसक्ति विषयक मिले हैं। लीलाओं में श्री कृष्ण-जन्म, बाललीला, गोदोहन, पनघट, दान, मान, खंडिता विषयक ब्रजलीला के पद बहुत कम हैं। जो कुछ हैं भी, वे ब्रज से बाहर बुंदेलखंड, राजस्थान आदि प्रदेशों में प्रचलित रहे हैं। उनमें प्राय: 'चंदसखी भज बालकृष्ण छबि' की छाप मिलती है। बहुत संभव है, ये पद लोक-काव्य के अनेक भजनों और गीतों की तरह चंदसखी की प्रामाणिक रचनाएँ न हों। अधिकांश पद वंशी-वादन, रास, बसंत, होली विषयक नित्य बिहार के, तथा युगल छवि एवं रूपासक्ति-प्रेमासक्ति के मिलते हैं, जो राधावल्लभ संप्रदाय की भक्ति-भावना के अनुकूल हैं। इनमें 'चंदसखी हित बालकृष्ण प्रभु,' 'चंदसखी' अथवा केवल 'चंद' की छाप है। ये चंदसखी के प्रामाणिक पद कहे जा सकते हैं।

राधावल्लभ संप्रदाय में प्रिया-प्रियतम के नित्य मिलन और पल भर के लिये भी एक दूसरे से अलग न होने की

मान्यता है, अतः ब्रज की बाल-लीलाएँ, राधा-गोपियों के मान और विरह की लीलाएँ सिद्धांततः अमान्य हैं। चंदसखी की प्रामाणिक रचनाओं में इनसे संबंधित पदों का न होना उचित ही है।

रूपासक्ति और प्रेमासक्ति की तीव्रता के कारण मिलन की अवस्था में भी विरह की सी दशा हो जाती है! अतृप्ति और अधिक सामीप्य की कामना से राधावल्लभ संप्रदाय में मिलन में भी विरह की अवस्था मान्य है। इसीलिये इस संप्रदाय के भक्त-कवियों ने मान और विरह के भी कुछ पदों की रचना की है। चँदसखी की रचनाओं में जो विरह के पद हैं, उनमें जो राधावल्लभीय मान्यता के सर्वथा विरुद्ध नहीं हैं, वे भी उनके प्रामाणिक पद कहे जा सकते हैं।

भक्ति-काव्य में रास, युगल छवि, प्रेम और आसक्ति के पद भक्ति-भावना और काव्य-सौंदर्य दोनों दृष्टियों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। रास के पदों में वाद्य यंत्रों की ताल-लय के साथ सुंदरियों के पदाघात, उनकी किंकिणी और नूपुरों की ध्वनि ने मिलकर एक अजीब समाँ बाँध दिया है। देखिये—

आजु सखी रास रच्यौ, राधिका-रमन री।
चलहु मिल बेगि सब, सुखहि निरखैं तहाँ,
सघन तरु-लतनि तट कुंज के भवन री॥
बजत बीना मिलत तरल कट किंकिनी,
कुणित नूपुर चरन-गतनि के गवन की॥
रसिक वर निर्त पर, रीझि भीजिय अली,
'चंद' सुख-कंद लखि ढोरत पवन री॥

देखि सखी, स्याम–प्रिया सकल सुख–रास री।
करत नव निर्त वर, संग प्यारी सुघर,
कोक-विधि निपुन, संगीत गति लास री॥
सरस मंडल रच्यौ, रतन-हाटक खच्यौ,
कोटि दिनकर मनों उदित प्रकास री॥
तैसिय तन-झलक, झिलिमिलन भूषन-बसन,
दसन की लसनि, मुख मंद मृदु हास री॥
मधुर कल गान, सुर-तान मिल जुवति जन,
सब्द उच्चरत, बजत मृदंग अरु बाँसुरी॥
थकित सुर विमान, लखि बारत तन-मन-प्रान,
'चंद' आनंदघन निज बन विलास री॥

युगल छवि के पदों में प्रिया-प्रियतम के दिव्य मनोहर रूप का सरस वर्णन हुआ है। इन पदों को गाकर भक्तजन आनंद विभोर हो जाते हैं। रास के उपरांत प्रिया–प्रियतम कुंज के कदंब की डाल पकड़ कर किस अंदाज से खड़े हैं! देखिये—

ए दोऊ राजत प्रीतम–प्यारी।
सुख की रासि स्याम-सुंदर वर श्री वृषभान–दुलारी॥
खेल रास ठाड़े दंपति, गहैं कुंज कदंब की डारी।
भूषन-बसन लसन अति अंग अंग, सोभा रूप उजियारी॥
रीझि परस्पर हँसत–हँसावत, लाड़िली–लालबिहारी।
'चंदसखी' राधाबल्लभ पर, तन–मन–धन बलिहारी॥

सुरति और सुरतांत की रूप-छटा से भक्त-जनों के मन-मानस में आनंद की हिलोरें उठने लगती हैं। निम्न लिखित

पद सुरतांत के मादक रूप-सौंदर्य का अनुपम उदाहरण है—

ए दोऊ रंग भरे रस-सानै ।
आनँद-कंद, रूप-निधि सजनी, नीके आजु दरसानै ।।
अँग-अँग छबि की उठत तरंगें, अरुन नैंन अरसानै ।
पौंछैं कज्जल-पीक कपोलनि, अंचल लै ललिता नै ।।
रोचक पवन, निकट जमुना, वृंदाबन कुंज ठिकानै ।
सुख-समूह, दंपति-संपति की महिमा कौन बखानै ।।
अपरंपार पार को पावै, इनकी ए ई जानै ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण, गुन गावत वेद-पुरानै ।।

भक्ति-मार्ग में अनन्य प्रेम का बड़ा माहात्म्य है। उसके बिना करोड़ों उपाय करने पर भी श्रीकृष्ण की प्राप्ति संभव नहीं है। प्रेम-प्रीति का मार्ग वास्तव में बड़ा अनोखा है। केवल बात बनाने से प्रेम नहीं हो सकता है। इस मार्ग पर चलने वालों का निर्वाह शीश देकर भी तो नहीं हो पाता—

प्रीति कौ तौ पैंडौ ही न्यारौ ।
बातन प्रेम न होत अयाने, अबैंई जाइ देखो, सोच-विचारौ ।।
कोटि जतन किये हाथ न आवै, बिना प्रेम इक नंद-दुलारौ ।
'चंदसखी' यह पंथ दुहेलौ, सीस दिए हू न होय निरबारौ ।।

इसीलिए प्रेमोन्मत्तों को कवि की नेक सलाह है कि वे लगन का नाम ही न लें, तो अच्छा है। लगन लग जाने पर शीश की आशा करना वृथा है। यह मार्ग ऐसा कठिन है कि उस पर पग धरते ही तन की हानि होती है। पतंग की भाँति प्रेमी की बलि भी अनिवार्य है—

लगनि कौ नाम न लीजै, रे बौरे।
जो कोऊ लगनि लग्यौ ही चाहै, सीस की आस न कीजै रे बौरे॥
लगनि कौ पैड़ौ महा कठिन है, पग धरते तन छीजै रे बौरे।
'चंदसखी' गति यही पतंग की, वारि फेरि जिय दीजै रे बौरे॥

चंदसखी के भक्ति-काव्य में प्रेमासक्ति के पद संख्या और सौंदर्य दोनों दृष्टियों से विशेषता रखते हैं। चंदसखी के पदों में हरि-दर्शन की लालसा और उनके प्रति अनुपम आसक्ति का अनोखा कथन हुआ है।

कवि का कहना है, हरि से आँख लगने पर प्रेमी की दशा जल की मछली के समान हो जाती है। वह श्याम के रूप-रस को पीकर ही जीवित रह सकता है, उसके बिना नहीं। प्रेमी न तो लाज-शर्म मानता है और न लोक-वेद की मर्यादा का ध्यान रखता है। वह शहद की मक्खी के समान प्रेमास्पद से किसी प्रकार अलग नहीं हो सकता है—

लागी रे अब हरि सों अँखियाँ।
स्याम रूप-रस निस-दिन पीवत, जीवत री जैसे जल-झखियाँ।
लाज-कानि काहू की न मानैं, लोक-वेद की सींव जु नखियाँ॥
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, निरखत भई सहत की मखियाँ॥

प्रेमी भक्त के लालची नेत्रों की विवशता का वर्णन निम्न पदों में देखिये—

ए री, इन नैंनन कों सुख नाँहि।
लागी तीखे दृगन की औचट, कसक पुतरियन माँहि॥
करि-करि जतन सियान सबै मिल, पचि-पचि फिरि-फिरि जाँहि।
'चंदसखी' हरि-रूप लालची, और न काहू पत्याँहि॥

दृग मेरे री, बरजौ न मानें।
अपनी बान न छाँड़े भटू, पचि थाके बहुत सयानें॥
रूप कौ स्वाद परयौ इन लोभिन, दूसरी बात न जानें।
'चंदसखी' कोऊ कोटि कहौ क्यों न, एक न जिय में आनें॥

जिसका मन श्यामसुंदर ने हर लिया है, वह कुल की लाज-शर्म की कब परवाह करता है! उन्हें देखे बिना उसे क्षण भर भी धैर्य नहीं, क्यों कि उसके प्राण तो उसके प्रीतम के वश में हैं—

यह मन मेरौ स्याम हरयौ री।
बिसराई कुल-कान लाज सब, नहिं जानौं, कहाधौं करयौ री॥
बिन देखै मनमोहन नागर, छिन धीरज नहीं जात धरयौ री।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रीतम के बस प्रान परयौ री॥

चंदसखी के भक्ति-काव्य की कुछ झलक उपर्युक्त पदों में देखी जा सकती है। उनके काव्य की भाषा सीधी-सादी और काव्यालंकारों के बिना भी कितनी मर्मस्पर्शिनी है, यह इन पदों से स्पष्ट है। अपने लोक-काव्य के कारण चंदसखी पहले से ही प्रसिद्ध है। उनके भक्ति-काव्य का यह संकलन उनकी प्रसिद्धि में 'चार-चाँद' लगावेगा ; इसमें संदेह नहीं।

२–पदावली

१. विनय

स्तुति— [१] राग बिलावल

हो हरि, सरन गहे की लाज ।
राधा-वर सुख-सागर नागर, रसिक कुँवर ब्रजराज ।।
दीन-दयाल दयानिधि केसव, करुनानिधि महाराज ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, विरद गरीब-निवाज ।।

[२] राग बिलावल

गिरवर-धरन-चरन चितु लाएँ ।
आनंद-कंद समूह सुख साँवरौ, ऐसौ प्रभु छाँड़ि और कौनकों ध्याएँ ।।
परम कृपाल, दीन-दुख-मोचन, भक्त-वत्सल, संतन सुख दाएँ ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, राधा-वर निस-दिन गुन गाएँ ।।

[३] राग बिलावल

भजो मन, राधे-कृष्ण गोबिंद ।
पिय प्यारी व्रषभान-दुलारी, सुंदर श्री नँदनंद ।।
गौर-स्याम, सुख-सागर नागर, दंपति आनँदकंद ।
जै श्री हित हरिलाल* लाड़ली-जीवन श्री वृंदाबन-'चंद' ।।

---

* चंदसखी के कुछ पदों में 'श्री हित हरिलाल' की भी छाप मिलती है। श्री हरिलाल जी चंदसखी के परम गुरु अर्थात् उनके गुरु श्री बालकृष्ण स्वामी के भी गुरु थे ।

उद्‌बोधन— [४] राग बिलावल

सदा मन, राधे-कृष्ण गुन गाव ।
पूरन भाग, पाई नर-देही, भलौ बन्यौ अब दाव ॥
दुबिधा तजियै, प्रभु कों भजियैं, भूले मन समुझाव ।
पाछै कछू भई सो बीती, अब हू बाजहि[1] आव ॥
निस-बासर सत-संगति मिलिकैं, कीजै यहै उपाव ।
'चंदसखी' श्री बालकृष्ण हित, जुगल चरन चित लाव ॥

[५] राग रामकली

हरि की भक्ति करिलै बीर ।
तब कछू न बसायगी, जब जम करै गंभीर ॥
छाँड़ि मिथ्या, गहि निश्चलहिं सुख की सीर ।
'चंदसखि' सब काल के बस, कहा मीर, कहा पीर ॥

[६] राग रामकली

सुमिरन बिन नाहीं निस्तारा ।
नर-तन पाय, कहा तैं कीनौ, भूल्यौ बिच थोथे जंजारा ॥
काम-क्रोध की नदीय बहुत है, खेबटिया एक धर्म-विचारा ।
'चंदसखी' सोई जन उबरै, जाकै है हरि-नाम अधारा ॥

[७] राग रामकली

जनम सिरानौई जाई ।
तीरथ-व्रत कीये बहुतेरे, बुद्धि न निश्चै आई ॥
धर्मराय जब लेखौ माँगै, निकसैगी ठकुराई ।
'चंदसखी' तीनौ पन बीते, चेतैगौ कब भाई ॥

१. बाज़ आना, न करना ।

[८] प्रभाती

हरि–सुमिरन की बार है, सुनो रे भाई।
आनंद-कंद मुकंद की, काहै सुध बिसराई ॥
व्यास–सुकौ–सनकादिकनि, यह गैल बताई।
भक्ति करो भगवंत की, अंत होत सहाई ॥
सत्य पदारथ छाँड़िकै, मिथ्या लौ लाई।
देखहु बूझि अबूझ[1] की, कछु कहीय न जाई ॥
यह औसर फिर पावनौ, दुरलभ–कैठिनाई।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण, भजियै जादौराई ॥

[९] राग बरवै

अबै भलौ दाउ बन्यौ, भजि लीजै ॥
बीतत जात घरी-घरी छिन-पल यह तन छीजै।
है बेकाम स्यामसुंदर बिनु, कोटि कल्प जो जीजै ॥
वेद-पुरान, सुरुति[2] अरु समिरति[3] कहत सब यह कीजै।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, जुगल करन चित दीजै ॥

वैराग्य— [१०] राग देवगंधार

हमारौ नहिं काहू सों नातौ।
बिना गोपाल रावरे जिय कौ दूजौ नाहिँ सुहातौ ॥
बंधन बाँध्यौ अनेक जतन करि, देख्यौ छूट्यौ जातौ।
'चंद' बंधु साँचौ हरि जान्यौ, चूक्यौ जिय कौ भातौ ॥

---

१. अज्ञानी। २. श्रुति। ३. स्मृति।

[११] राग देवगंधार

हमारौ तौ लाग्यौ गोपाल सों नेह ।
लोग–कुटम–संसार सों नातौ, मान कोउ क्यों न लेहु ।।
कंचन काया नैननि देखत, मिल गई छिन में खेह ।
'चंद' सरन गहि राधाबल्लभ,[1] साथ जाय नहिं देह ।।

[१२] राग गौरी

हरि बिन कोऊ नहीं अपुनौ ।
जे देखियत, सोई थिर नाहीं, जैसे रैन-सुपनौ ।।
निस-दिन बहुत लोभ-लहरनि में, त्रिविध ताप तपनौ ।
'चंद' भजे बिन राधाबल्लभ,[2] नाहक पचि मरनौ ।।

[१३] राग गौरी

प्रीतम कोऊ नहिं बिन माधौ ।
जाहै तू अपुनौ कर जानत, काम न आवत आधौ ।।
काहे कों विविध विचार विचारत, एकै व्रत क्यों न साधौ ।
'चंदसखी' मन–बच–कर्मनि, श्री राधा–वर आराधौ ।।

सत्संग— [१४] राग देवगंधार

सबै विधि संतनि कैं सुख रे ।
माया-मोह के बंधन काटैं, कछु व्यापै नहिं दुख रे ।।
हरष-सोक वे कछु नहिँ मानें, हरि-रस-अमृत पीवैं ।
सदा जु मगन रहत आनँद में, ऐसैंहिं जनम बितीवैं ।।
काम-क्रोध-लोभ बस करिकै, हरि-चरनन चित लावैं ।
धन-धन[3] 'चंद' साधु की संगति, जिन मिलि गोबिँद गावैं ।।

१–२. चंदसखी के सांप्रादायिक इष्ट देव । ३. धन्य-धन्य ।

ईश-महिमा— [१५] राग षट

अगम की गम कछु जानी न परै रे।
वेद निषेद करत निस-बासर, सिंभू ध्यान धरै रे ॥
ब्रह्मादिक जाकौ पार न पावत, सिला समुद्र तिरै रे।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, जो चाहै सो करै रे ॥

२. माहात्म्य

वृंदाबन— [१६] राग ललित

ए री, धन[1] श्री वृंदाबन धाम।
प्रेम रंग रस भीजे री, जहाँ बिहरत स्यामा-स्याम ॥
कुंज-कुंज कौतूहल लीला, आनँद आठौ जाम।
त्रिविध ताप दुर होत छिनक में, लेत ही जाकौ नाम ॥
संतन कों प्यारौ यों लागत, ज्यों लोभी कों दाम।
'चंदसखी' निरखत, हिए हरषत, जुगल कुँवर अभिराम ॥

[१७] राग कान्हरा

ए री, वृंदाबन जीवन-प्रान है।
बिहरत जहाँ नागरी-नागर, रसिकन की रस-खान है ॥
सघन कुंज सुख-पुंज भँवर गुंज, कोकिला कल गान है।
रास-विलास मास बारह जहाँ, सदा लाभ, नहिं हान है ॥
ललितादिक निरखत हिए हरषत, करत रूप-रस पान है।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, नैन चकोरन ध्यान है* ॥

---

१. धन्य। * यह पद सुश्री पद्मावती जी की पुस्तक में भी है, किंतु वह अशुद्ध है। (देखिये—चंदसखी और उनका काव्य, पृ० ६२)

[१८] राग मलार

आजु देखो सोभा वृंदाबन की ।
बरन-बरन कुसुमन की कुंजन, गुंजन मत्त मधुपन की ।।
नव दल द्रुम, कालिंदी-कूलन, झूलन ललित लतन की ।
नाँचत मोर-चकोर चहूँ दिस, बरसन रस-बुंदन की ।।
गौर-स्याम बिहरत जहाँ जोरी, दुति दामिन मनों घन की ।
'चंदसखी' लखि बलि या छबि पर, प्रान-जीवन रसिकन की ।।

•

[१९] रायसौ

श्री हरिवंश जन्म-बधाई—

नवल बधाई बाजै, व्यास मिश्र दरबार ।
प्रगटे श्री हरिवंश, सु आनँद-सुख के सार ।।
सुर-दुंदभि तब बाजी, जय-जय सब्द अकास ।
कुसुम देव-मुनि बरसैं, हरषैं सुखनि प्रकास ।।
घर-घर आनँद बाढ्यौ, नर-नारी सुख दैन ।
जो जाकें सुख दुरलभ, सो देख्यौ भरि नैन ।।
बनि-बनि सब ब्रज-नारी, निकसीं गावति गीत ।
मंगल-थार सुहाए, काज भए चित-चीत ।।
भूमिक सों सब गावति, आवति ऐसी भाँति ।
नख-सिख भूषन सोहैं, लाल मुनिन की पाँति ।।
आईं व्यास महल में, सोभा जग-जग होत ।
नौबत-ताल-नगारे बाजत, अतिहिं उदोत ।।

धुजा-पताका सोहैं, कंचन कलस अनेक ।
ताल–पखाबज-आबज, बाजत सहित विवेक ।।
जै श्री उदयलाल[1], प्रभु दीजै, अपुने निकट निवास ।
'चंदसखी' निज दासी, चरन–कमल की आस ।।

[२०] राग मारू

श्री हरिवंश-जन्म पर ढाँढ़नि नाँच—

व्यास-महल में आज, ढाढ़नि नाचै रँग–भीनी ।
श्री हित जनम सुनत उठि धाई, हरष बधाई दीनी ।।
यहै आस मेरे मन माँहीं, तारा जू की कोख सिराई ।
तीन लोक की सोभा-संपति, जो तेरे गृह आई ।।
श्री हरिवंश प्रगट पिय-प्यारी, सुखकारी दोउ आये ।
सकल लोक, सुर-नर-मुनि सब के, भये मनोरथ भाये ।।
श्री तारा रानी अति हरषानी, जुबतनि सभा बुलाई ।
गाइ-गाइ नाँचति रँग भीनी ढाढ़िन हिय हुलसाई ।।
श्री व्यास-घरनि रीझी सुख भीनी, ढाढ़िन निकट बुलाई ।
विविध भाँति आभूषन मनिमय, ढाढ़िन कों पहराई ।।
जै श्री उदयलाल[2], प्रगटे सुख-सागर देत असीस सुहाई ।
'चंदसखी' हित चरन रेनु की, आसा रहौं सदाई* ।।

१–२. श्री उदयलाल जी चंदसखी के समय में राधावल्लभ संप्रदाय के आदरणीय गोस्वामी थे ।

* श्री हित हरिवंश की बधाई के उपर्युक्त दोनों पद चाचा हित वृंदाबनदास के लिपिक केलिदास लिखित 'हित उत्सव' की पोथी के हैं, जिनकी पद संख्या क्रमशः १९० और २५६ है ।

३. लीला

श्री कृष्ण-जन्म—

[२१]

आजु बधाई बाजत माई ।
जनम लियौ जसुमति रानी घर, मोहन स्यामसुंदर सुखदाई ।।
फूले नंद–उपनंद–गोप सब, मिलत परस्पर देत बड़ाई ।
धन्य भैया यह दिवस आजु कौ, इच्छा सुफल भई मन–भाई ।।
पहिरावत ब्रजराज सबन कों, भूषन-बसन अमोल मँगाई ।
बाजत ताल–मृदंग–झाँझ–डफ, ढोलक–ढोल–भेरि–सहनाई ।।
नाँचत–गावत सब नर–नारी, अति आनँद उर में न समाई ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, निरखि-निरखि तहाँ बलि-बलिजाई

[२२]

आजु सखी नँदनंदन प्रगटे, गोकुल बजत बधाई री ।।
रोहिनि नछत्र, मास भादों कौ, योग–लगन–तिथि आई री ।
गृह–गृह तें सब बनिता बनिकै, मंगल गावत आई री ।।
जो जैसै, तैसै उठि धाई, आनंद उर न समाई री ।
चोबा–चंदन और अरगजा, दधि की कींच मचाई री ।।
बंदीजन गंधर्व गुन गावैं, सोभा बरनि न जाई री ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरन कमल चित लाई री ।।

[२३]

परम धाम गो-लोक छाँड़िकै, हरि वृंदाबन आये री ।
कृष्ण पुत्र बसुदेव–देवकी, नंद–भवन पहुँचाये री ।।

धन्य भाग है मातु जसोदा, जिनहीं परम सुख पाये री ।
फूले फिरत सकल ब्रजवासी, आनँद उर न समाये री ।।
खबर भई जब कंसराय कों, पूतना बेगि पठाई री ।
मारन आई, आपु नसाई, जननी की गति पाई री ।।
सिव-सनकादि आदि ब्रह्मादिक देव–दुंदुभि बजाई री ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन नित लाई री ।।

हिंडोरा-झूलन— [२४] राग मलार

हिंडोरा झूलत श्री राधावल्लभ लाल ।
कंचन जटित सुरंग हिंडोरे, सोभा बढ़ी विसाल ।।
भूषन–बसन विविध रंग राजत, तैसीय सँग ब्रज-बाल ।
गावत पिय–प्यारी मन भावत, कोकिल कंठ रसाल ।।
प्रेम उमँगि फूलत तन–मन मिलि, सुंदर स्याम तमाल ।
रीझि–भीजि, हरषत–बरषत सुख, कही न परत तिहिँ काल ।
आनँद मगन निहारि सखी जन, वारत मुकता–माल ।
जै श्री हित हरिलाल, कृपाल जुगल वर, 'चंद' प्रान–प्रतिपाल ।।

गेंद-चोरी— [२५]

ग्वालिन तैं मेरी गेंद चुराई ।।
खेलत गेंद गिरी तेरे अँगना, अँगियन बीच छिपाई ।
बहियाँ पकड़ अँगिया में खोजत, एक गई, दोय पाई ।।
तब मुसकाय ग्वालिनी बोलत, काहे कों करत ढिठाई ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरन कमल चित लाई ।।

गो-दोहन— [२६]

हरि जू से कौन दुहावत गैया ।
कारे आप, कामरी कारी, आवत चोर कन्हैया ॥
कनक दोहनी सोहैं हाथ में, दुहन बैठे अधपैया ।
खन दूहत, खन धार चलावत, चितवनि में मुसकैया ॥
गौअन छाँड़ि गहै मेरौ अँचरा, यही सिखायौ तेरी मैया ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, चरन–कमल बलि जैया ॥

पनघट-लीला— [२७]

तुम नंदलाल जनम के कपटी ।
मोर मुकट पीतांबर सोहै, गले बैजंती माला लटकी ॥
औरन की गागर भरि देवो, हमरी गागर सिर सें पटकी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन-कमल से लपटी ॥

दधि की लूट— [२८]

सुंदरि बदन कुँवरि काहू की, नित दधि बेचन आवै री ।
कबहुँक आवै दधिहिं लुटावै, कबहुँक मुख लपटावै री ॥
कबहुँक मुरली छीन लेत है, कबहुँक आप बजावै री ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, यह लीला मोय भावै री ॥

[२९] राग कान्हर

ढीठ गुपाल अनोखे रसिया ।
हौं दधि बेचन जात मधुपुरी, मटुकी ढोरी लंगर हँसिया ॥
मोर मुकट मकराकृति कुंडल, पीतांबर अंग-अंग लसिया ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, माधुरी-मूरत मेरे मन बसिया ।

[३०] राग कान्हरा

जू, हम जानत हैं ए घातैं ।
मुरली बजावत, गावत आवत, कर तब रस की बातैं ।।
तकत रहत बन-बीथिन जित-तित, खुभटत आवत-जातैं ।
करत उपाव, चुकत नहिं कैसेउ, अपनी ओर बसातैं ।।
माँगत दान आनि कै, सो यह सीखी टेब कहाँ तैं ।
'चंदसखी' कछु कहत बनत नहीं, बालकृष्ण हित नातैं ।।

बन से आगमन— [३१] राग गौरी

आजु बन तें बने आवत नंदलाल री ।
चंद्रिका सीस दिएँ, सुमन भूषन किएँ,
हिए पर लसत गुंज-बनमाल री ।।
रसिकमनि-भूप, सुख-रूप पिय साँवरौ,
चक्रत करत, हँसि धरत पग लाल री ।
'चंद' गोविंद-छवि निरखि भूली नैम कों,
प्रेम मगन भईं सकल ब्रज-बाल री ।।

भोग— [३२] राग बरवै

जैंवत श्री राधाबल्लभ लाल, रसाल मधुर मृदु बिंजन नीके ।
हास परस्पर करत, हरत मन, दोऊ प्रान-जीवन धन जी के ।।
रुचि सचु मानत, हित सुख सानत,
पान करत रस लोचन पी के ।।
जै श्री हित हरिलाल, 'चंदसखि' निरखत,
भावन सुखद सिरावन ही के ।।

खंडिता—　　[३३]　　राग बिलावल

हो प्यारे, जागे कहाँ रैन ।
झुकि-झुकि परत, झूमत घूमत से, झपकि-झपकि आवै नैन ।।
हमरे जाय आनँद अति बाढ़्यौ, पायौ चित सुख-चैन ।
'चंदसखी' दसा देत दिखाई, बोलत अटपटे बैन ।।

मान-मोचन—　　[३४]　　राग षट

कर फूल कमल गहै मनमोहन, आवत है सुधा-प्रेम भरैं ।
मोर मुकट कुंडल अति राजत, पीतांबर बनमाल गरैं ।।
कोटिक मदन बदन की सोभा, निरखि सबै सुध-बुध बिसरैं ।
छाँड़ि दियौ हँसि मान लाड़ली, लाल चरन जब सिरन धरैं ।।
ललितादिक आनँद उर बाढ़्यौ, गावत मिल दोउ सुर मधुरै ।
बालकृष्ण हित तन-मन-जीवन, 'चंदसखी' बलिहार करै ।।

बंसी-वादन—　　[३५]　　राग बंगाल

जब मोहन मुरली अधर धरिया ।।
सिला सलिल, सविता जु थकित भई,
गोपि जननि चित-बित हरिया ।
बंसी बट कालिंदी के तट, बाजि उठी रस-रँग भरिया ।।
लोक-लाज तजि उठि-उठि धाईं, तनक भनक स्रवनन परिया ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, तन-मन-धन बारनै करिया ।।

[३६]

अरी मुरली मन हर लियौ मोर ।
मुकट मनोहर, मोर चंद्रिका, नागर नंदकिसोर ।।

मधुर–मधुर सुर बेनु बजावत, मोहन चित के चोर ।
सुनतहिं टेर सिथिल भई काया, जिय ललचति ओहि ओर ।।
अदभुत नाद करत बंसी में, मोहन चंद–चकोर ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, अरज करूँ कर जोर ।।

रास— [३७] राग हमीर कल्याण

आजु सखी रास रच्यौ, राधिका-रमन री ।
चलहु मिलि बेगि सब, सुखहिं निरखैं तहाँ,
सघनि तरु–लतनि तट कुंज के भवन री ।।
बजत बीना मिलत तरल कट किंकिनी,
कुणित नूपुर चरन–गतनि के गवन री ।
रसिक वर निर्त पर, रीझि भीजिय अली,
'चंद' सुख-कंद लखि ढोरत पवन री ।।

[३८] राग पंचम

वृषभान की दुलारी संग निर्तत लाल बिहारी ।
मुरली की धुनि गरज, बरषत रस-वृष्टि सरस,
स्याम बरन घन ज्यों लसत दामिनि उनहारी ।।
करत रंग अंग–अंग, रीझि–भीजि कुंजन में,
रसिक-राज नव किसोर प्यारे प्रान-प्यारी ।
बालकृष्ण हित सतृष्न 'चंदसखी' हिएँ मुदित,
नैन निरखि दंपति–सुख, तन–मन बलिहारी ।।

तब सब सखियन कों दई जनाय ।
सब सौंज खेल की, लई बनाइ ॥
काहू कुंकुम-कर्पूर घोरि ।
काहू सौंधें पट लए बोरि ॥
काहू लीयौ लाल गुलाल रंग ।
काहू बूका बंदन सुरंग ॥
काहू घसि चंदन अतर आनि ।
काहू लीनौ अरगजा सानि ॥
काहू कंचन पिचकारी हाथ ।
खेलन कों रँगीले ललन साथ ॥
काहु डफ – ताल – मृदंग – चंग ।
काहू बीना - अधबट - उपंग ॥
कोऊ गावत रस मीठी तान ।
कौतुक काहू परत न बखान ॥
सब साज-समाजै स्यामा-स्याम ।
आए सुख – पुंजनि कुंज – धाम ॥
तहाँ खेल परस्पर बढ़चौ अपार ।
संग्राम सज्यौ मानों सुभट मार ॥
तन – मन भीजे रस – रंग प्रेम ।
काहू लज्या-कुल रह्यौ न नेम ॥
जहाँ 'चंदसखी' लखि सुख-निधान ।
छबि पर निवछावर करत प्रान ॥

[४३] राग बसंत

खेलत बसंत हरिवंस-चंद । प्यारी-पिय निरखत अनंद ॥
प्रफुलित प्यारी-लाल कुंज । अति सुगंध सौरभ के पुंज ॥
नैन भृंग गुंजत सुबास । रूप-माधुरी मधुर हास ॥
अँग-अँग भूषन बजन बीन । गावत छवि सहचरि प्रेम-लीन॥
निस-दिन रूप-सुधा कौ पान । छिन न तृपति मानत सुजान ॥
मुसकनि बूका छुटत अंग । लोचन-कटाक्ष पिचकारी रंग ॥
श्री प्रिया-लाल कौ प्रेम-रूप । कियौ प्रकासित जगत-भूप ॥
जै श्री उदयलाल हित हैं कृपाल । 'चंदसखी' निरखत निहाल ॥

होली— [४५] राग काफी

प्यारे, होरी आई ।
केसरि रँग भरि-भरि पिचकारी, अबीर-गुलाल जु लाई ॥
गृह-गृह तें बनि-बनि ब्रज-बनिता, सुनि-सुनि सब उठि धाई ।
बाजत ताल-मृदंग-बीन-डफ, गावत फाग सुहाई ॥
आँख आँजि मुख माँड़ि भली विधि, करि हैं सब मन-भाई ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, हँसि हरि रीझि रिझाई ॥

[४४] राग भीमपलासी

गोरी, होरी-खिलैया ढौरी लाय ।
नंदनँदन जग-बंदन फंदन, चंदन चरच्यौ जाय ॥
अगर-गुलाल लियौ झोरी भरि, भरत परस्पर धाय ।
'चंदसखी' प्यारी-छबि निरखत, प्यारौ गयौ लुभाय ॥

[४६] राग काफी

होरी खेलै साँवरौ, मनमोहन मदनगोपाल री ।
लाल गुलाल उड़ावत, गावत, संग रँगीली बाल री ॥
बाजत बीन-मृदंग-चंग, महुवरि-मुरली-डफ ताल री ।
हो–हो होरी कहत परस्पर, दंपति रूप-रसाल री ॥
निरखत जुगल कुँवर वर की छबि, परी प्रेम-रस-जाल री ।
'चंद' मुदित मन बालकृष्न प्रभु प्रीति-रीति प्रतिपाल री ॥

[४७]

होरी खेलै नवल किसोरी ॥
बाजत ताल-मृदंग-झाँझ-डफ, मुख मुरली-उपंग दोनों जोरी ।
पीत गुपाल-ग्वाल, रसमाती श्री व्रषभान-नंदिनी गोरी ॥
प्रभुजी कै लटपट पाग बिराजत, स्रवन कुंडल राजत दोउ जोरी ।
तरबन कनक भानु-छबि निंदक, अलक तिलक राधे सिर रोरी ॥
फगुवा देहु मँगाइ स्याम प्रभु, फेंट पकरि सखियन बरजोरी ।
उड़त गुलाल लाल नभ छायौ, परत रंग बरषत दोऊ ओरी ॥
अब तौ ठौर-कुठौर न मानत, पीत् करत सखियन बरजोरी ।
'चंदसखी' हित ललित लटपटी, बालकृष्ण के पाँय़ परों री ।

[४८] राग काफी

होरी खेलै भावतौ मनमोहन मदनगोपाल री ।
भूरुह-भूमि-भवन-नर-भामिनि, ह्वै रही लाल गुलाल री ॥
प्यारी चढ़ी अटारी अपनी, निरखत पिय कौ ख्याल री ।
गिरधारी पिचकारी धारी, मारी रंग विसाल री ॥

तकि करि नंद-कुँवर वर ऊपर, उन डारी हँसि माल री।
तारी दै-दै गाइ परस्पर, मुदित भए सब ग्वाल री॥
'चंदसखी' प्रभु फगुवा दीनौ, मेवा भरि कै थाल री।
बाँटत पान परस्पर दंपति, हरष हियैं ब्रज-बाल री॥

[४६] राग सारंग

खेलै मनमोहन हो होरी।
ब्रज जुबतीनि सहित रंगभीनी, नागरि नवल किसोरी॥
बाजत ताल-मृदंग-बीन, महूवरि-मुरली धुनि थोरी।
गावत फागु भरे अनुराग सों, दृगनि करत चित चोरी॥
अगर-अबीर-अरगजा-केसरि, हँसनि-लसनि-झकझोरी।
धूम मची, सुधि रहीय न तन की, निपट साँकरी खोरी॥
टूटी माल, लाज-मुक्तावलि, अरु गोरी तन-डोरी।
'चंदसखी' लखि जियत कुँवर छबि, प्रेम-हिलोरनि बोरी॥

४. रूप

कृष्ण-छवि— [५०] राग बरवै

सुंदर कमलनैन मनमोहन नागर नंद-दुलारौ।
रसिक कुँवर वर स्याम सलौनौ, जीवन-प्रान हमारौ॥
भूषन-बसन बिराजत अँग-अँग, माथै मोर-पखारौ।
राधा-पति रसिकन मन-रंजन, संजन गुन अधिकारौ॥
कुंजनि केलि करत रँग भीनौ, सखिन सहित सुख-सीरैं।
'चंद' मगन आनँद-रस पागे, खेलत धीर-समीरैं॥

[५१] राग बरवै

आजु सखी, स्याम बने अति नीके ।
भूषन-बसन विविध रँग राजत, मोर मुकट सोभित सिर पी के ।
आनँदकंद रूपनिधि सजनी, मनभावन सुखद सिरावन ही के ।
'चंदसखी' राधा-वर प्यारे, नंद-दुलारे जियावन जी के ॥

[५२]

सोभा-सुख-सागर श्रीनाथ जी निहारियै ।
मुकट की लटक, चटक पट पीत पर,
कोटि-कोटि काम आली, वारि-वारि डारियै ।
सुंदर वर सुखकारी, गिरधारी, अलक - झलक घुंघरारियै ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु,
मन-वच-क्रम कछु और न विचारियै[1] ।

---

१ चंदसखी के सांप्रदायिक इष्टदेव राधावल्लभ जी थे, अतः उनके द्वारा वल्लभ संप्रदाय के इष्टदेव श्रीनाथ जी का वर्णन आजकल के संकीर्ण विचार वाले कुछ व्यक्तियों को असंगत सा ज्ञात हो सकता है। चंदसखी के समय में सांप्रदायिक सहिष्णुता थी, अतः भक्त-जन सभी संप्रदायों के उपास्य देवों के प्रति समान रूप से श्रद्धा रखते थे। यह पद ब्रज-साहित्य-मंडल की उस प्रति से लिया गया है, जो राधावल्लभ संप्रदायी लेखक द्वारा लिखी गई है। इसकी छाप भी 'हित बालकृष्ण' की है, अतः इसे राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी चंदसखी की रचना न मानने का कोई कारण नहीं है।

[५३] राग मलार

स्याम घन सोभित री नंदलाल।
पीतांबर दामिनि, बाग-पंगति राजत मुकता-माल ।।
मुरली-धुनि गरजनि, रस बरषनि, कोकिल कंठ रसाल।
'चंदसखी हित बालकृष्ण प्रभु, करत प्रान प्रतिपाल ।।

युगल-छवि— [५४] राग देवगंधार

ए दोऊ रंग भरे रस-सानै ।
आनँद-कंद, रूप-निधि सजनी, नीके आजु दरसानै ।।
अँग-अँग छबि की उठत तरंगें, अरुन नैन अरसानै ।
पौंछे कज्जल-पीक कपोलनि, अंचल लै ललिता नै ।।
रोचक पवन, निकट जमुना, वृंदाबन कुंज ठिकानै ।
सुख-समूह, दंपति-संपति की महिमा कौन बखानै ।।
अपरंपार पार को पावै, इनकी ए ई जानैं ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, गुन गावत वेद-पुरानै ।।

[५५] राग बिहागरौ

ए दोऊ राजत प्रीतम-प्यारी।
सुख की रासि, स्याम सुंदर वर, श्री वृषभान-दुलारी ।।
खेल रास ठाड़े दंपति, गहै कुंज कदंब की डारी ।
भूषन-बसन-लसन अति अँग-अँग सोभा रूप-उजियारी ।।
रीझि परस्पर हँसत-हँसावत, लाड़िली-लालबिहारी ।
'चंदसखी राधावल्लभ पर, तन-मन-धन बलिहारी ।।

[५६] राग ललित

हौं तो प्यारी–प्रीतम की बलिहारी ।
करत केलि, भुज मेलि ग्रीव, सुख विहरत कुंज-बिहारी ।।
मुरली अधर मधुर धुनि बाजत, पग नूपुर झनकारी ।
'चंद' स्वामिनी उरप–तिरप गति लेति छबीली न्यारी–न्यारी ।।

[५७] राग कान्हरा

*दीयैं री दोऊ गर-बाँहीं ।
श्री वृंदाबन कालिंदी तट, ठाड़े सघन कुंज की छाँहीं ।।
वाके प्रान बसत आली वा मैं, वा के प्रान बसत वा माँहीं ।
वरसत रंग, संग-सँग हरषत, निरखत दंपति नैना न अघाहीं ।।
रस की खान, रूप-निधि सजनी, इक पल बिछुरत री क्यों हू नाँहीं ।
वालकृष्ण हित जुगल कुँवर छवि, 'चंदसखी, लखि बलि-बलि जाहीं

[५८] राग पंचम

ए री देखो, कैसे बने लाल-ललना दोऊ, वृंदाबिपिन-बिहारी री।
आनँद-कंद मनोहर मूरति, रोम-रोम सुख-कारी री ।।
जरकसी पाग पर मोर-चंद्रिका, अलक-झलक घुँघरारी री ।
नख-सिख रूप अनूप छबीली, पहिरै पचरंग सारी री ।।
हँसत लसत, मन हरत, परस्पर मिलत, भरत अँकवारी री ।
'चंदसखी' दंपति-छवि ऊपर, तन-मन-धन बलिहारी री ।।

---

* यह पद सुश्री पद्मावती जी की पुस्तक में भी है, किंतु इसका पाठ अशुद्ध है। (देखिये, **चंदसखी और उनका काव्य, पृ० ६८**)

[५९] राग आसावरी

दंपति अति रस-रंग भरे, श्री राधा-रमन विराजै री ।
सुंदर मुख अभिराम रसिक-मनि, कोटि मदन लखि लाजै री ।।
रतन जटित आभूषन कंचन, बरन-बरन छवि छाजै री ।
'चंदसखी' बलि-बलि बानक पर, निरख वृहद्दुख भाजै री ।।

[६०] राग पंचम

आजु ब्रजनाथ संग रंग भरी राधिका,
सुभग सुंदर सखि, अधिक सोहै ।
कमल दल नैन, चित चैन सुख दैन—
लखि कै छवि बदन, कोटि मदन मोहै ।।
आनंद के कंद, नँदनंद पिय लाड़िली,
सोभा की अवधि कछु कही न जाई ।
रसिक रस-रासि, प्रकास रवि सरिस,
लजै निरखि, हीयें हरष मुरली बजाई ।।
सरस रस भीने मन, मीन जल जैसें दोऊ,
जमुना के तीर सुर मधुर गावैं ।
भूषन अरु बसन, अंग-अंग की लसन,
पट पीत की कसन, गति कौन पावै ।।
देखै ही बनै, अछु कहत नहिं आवै आली,
'चंदसखी' मुदित दियें गरै बाहैं ।
रीझि ललितादि, बारत तन-मन-धनै,
एक टक जोर, वाही ओर चाहैं ।।

[६१] राग बरवै

नंदनँदन वृषभान-नंदिनी, जुगल परस्पर सोहैं री।
आनंद-कंद, रूप-निधि सजनी, निरख मुदित मन मोहै री॥
ससि सरोज नव तड़ित स्याम घन, या उपमा सम को है री।
जै श्री हित हरिलाल, नवल दंपति-छवि, 'चंदसखी' हित जोहै री॥

[६२] राग सारंग

कलिंदी-कूल केलि करत नवल कमलनैन,
परम प्रेम प्यारी संग, रंग भरी राजै।
सघन कुंज, सुखद पुंज, सौरभ अलि मत्त गुंज,
त्रिविध पवन गवन, जैसी कोकिला कल गाजै॥
बरन-बरन तन सिंगार, चंदन चित्रक समहार,
अंग-अंग दुति तरंग, अदभुद छवि छाजै।
दंपति आनंद बदन, सोभा-गुन-रूप सदन,
'चंदसखी' निरखि कोटि-कोटि मदन लाजै॥

५. आसक्ति

आसक्ति का स्वरूप— [६३] राग ललित

प्रीति कौ तौ पैड़ौ[1] ही न्यारौ।
बातन प्रेम न होत अयाने, अबैई जाय देखो, सोच-बिचारौ॥
कोटि जतन कीयें हाथ न आवै, बिना प्रेम इक नंद-दुलारौ।
'चंदसखी' यह पंथ दुहेलौ, सीस दिएँ हु न होय निरबारौ[2]॥

---

१. मार्ग, २. बचाव, निर्वाह।

[६४] राग ललित

प्रीति की रीति है न्यारी, री न्यारी ।
कै जानै ब्रजराज लड़ैतौ, कै ब्रषभान-दुलारी, री प्यारी ।।
कै जानैं प्रेमी-जन हीयें, जाके जीवन लाल बिहारी ।
बालकृष्ण प्रभु कौ रस-कौतुक, लखि'चंदसखी' बलिहारी ।।

[६५] राग बंगाल

लगनि कौ नाम न लीजै, रे बौरे ।
जो कोऊ लगनि लग्यौई चाहै, सीस की आस न कीजै रे बौरे ।।
लगनि कौ पैंड्यौ महा ही कठिन है, पग धरतें तन छीजै रे बौरे ।
'चंदसखी' गति यही पतंग की, वारि फेरि जिय दीजै रे बौरे ।।

रूपासक्ति— [६६] राग सारंग

आजु इक देख्यौ सुंदर स्याम ।
निरखि नैकु छवि ऊपर सजनी, वारौं कोटिक काम ।।
नव किसोर, नव नीरज लोचन, नलिन बदन अभिराम ।
'चंद' गोबिंद होत नहीं न्यारौ, हीय तें आठौ जाम ।।

[६७] राग सारंग

वह छबि कब देखौं नैननि भर ।
मदनगुपाल लाल आनँद-निधि,
सुख की रासि, सजनी ! राधा-वर ।।
सखिन सहित विहरत वृंदाबन, कालिंदी-तट, बंसीबट-तर ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, कुंजनि केलि करत मुरलीधर ।।

[६८]

देखे री, नैना नट नागर।
सोभित अंग, रंग भरि प्यारी, अनियारे चख रूप-उजागर ॥
प्रान-अधार, प्रान हू तें प्यारे, सर्ब विधि सजनी, ये गुन-आगर।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, जगत-सिरोमनि हैं सुख-सागर ॥

[६९] राग कान्हरा

या छवि की उपमा को दीजै।
सोभित रंग भरे आभूषन, निरखि-निरखि नैनन सुख लीजै ॥
आनँद-मूरति, रूप-सुधा-निधि, यह गति सब दिन देखिवौ कीजै।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रेम-समूह दृगनि भरि पीजै ॥

[७०] राग कान्हरा

नैना मोरे स्याम सों लगे।
रसिक कुँवर वर सोभा-सागर, हरि-रस प्रेम पगे ॥
निरखत मोहन मूरति नागर, बासर-रैन जगे।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, नीकी खगनि खगे ॥

[७१] राग काफी

ए री, लगे नंदनंदन सों नैन।
मनमोहन मूरति देखै बिन, कल न परति दिन-रैन ॥
स्रवन सुनत कछु सुधि न रही तन, मधुर-मधुर धुनि बैन।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, निरखत ही चित चैन ॥

[७२] राग कान्हरा

मेरौ मन मोह्यौ बंसी वारे।
मोहन मदनगुपाल लाल, सुखसागर सजनी रूप-उजियारे ॥
प्रेम भरी हरि माधुरी मूरति, लागि रही छबि नैननि तारे।
'चंदसखी' कछु टोंना सौ कीनौं, मो पर री, वा कान्हर कारे ॥

[७३]

मेरौ मन लागौ मदन गोपाल सों।
सुंदर स्याम कमल दल लोचन, दुख-मोचन कृपाल सा ।।
मोर मुकट, मकराकृत कुंडल, पीतांवर, बन-माल सों।
अदभुत अंगन चंदन चरचै, मत्त मरालन-चाल सों ।।
श्री वृंदाबन-कुंजन बिहरत, सुंदर राधे बाल सों।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, बाजत बैनु रसाल सों ।।

[७४] राग कान्हरा

ए री, मेरे नैननि में बस्यौ प्यारौ।
सुख की रासि, स्यामसुंदर वर, नागर नंद-दुलारौ ।।
मुरली मधुर बजावन-गावन, मन-भावन रूप उजियारौ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, जीवन-प्रान हमारौ ।।

[७५] राग कान्हरा

माधुरी मूरति बसि रही नैननि।
मोर मुकट, मकराकृत कुंडल, मंद मुसकाय, मधुर मुख बैननि ।।
लटकि चलनि बन कों बनमाली, ब्रज-बनिता मोही दै सैननि।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, रोम-रोम तन-मन सुख-चैननि ।।

[७६] राग बंगाल

लागी री, ए हरि सों अँखियाँ।
स्याम रूप-रस निस-दिन पीवत, जीवत री जैसै जल-झखियाँ ।।
लाज-कानि काहू की न मानैं, लोक-वेद की सींव जु नखियाँ।
'चंदसखी' हित बाल कृष्ण प्रभु, निरखत भईं सहत की मखियाँ ।।

[७७] राग कान्हरा

मेरौ मन लै गए, नैना वा के ।
दिल दियैं चोरी करत नगर में, है कोऊ बूझै ये चोरवा कहाँ के ।।
चोर बाँधौ बटमार हैं री, मेरे गृह उझके–झाँके ।
'चंदसखी' वे जाय बसे, थाँगी[1] हे तहाँ के ।।

[७८] राग ललित

री, तोसों स्याम के नैना लगौहैं ।
गरब-गहीली, छबीली-हठीली, रसीली-कटीली तेरी भौहैं ।।
लोक-लाज सब बिसरि गई री, होत दृगनि के सोहैं[2] ।
'चंद' स्वामिनी प्रेम प्रगट भयौ, पिय मनमोहन मोहैं ।।

[७९] राग कान्हरा

ए री, इन नैननि कों सुख नाँहिं ।
लागी तोखे दृगन की औचट, कसक पुतरियन माँहिं ।।
करि-करि जतन-सियान[3] सबै मिल, पचि-पचि फिरि-फिरि जाहिँ।
'चंदसखी' हरि-रूप लालची, और न काहू पतियाहिँ ।।

[८०] राग सोरठ

दृग मेरे री, बरजौ न मानें ।
अपनी बान[4] न छाँड़ैं भटू, पचि थाके बहुत सयानें ।।
रूप कौ स्वाद परचौ इन लोभिन, दूसरी बात न जानें ।
'चंदसखी' कोउ कोटि कहौ क्यों न, एक न जिय में आनें ।।

---

१. भेदिया । २. सामने । ३. चतुरता । ४. आदत ।

[८१] राग रामकली

अरी, मेरे नैननि बान परी ।
स्यामसुंदर-मुख देखे बिना, कल परत न एक घरी ॥
भूली देह, गृहै-कारज सब, लोक-लाज बिसरी ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, हँसि-हँसि रस-बस करी* ॥

[८२] राग सारंग

बंसी बारे, इतै नैक आइयो रे ।
मंद मुसिकाय, बिलोकि बंक दृग, वैसैई फेरि बजाइयो रे ॥
गहि कर डार कदम तरुवर की, उन्हीं सुरन पल गाइयो रे ।
'चंदसखी' प्रभु विनती करत हौं, गायन पाछै फिर धाइयो रे ॥

[८३] राग बंगाल

मुरलिया तनक बजाय ।
संघ पौर ठाड़ौ हुतौ सजनी, चितयौ मंद मुसिकाय ॥
मोर मुकट, पीतांबर सोहैं, मोह्यौ मैन मुरझाय ।
'चंदसखी' रस-बस करि तिहिँ छिन, लीनों मोय अपनाय ॥

---

* इसी से मिलता हुआ एक पद मीराँ का भी है । उसमें शब्दों का जो अंतर है, वह निम्न उद्धरण से ज्ञात होगा—

माई, मेरे नैनन बान परी री ।
जा दिन नैना स्यामहिं देख्यौ, विसरत नाहिं घरी री ॥
चित बस गई साँवरी सूरत, उर तें नाहिं टरी री ।
'मीराँ' हरि के हाथ बिकानी, सरबस दै निबरी री ॥५६॥

—मीराँ-माधुरी, पृ० १४

[८४]   राग सारंग

हरचौ मन ललित त्रिभंगी लाल ।
मुरली-धुनि स्रवनन सुनि सजनी, तन की सुधि न सम्हाल ॥
अलकन की झलकन, ललकन हिय, मुकट-लटक बन-माल ।
कुंडल सुभग कपोलन राजत, बंकट नैन बिसाल ॥
चितवत चलन, छबीली मूरति, मोहन मदन गोपाल ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रान-जीवन प्रतिपाल ॥

[८५]   राग गौरी

ए री, मोरमुकट–कुंडल–झलकन,
अलकन–अरुझन, मेरौ मन जु हरचौ ।
मुरली-धुनि स्रवनन सुनि सजनी,
काम-धाम सब ही बिसरचौ ॥
बावरे लोग मरत भटकी,
घट की नहिं जानत पैड़ खरचौ ।
भावै सो होय, हरि-संग न छाँड़ौं,
यह व्रत जिय निश्चै कै धरचौ ॥
कहि धौं री या लोक-लाज तें,
कौन-कौन सौ काज सरचौ ।
'चंदसखी' बड़-भागिन सोई,
बालकृष्ण प्रभु वर सु बरचौ[1] ॥

---

१ यह पद 'चंदसखी-पदावली', पृष्ठ १८ पर भी है, किंतु उसका पाठ ठीक नहीं है ।

[८६] राग षट

साँवरे–रूप लुभानी री ।
लटक चलन गज-गति आवन हरि, सुबुधि हेरि हिरानी री ।।
यह गति बिन देखै मनमोहन, ज्यों मीन तलफ बिन पानी री ।
रीत अटपटी लगन की री आली, जापै बीती तिन जानी री ।।
तजि कुल-कान, लाज लोगन की, काहू की आन न मानी री ।
'चंदसखी' श्री बालकृष्ण हित, प्रेम की हाट बिकानी री ।।

[८७] राग कान्हरा

यह मन मेरौ स्याम हर्‌यौ री ।
बिसराई कुल-कान लाज सब, नहिं जानौं, कहाधौं कर्‌यौ री ।।
बिन देखै मनमोहन नागर, छिन धीरज नहिं जात धर्‌यौ री ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रीतम के बस प्रान पर्‌यौ री ।।

[८८] राग बंगाल

लागी री जाकै सो जानैं ।
चोट अटपटी आली, कहा कहि ताहि बखानैं ।।
रूप-ठगौरी डारी मोपै, मुरली बजाई री माई ।
चितु-वितु हरि लीयौ, साँवरे कन्हाई री माई ।।
घर के उपचार करैं, वैदनि बुलावैं ।
पचि-पचिकै थाके सियानें, बिथा की मूरि न पावैं ।।
प्रीति-कसक कसिकै री आली, देय न दिखाई ।
जानै री जीय आपुनौ, कै जानैं री आली जिन यह लाई ।।
काहू की कछू न चलै, डसी कालिया कारे ।
'चंदसखी' प्रेम-लहरैं लै-लै, घूमैं सांझ-सवारे ।।

[८९] श्री राग

मेरौ मन हर लियौ नंदकिसोर ।
वृंदाबन तट-बट मग जोवै, चितवत चंद चकोर ।।
मोर मुकट पीतांबर राजत, कटि काछिनि छवि खोर ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रीतम नंद-किसोर ।।

[९०]

प्यारी लाड़िली नें लाड़िलौ बस कीनौ ।
मृदु मुस्काय, बिलोकि बंक दृग, चितवत मन हर लीनौ ।।
वृंदाबन की कुंज गलिन में, चेटक सौ कछु कीनौ ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, प्रेम-प्रीत रंग भीनौ ।।

[९१] राग कान्हरा

मोहन मुरली वारौ री, लै गयौ री, चित चोर ।
सुंदर स्याम सलौनी सी मूरति, अब ही गयौ याही ओर ।।
उँमगत हियौ सागर ज्यौं सजनी, उठत है प्रेम-हिलोर ।
'चंदसखी' बिनु देखै री, मोहि कल न परै निसि-भोर ।।

[९२] राग बिलावल

नाहिँन परत री चित चैन ।
जाहि लागी, सोई जानै, साँवरे की सैन ।।
और कछू न सुहाय हरि बिनु, कल नहीं दिन-रैन ।
'चंद' श्री गोबिंद-चितवन चुभी मेरे नैन ।।

[९३] राग बरवै

लीनौ री, मन मोहन हरि कै ।
मुरली-धुनि सुनि भई हौं बावरी,
लोक-लाज सब गई है बिसरि कै ॥
प्रेम-ठगोरी डारी मोरी सजनी,
बंक बिलोकन में कछु करि कै ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु,
हाथ बिकानी श्री राधा-वर कै* ॥

[९४] राग कान्हरा

ए री, या लरिका हौं जु ठगी री, मुरली बजावै कुंजन में ।
चिकुर चंद्रिका, गुंजन की माला गरै,
वा की चितवन हौं जु ठगी री ॥
सुधि-बुधि रही तनिक नहीं सजनी,
लगि गई अँखियाँ, पलक न लगी री ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु,
निरखत ही निस-दिना जगी री ॥

प्रेमासक्ति— [९५] राग बंगाल

प्रेम-ठगोरी डारी, या ब्रज में ।
काहू न डरत, हरत मन सजनी, साँवरिया गिरधारी, या ब्रज में ॥
मुरली-धुनि सुनि मुनि-मन मोहे, पसु-पंछी, नर-नारी, या ब्रज में ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, तन-मन-धन बलिहारी या ब्रज में॥

---

* यह पद 'चंदसखी-पदावली' पृ० २० पर भी है, किंतु उसका पाठ ठीक नहीं है ।

[९६]   राग रामकली

अरी ए री हेली, लै गयौ मन मोरा ।
मंद मुसिकाय, बिलोकि बंक दृग, दै गयौ प्रेम-झकोरा ॥
वृंदाबन की कुंज गलिन में, नागर नंद-किसोरा ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, देख्यौ री चित-चोरा ॥

[९७]   राग देवगंधार

अरी, हौं कहा जानौं संकेत ।
लै-लै नाम स्याम कौ सजनी, दोस सबै मिल देत ॥
कानन सुनौ न आँखिन देख्यौ, कारौ है धौं सेत ।
'चंदसखी' नहिं जा बिन सरिहै, जाकौ जासों हेत ॥

[९८]   राग बरवै

गोरस कों बेचै नंदलाल, आपन ही रही है बिकाई ।
निरखत स्यामसुंदर वर की छवि, सुधि-बुधि गई है भुलाई ॥
कान्ह ही कान्ह रटत फिरै निस-दिन, और कछू न सुहाई ।
'चंदसखी' सब प्रेम-विवस ब्रज, जीवत हरि-गुन गाई ॥

[९९]

जा दिन तें हरि लगन लगाई ।
एक घड़ी बिन मूरति देखै, गृह-अँगना मोकों कछु न सुहाई ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण प्रभु, लोक-लाज कों सब बिसराई* ॥

---

* यह पद 'चंदसखी पदावली' पृ० ३१ पर है, किंतु इसकी एक पंक्ति छूट गई है ।

[१००] राग कान्हरा

लगन मोरी बाँसुरी वारे सों लागी ।
निस-बासर सोवत-जागत रहौं, चरन-कमल अनुरागी ।।
लाख चवाउ करौ किन कोऊ, लोक-लाज सब त्यागी ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, प्रेम-प्रीति-रस पागी ।।

[१०१] राग सारंग

हरि-मूरति नैनन माँझ खगी ।
एक की लाख कहौ किन कोऊ, अब तौं प्रीतम-प्रेम पगी ।।
अब कौ न होय अहै मेरी सजनी, पूरब प्रीत जगी ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, लगन लगी सु लगी ।।

[१०२] रग षट

ए री लागै सोई जानै, कठिन लगन की पीर ।
यह मन चपल कह्यौ नहिं मानै, परि गई प्रेम-जँजीर ।।
डस गयौ कारौ, महा बिसारौ[1], लहरैं उठत सरीर ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, लै मन गयौ री अहीर ।।

[१०३]

लाज-सनेह भयौ झगरौ री ।
झगरत-झगरत सब निस बीती, निपटत नाँहि, भयौ फजरौ[2] री ।।
लाज कहै, यह नेह कहा है, नेह कहै, यह लाज जरौ री ।
'चंदसखी' कहाँ लाज बिचारी, आखिर नेह बड़ौई गरौ री ।।

---

१. विषधर । २. प्रातःकाल ।

[१०४]		राग आसावरी

महा कठिन यह बात लगन की, कहियै का के आगै री।
बिनु देखै अँखियाँ मन मोहन, निस-दिन सोवै न जागै री॥
लटकि चलत चितबन अनियारी, अलक-झलक घुँघरारी री।
हँसत-लसत पट पीत बसन, मेरे चित तें टरत न टारी री॥
जल बिनु मीन दीन ज्यौं तलफै, यह गति भई या तन की री।
बिना गुपाल, लाल मुरलीधर, को जानैं या मन की री॥
लखि छवि बदन सदन सुधि भूली, अब कछु और न भावै री।
'चंदसखी' बलि-बलि वा पर, जो प्रीतम आन मिलावै री॥

[१०५]

लगन लगी, तब लाज कहा री।
होय सो होय, कहौ कोऊ केतौ, अब देखे बिन नहिं जात रहा री॥
धरत न धीर, अधीर मनहिं यह, कठिन हिलग की पीर महा री।
'चंदसखी' प्रभु दरस कौ अंतर, नैन नियर कैसे जात सहा री*॥

---

* प्रेमासक्ति का यह अत्युत्तम पद है। इसे सुश्री पद्मावती जी ने भी दिया है, किंतु उनका पाठ इतना भ्रष्ट और अशुद्ध है कि स्वयं उनको भी लिखना पड़ा है—'पद की अंतिम पंक्तियाँ अर्थ हीन हैं—

लगनि लगी तब लाज कहा री।
लाख चबाव करो किन कोऊ, बिन देखे कैसे जात रह्यो री॥
धरत धीरा धीर प्रेम बलि कठिन, लगनि की पीर म्हांरी।
'चंद्रसखी' जैसे बालकृष्ण छिब, नैन पै कैसे जात रह्यो री॥

—चंदसखी और उनका काव्य, पृ० ३३

प्रेमासक्ति की तीव्रता— [१०६] राग काफी

ए री, तेरे पैयाँ परौं, मोहि मोहन लाल मिलाइ ।
जब तें दृष्टि परयौ नँदनंदन, तब तें कछू न सुहाइ ॥
हौं ठाड़ी गृह अपने इत, उत तें हरि निकस्यौ आइ ।
माइल करि-करि घाइल करि गयौ, नैननि-बान चलाइ ॥
ए री, सर्वस हरि लीनौ छिन ही में, मुरली मधुर बजाइ ।
राखी नाहिं कथा प्रानानि में, प्रेम भरे सुर गाइ ॥
ए री, गृह-अँगना न सुहाइ सखी, कैसे जियरा राखौं समुझाइ ।
'चंदसखी' हरि-हाथ गयौ मन, बिन तोलनि-मोल बिकाइ ॥

[१०७] राग सारंग

तुम बिन कल न परै प्यारे ।
मोर मुकट, मकराकृत कुंडल, नागर नंद दुलारे ॥
जल बिन मीन दीन ज्यों तलफै, यह गति भई रूप-उजियारे ।
'चंदसखी' प्रभु दरसन दीजै, तनक कीजै जाकौ नाम मया रे ॥

[१०८]

ऐसौ निरमोही, या सों भूलि न बोलियै री ।
ऊपर की कहियै बहुतेरी, अंतरगत की कबहु न खोलियै री ॥
लगन लगाय गयौ री बिसासी,दरसन कों बन-बन डोलियै री ।
'चंदसखी' प्रीति की रीति कठिन है,
कामें परै हित-चित सब तोलियै री ॥

परिशिष्ट

चंदसखी के कुछ अप्रसिद्ध भजन* ।

लीला— [१] राग काफी

अब जागे गिरधारी, माधो हो अब जागे० ॥
कोई तो चौकी ले धाई, कोई दातुन ले आई ।
कोई सखी झारी लाई, कोई दर्पन ले आई ॥
कोई सखी दरसन कों आई, कोई पान-मिठाई लाई ।
'चंदसखी' हरि कौ मुख निरखै, निरखत नाँहिं अघाई ॥

[२] राग खेमटा भैरव

दातुन करो मेरे मोहन प्यारे ।
चंदन चौकी जड़ाऊ की झारी, दोऊ भइया आन पधारे ॥
दातुन कर मुखड़ा जब धोयौ दर्पन लैके निहारे मेरे प्यारे ।
मोर मुकट माथे पै बिराजै, लैके लकुटिया बन कों सिधारे ॥
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन जाऊँ बलिहारे ॥

---

* लेखक द्वारा किया हुआ चंदसखी के भजनों और लोक-गीतों का एक वृहत् संकलन उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा प्रकाशित हुआ है । इसके बाद अनेक नये भजन और भी मिले हैं । उनमें से कुछ यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं ।

[३] राग भैरवी खेमटा

अब राधे फूलों में महक आवै ।
चुन-चुन कलियाँ सेज बिछाई, जब अलमस्ती नींद आवै ।।
रैन उनींदी राधे सोय रही है, जब हँस-बोलत स्याम जगावै ।
आप जगै और हमें जगावै, हमें सबेरे स्याम नींद आवै ।।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि कौ गुन सखी कहाँ लौ गावै।।

मोहनी लीला— [४]

मोहनी रूप बनायौ हरि नै बाना ।।
बाँह बरा–बाजूबंद सोहैं, छल्ला छाप जुसताना ।
मुख भर पान, नैन भर सुरमौ, लै दरपन काना मुख मुस्काना ।।
घेर घुमारौ लहँगौ साजै, सालू रतन जनाना ।
हरिया कंद की अँगिया सोहै, छतिया पै दोइ भँवर लुभाना ।।
मात जसोदा यूं उठ बोल्या, तू किउ भया जनाना ।
मोय छल गई वृषभान किसोरी, ताइ छलने कूं बरसाने मोय जाना ।
बरसाने की कुंज गलिन में, काना फिरै दिबाना ।
भानुराय की पौरि पूछ कै, काउ गुजरिया सूं जाय बतलाना ।।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छवि, हरि चरणा चित लाना ।
एक सखी वाँ यूं उठि बोली, नारि नहीं ये तौ मरदाना ।।

पनघट लीला— [५] राग भूपाली भैरवी

कैसे जाऊं पानी, तकत बिरानो नारी ।
नंदराय कौ डर नहीं मानै, जोर जनावै जबानी ।।
चीर मेरौ फाड़ै, हार मेरौ तोड़ै, और करत गुमानी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन दिबानी ।।

दान-लीला— [६] राग गौड़ी जैती

अनोखे दान मँगइया ।

जमुना के नीर-तीर बंसरी बजावै, हेलौ दऊँगी राम दुहइया ॥

हम जु ग्वालिन कंसराय की, तुम हलधर जू के भैया ।

'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, ब्रज में सुख उपजैया ॥

[७] राग काफी

ए री, नंदनंदन बरजो न मानै ।

मो सी गंवारि सखी बहुतेरी, आली पीर काहू की न जानै ॥

इत गोकुल उत मथुरा नगरी, बीच में झगरौ ठानै ।

'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, दधि कौ दान बखानै ॥

[८] राग कनड़ी

तैं कहूँ देख्यौ री काना ।

बरसाने सूं चली ग्वालिनी, नंदगाँव मोहि जाना ॥

महियर लूट लियौ मारग में, सीतर कंदब की छाना ।

वृंदाबन की कुंज गलिन में, सुंदर स्याम सलौना ॥

'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, डार दियौ कछु टौना ॥

[९] राग खेमटा

मेरा मँगा के माखन लूटा री ॥

कुछ खाया कुछ धरनी गिराया, कुछ कर दीना जूठा री ।

ज्यों-ज्यों हरि की बिनती करत हूँ, त्यों-त्यों जावे रूठा री ॥

मैं तो हूँ वृषभानु दुलारी, वो है नंद का ढोटा री ।

'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, आवागमन से छूटा री ॥

[१०] राग दादरा खेमटा

गोकुल जाके दिबानी भई गुजरी ।
दिबानी भई, रे मतबारी भई गुजरी ।
चलो री सखी दधि बेचन चलियें, कल न पड़े इक छिन री ॥
छवि निरखो स्यामसुंदर की, हिल-मिल रतियाँ भोर भई री ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन चित लाग रही री॥

[११] राग परज

दही लै-लै जसोदा के लाल, नई आई ग्वालिनिया ।
कोरी मटुकिया में दही जमायौ, दियौ नहीं एक बूँद पनिया ॥
दही खवाऊँ, माखन खवाऊँ, लेहौं न एक दमड़िया ।
'चंदसखी'भज बालकृष्ण छबि, हरि के चरन लगि रहूँ दिन-रतियाँ

[५२] राग दादरा चलता हुआ

लगै माई यमुना चोर री, तेरी घटिया ।
एक तो लागै सांवल मइया, दूजे लागै है गौर री ॥
बहुत दिनन से मेरौ दधि खायौ, नागर रसिया नंदकिसोर री ।
गोरी२ बहियाँ, हरी२ चुरियाँ, बहियाँ पकड़ मेरी गरी झकझोररी
दधि मेरौ खायौ, मटुकी लुढ़काई, चूनर के किये टूक री ।
'चंदसखी'भज बालकृष्ण छबि,हरि के चरन पर मैं बलिहारी री ॥

बंसी-बादन— [१३]

कुंजन में बाजै री बैना ॥
वृंदाबन में रास रच्यौ है, हियरा में में आनंद-चैना ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छवि, मोहनै मोहि दीनी सैना ॥

[१४] राग काफी

जमुना निकट ठाड़ौ बंसरी बजावै रे।
मोर मुकट पीतांबर राजत, मधुरी सी बैना बजावै रे ॥
घाट-बाट-मग रोकत डोलत, नैनन में मुस्कावै रे।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, हरखि-हरखि गुन गावै रे ॥

[१५] राग कलंगड़ा

बंसी नैक बजाई, मैं तौ मोहि लई।
तनक भनक परी मोरे श्रवनन, एरी, मेरौ सरबस रह्यौ लुभाइ ॥
सोहनी सूरत मोहनी मूरत, एरी, मोपै बिन देखें रह्यौ न जाइ ॥
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, मैं तो चरनन हूँ लपटाय ॥

[१६] राग गौरी

बलि जाऊँ, बलि जाऊँ तोरी, मोरी प्यारी रे।
एरी राधे, नंदबबा की, हमपै बजवावै नैक न करहूँ न्यारी रे ॥
जो माँगै सो लैरी मो पै, बिनती मान हमारी रे।
एरी, तू मत जान बांस की बँसुरिया, अपने हाथ सँवारी रे ॥
वारूँ कोटि रतन से ऊपर, हीरा-लाल हजारी रे।
एरी राधे, सुघड़ सो नार बसी यूं समी रीं, बिच २ राखी धारीरे।
एरी राधे,मैं जमुना तट नहानै गयौ हौ,उत कहूँ भूल बिसारी रे॥
तुम तौ फूल चुनन कों गई ही, नजर परी जु तिहारी रे।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, चरन कमल बलिहारी रे ॥

होली—

[१७] राग काफी

होरी चल चल री, ब्रज में खेलन चल री ।
चोबा-चंदन और अरगजा, मोहन के मुख मल री ।।
उत गोकुल इत मथुरा नगरी, बीच है सुख कौ थल री ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, जासूँ रहै हिल-मिल री ।।

[१८] राग कलंगड़ी

होरी खिलावै मोहि नंद कौ ढोटा ।
घाट–वाट–मग रोकत डोलै, सब लरकन यह खोटा ।।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, स्याम-राधिका गरबाँहि जोटा।।

[१९] राग काफी

रंग में बोर दई रे कान्हा, रंग में बोर दई रे ।
घर बरजत ही सासु नँनदिया, नाहक पनिया गई रे ।। कान्हा०
अजब रंगीली मोरी सुरंग चुनरिया, अबही मोल लई रे । का०
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हो गई बात सई रे । कान्हा०

प्रेमासक्ति—

[२०] राग काफी

लागे दोऊ नैणा रे, काली कमलिया सूँ ।
जब लागे तब कछू न जाणे, अब लागे दुख दूणौ रे ।।
या कंवरिया कौ ध्यान धरूंगी, अरु तन नंदजू कौ छौना रे ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, सुंदर स्याम सलौना रे ।।

[२१] राग कनड़ी

या नगरी में नंद दुलारौ, प्यारी मोहि बतावौ री ।
मोर मुकट पीतांबर राजत, गौअन कौ रखवारौ री ॥
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, जीवन-प्रान हमारौ री ॥

[२२] राग रामकली

तनिक तुम चितवो मेरी ओर ।
अपने पिय कूँ योंही कर राखो, योंच गई गिर डोर ॥
मोर मुकट पीतांबर राजत, पीतांबर छूल खोर ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, प्रीतम नंदकिसोर ॥

[२३] राग काफी

लाग रह्यौ मन मोहन मेरौ ।
जित देखूँ, तित लागौ ही आवै, करत फिरत कुंजन में फेरौ ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, सदा ही रहूँ चरनन कौ चेरौ॥

[२४] राग कलिंगड़ा

यह सपना अपना नहीं माई, खुल गई आँख नींद नहीं आई ।
रात स्याम मेरे ढिग आया, मुख चूमा और गरवा लगाया ॥
खुल गई आँख भोर भया माई, ढूंढूं सेज पिया ढिग नाहीं ।
लाज की मारी कछु कह न सकत हूँ,
जो कुछ बीती है मो संग माई ॥
बेगुन वचन कहा नहीं जावे, विरह-बिथा तन अगनि जराई ।
'चंदसखी'भज बालकृष्ण छबि,स्याम को दो सखी आन मिलाई॥

[२५] राग दादरा-ठेका

क्या बुलाक अधरन पर हलकै ।
जब से दृष्टि परी है मेरी, तब से छिन-पल परत न पलकै ।।
स्यामसुंदर के मुख ऊपर कैसे चमकै,
काली घटा में बिजुली जैसे दमकै ।।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, हरि चरनन कौ रस बरसै ।।

[२६] राग सारंग

मैं अपनौ मन हरि सौं जोरयौ री ।
हरि सूं जोर सबन सूं तोरयौ री ।।
मैं अपनौ पिय पायौरी सजनी,कहा भयौ लोगन मुख मोरयौरी।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, नैंक चितौ वृंदाबन पोरयौ री।।

[२७] राग सारंग

बरजौ न मानत मेरे नैणां ।
उतहि निहारि भये उतही के, मेरी आलि ! फिरत न फेरे नैणां।।
रूप सलौनी बावरी बैं हौं,मेरी आली ! करत कटाछन तेरेनैणां।।
राब-रंक कोऊ दृष्टि न आवै, प्रेम-प्रीति के तेरे नैणां ।
'चंदसखी' कछु और न भावै, हरि मुख हेरैं नैणां ।।

[२८] राग भैरव देस

आई महाराज, हमारे नैयनों नींद आई जी ।
नयनौं नींद आई, अँखियां झुक आईं जी ।।
हाथ पाँव मैरे मत छुवो मोहन, सारी रैन दुख पाई जी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, बार-बार बलि जाई जी ।।

[२९] राग ठुमरी

माधौ प्रीत करी पछतानी ॥
हम जानी योंही रे निबहेगी, उन कछु और ही ठानी ।
या सामरे कौ कौन पतीजे, बोलत मधुरी बानी ॥
सूनी सेज स्याम बिन मेरी, तड़फत राधे रानी ।
'चंदसखी' भज बालकृष्ण छबि, नयनन बर्षत पानी ॥

[३०] राग पूर्वी

प्यारी तेरे नैना नें रे जिंदरी डारी ।
मोर मुकट मकराकृत कुंडल, अलकें बनी घुंघरारी ॥
कटि किंकिनि पद नूपुर बाजै, लटक-चलन पर बारी ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि,माधुरी मूरत लगै प्यारी॥

[३१] राग पूर्वी

अरी तैं मोह लियौ मोहनलाल ॥
तन-मन-सुख मोरे मन बिच भइलौ, परौ है प्रेम कौ जाल ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, सब सज्जन प्रतिपाल ॥

[३२]

कासूं कहूँ इन नैना दे हाल ।
जा तन लगी सोई तन जानै, करक करेजे साल ॥
उमग्यौ हिया घन ज्यों गरजत है, यह जीवन जंजाल ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण छबि, दरसन बिन बेहाल ॥

[३३] राग पंजाबी

क्यों नहीं आवंदा नंदलाल ।
मोर मुकट पीतांबर राजत, मुख सूं बंसी बजावदा ॥
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, ब्रज में सुख उपजावदा ॥

[३४]

बंसी वाले सनेही, सानू आई मिलिवे ।
चीरा बटेटा रंग लाल गियां बैंसर दकनार ॥
अंदर सीनै लगियां बे, प्रेम दी टोट संभाल ।
बालकिसन प्रभु सोहणा बे, 'चंदसखी' देदे नार ॥

स्फुट— [३५] राग प्रभाती

तुलसा को व्याहन आये श्री सालिगराम ।
बाजे मधुर २ ध्वनि लाये, हाँ रे, नारद नँचै नंगे पाँव ॥
इंदर कोटि बराती आए, हां रे, दूल्हे घनस्याम ।
'चंदसखी' भज गोबिंद राधे, हरि चरणों की गुलाम ॥

[३६] राग कलड़ी

बोलो रामा-रामा ॥
तुम्हरौ ही ज्ञान-ध्यान, तुमरौ हीं सुमिरन,
तुम सूं लगौ छै म्हारा कामा ।
'चंदसखी' हित बालकृष्ण प्रभु, वृंदाबन निज धामा ॥
बोलो रामा-रामा ॥

पदानुक्रमणिका

अकारादि क्रम से सूची

क्रम सं०	पद की प्रथम पंक्ति	पद सं०	पृष्ठ सं०
४८.	दृग मेरे री बरजौ न मानैं	८० ...	९८
४९.	देखि सखी, स्याम-प्रिया सकल सुख-रासि री	४० ...	८४
५०.	देखे री, नैना नटनागर	६८ ...	९६
५१.	दीये री दोऊ गरबाहीं	५७ ...	९२
५२.	दंपति अति रस रंग भरे	५९ ...	९३
५३.	नवल बधाई बाजै व्यास मिश्र दरबार ...	१९ ...	७६
५४.	नाहिंन परत री चित चैन	९२ ...	१०२
५५.	नैना मोरे स्याम सौं लगे	७० ...	९६
५५.	नंदनँदन वृषभान नंदिनी जुगल परस्पर सोहैं री	६१ ...	९४
५६.	परम धाम गो-लोक छाँड़िकै	२३ ...	७८
५७.	प्यारी लाड़िली नैं लाड़िलौ बस कीनौ ...	९० ...	१०२
५८.	प्यारे, होरी आई	४५ ...	८७
५९.	प्रीतम कोऊ नहिं बिन माधौ	१३ ...	७४
६०.	प्रीति की रीति है न्यारी	६४	९५
६१.	प्रीति कौ तौ पैडौ ही न्यारौ	६३ ...	९४
६२.	प्रेम-ठगोरी डारी, या ब्रज में ...	९४ ...	१०३
६३.	वृषभान की दुलारी संग नितर्त लाल बिहारी	३८ ...	८३
६४.	बंसी बारे, इतै नैक आइयो रे ...	८२ ...	९९
६५.	भजो मन राधे-कृष्ण गोबिंद ...	३ ...	७१
६६.	महा-कठिन यह बात लगन की ...	१०४ ...	१०६
६७.	माधुरी मूरत बसि रही नैननि ...	७५ ...	९७
६८.	मुरलिया तनक बजाय ...	८३ ...	९९
६९.	मेरौ मन मोह्यो बंसी वारे ...	७२ ...	९६
७०.	मेरौ मन लागौ मदन गुपाल सौं ...	७३ ...	९७
७१.	मेरौ मन लै गये, नैना वाके ...	७७ ...	९८

लेखक की अन्य रचनाएँ